

Official Periodical of Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

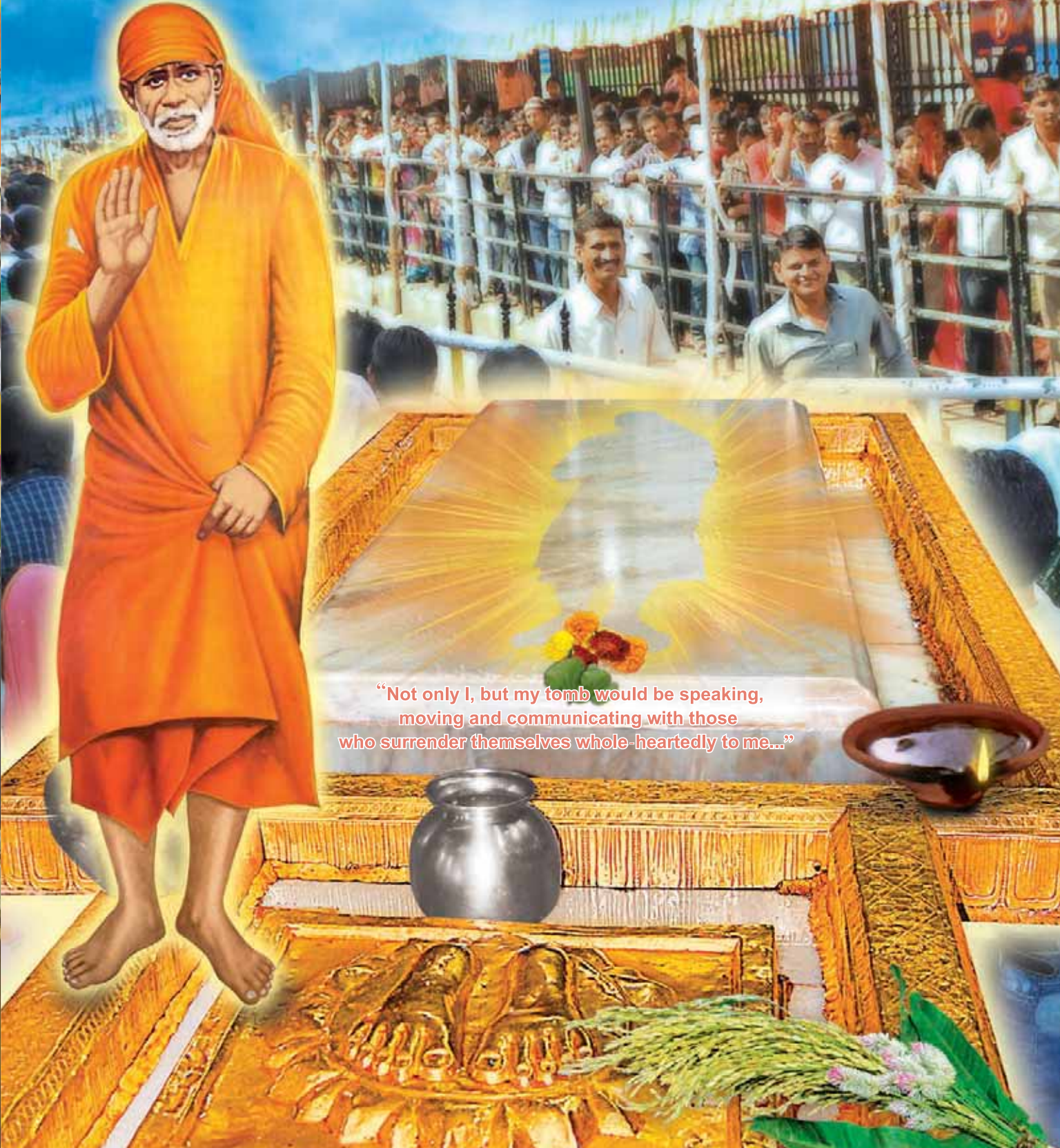
श्री साई बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी) की अधिकृत पत्रिका

# SHRI SAI LEELA श्री साई लीला

September-October 2014 ₹ 15/-

सितम्बर-अक्तूबर २०१४ ₹ १५/-

Shri Sai Punyatithi Special Issue



“Not only I, but my tomb would be speaking,  
moving and communicating with those  
who surrender themselves whole-heartedly to me...”



## श्री साईं पुण्यतिथि उत्सव - २०१४ प्रथम दिन



'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ के अखण्ड पारायण का शुभारम्भ - संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव...

प्रथम दिन 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव), श्री साईं की तस्वीर (उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे व मंदिर प्रमुख श्री रामराव शेलके) एवं वीणा (मंदिर पुजारी श्री उपेन्द्र पाठक) की शोभायात्रा साईं समाधि मंदिर से द्वारकामाई की ओर; साथ में संस्थान अधिकारी, कर्मचारी, साईं भक्त और ग्रामस्थ...



पत्नी सहित संस्थान के उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे के हाथों श्री साईं बाबा की पादपूजा...





# SHREE SAI BABA SANSTHAN TRUST (SHIRDI)

## Management Committee

**Hon. Sri Shashikant Kulkarni**  
(Principal District & Sessions Judge, Ahmednagar)  
Chairman

**Hon. Sri Anil Kavade**  
(District Collector, Ahmednagar)  
Member

**Hon. Sri Rajendra Jadhav**  
Member & Executive Officer

**Hon. Sri Appasaheb Shinde** Deputy Executive Officer

इंटरनेट आवृत्ति - URL:<http://www.shrisaibabasansthan.org>

# श्री साई लीला

स्थापित वर्ष १९२३

वर्ष १४ अंक ५

सम्पादक :

कार्यकारी अधिकारी, श्री साई बाबा संस्थान  
विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी)

# अंतरंग

# SHRI SAI LEELA

Estd. Year 1923

Year 14 Issue 5

Editor :

Executive Officer, Shree Sai Baba  
Sansthan Trust (Shirdi)

❖ सम्पादकीय...	२
❖ A Spiritual Glimpse at Sai through Shri Sai Sat Charita : Dr. Subodh Agarwal	3
❖ सद्गुरु श्री साई नाथ - धरा तल पर अद्भुत अवतरण : मदन गोपाल गोयल	१०
❖ बाबा की महासमाधि का महत्व एवं संदेश : रीता मलिक	१३
❖ निर्गुण निराकार सगुण साकार श्री साई : सुरेश चन्द्र	१७
❖ ...साई का अमूल्य दृष्टान्त... : विजय कुमार श्रीवास्तव	२४
❖ "Sai is Ever Alive" : Bela Sharma	29
❖ Experiences of Sai Maharaj	32
❖ नित्य प्रतीति से करना अनुभव	३४
❖ SAI EXPERIENCES	36
❖ साई अनुभव	४८
❖ Divinity in Human Form in Sai Baba's Era : Mrs. Suhas Yeshwant Joshi	53
❖ Shirdi News	59

● Cover & other pages designed by V. Karthik, Prakash Samant & Taco Visions Pvt. Ltd. ● Computerised Typesetting: Computer Section, Mumbai Office, Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) ● Office : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● Shirdi Office : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● Annual Subscription: ₹50/- ● Subscription for Life : ₹1000/- ● Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹1000/- (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● General Issue: ₹ 8/- ● Shri Sai Punyatithi Special Issue : ₹15/- ● Published by Executive Officer, on behalf of Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and printed by him at Taco Visions Pvt. Ltd., 38 A & B, Government Industrial Estate, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

# सम्पादकीय...

## ... बाबा के बोल सच होते हैं वास्तव में यकीनन।

नवरात्रि जागरण की धूमधाम के बाद अश्विन शुक्ल दशमी के पावन कालयोग पर नई उम्मीद जगाने वाला, उमंग भरा, साढ़े तीन मुहूर्तों में से एक, दशहरा पर्व कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और गुजरात से लेकर आसाम तक समूचे भारत वर्ष में सभी स्थानों पर हर्षोल्लास से मनाया जाता है। उन दिनों में खेतों में नई फसलें लहलहाई हुई होती हैं। आसपास का परिसर हराभरा, नयनरम्य होता है। वातावरण आल्हाद भरा, प्रफुल्लित कर देने वाला, तन-मन को रिझाने वाला, रोम रोम में जोश पैदा करने वाला होता है।... इसीलिए तो कहा जाता है - **“दशहरा पर्व बड़ा न्यारा; चारों दिशाओं में आनंद भरा।”**...

इसी के साथ ही विजयादशमी के इस दिन का महत्व देश-विदेश के साईं भक्तों के लिए कुछ अनोखा, अलग ही है और असाधारण भी। इसी दिन सभी के लिए गूढ़ कुतूहल बना रहा, जिसने कमाल की उत्सुकता सभी के मन में लगाई रखी थी, उस साईं का स्वरूप उजागर हुआ।...

शक १८३८ में, यानी इसवी सन् १९१६ के दशहरा के दिन शाम को शिर्डी में सीमोल्लंघन के पश्चात् द्वारकामाई-मस्जिद में लौटते ही एक अद्भुत घटना घटित हुई।...

अकस्मात् श्री साईं ने शीघ्र क्रोधी ऋषि जमदग्नी का रूप धारण किया; सिर पर बाँधा कपड़ा निकाला... शरीर पर पहनी कफ़नी निकाली... कमर पर लपेटा लँगोट भी निकाल डाला... और सभी वस्त्र धूनी को अर्पित कर दिये... प्रज्वलित धूनी को यह आहुति मिलते ही, वह अधिक प्रदीप्त हो गई, वह अधिक तेज गति से धधकने लगी, उसकी अग्निज्वालाओं ने प्रकोप धारण किया, लगने लगा कि अग्निज्वालाएँ आसमान छूने जा रही हैं। उन ज्वालाओं से सभी की आँखें चकाचौंध हो गईं। महसूस होने लगा कि श्रीमद् भगवद् गीता के ११वें अध्याय में वर्णित धनुर्धारी अर्जुन को भगवान् श्री कृष्ण में जो दर्शन हुए उसी प्रकार की प्रतीति इस क्षण हो रही है। सभी जान चुके कि श्री साईं का शरीर यह कोई साधारण न होकर, कोई एक व्यष्टि न होकर, वह सर्वात्मक सर्वेश्वर की विश्वात्मक समष्टि है, अनादि-अनंत तत्व उसमें समाया हुआ है। उसे किसी भी उपाधि से मर्यादित नहीं किया जा सकता।...

इसके पश्चात् दो ही साल बाद शक १८४० में, यानी इसवी सन् १९१८ की १५ तारीख को दशहरे के ही दिन मंगलवार को दोपहर लगभग अढ़ाई बजे श्री साईं ने अपना शरीर धारण किया।... देखते-सुनते ही हाहाकार मचा।... सभी विलाप करने लगे, आक्रोश करने लगे।... सभी की आँखों में आँसू इकट्ठा होकर नेत्र बहने लगे, कंठ रुंध गया, मन छटपटने लगा, अंतःकरण विदीर्ण हुआ।... हर एक मुख उच्चारित होने लगा, **“यह कैसी विपत्ति आ खड़ी हुई!”** लगा, **‘साईं के बिना शिर्डी अब वीरान है; साईं के बिना अब कहाँ भी जीना केवल अशक्य है!’**... इतने में साईं भक्तों को, उनके लिए साक्षात् दैवत, रहम-दिल माता-पिता रहे गुरुराज श्री साईं के आश्वासनात्मक बोल याद आने लगे - **“... हम समस्त बाल-गोपाल। करेंगे यहाँ ही कालक्रमण। यहाँ ही हम बैठते-उठते। सुख-दुःख की करेंगे बातें। यहाँ ही छोटे-बड़े समस्तों के। चित्त स्वस्थ होंगे।।।”** **“कहाँ भी रहो, कुछ भी करो। इतना पूर्ण हमेशा याद रखो। कि तुम्हारे हर एक कार्य की खबर। जान लेता हूँ मैं बराबर।। इस प्रकार निर्देशित ऐसा जो मैं। सभी के अन्तस्थ वो ही बसा मैं। वो ही सभी के दिलों में सर्वव्यापी मैं। हूँ स्वामी सकलों का मैं।। अन्तर्बाह्य सभी भूतों में। व्याप्त हूँ मैं चराचर में। यह सारा सूत्र है ईश्वर के हाथ में। सूत्रधार हूँ मैं उसका।। मैं समस्त भूतों की माता। मैं त्रिगुणों की साम्यावस्था। मैं ही सारे इंद्रियों का प्रवर्ता। कर्ता-धर्ता संहर्ता।।।”** **“मनुष्य मेरा धरातल पर। रहे क्यों न हज़ारों कोसों दूर। ले आऊँगा चिड़िया समान खींच कर। बाँध कर डोर पैरों में।।”**... और साईं भक्त आश्वस्त हो गये।

... साईं के इन आश्वासनात्मक वचनों की देश-विदेश के कई भक्तों को आज भी निरंतर प्रतीति मिल रही है, उसमें दिनों दिन बढ़ोतरी हो रही है।...





## A Spiritual Glimpse at Sai through Shri Sai Sat Charita :

# Shirdi Sai Baba initiates His devotees in the methods of Karma Yoga, Bhakti Yoga, Dhyan Yoga, Jnan Yoga and Samadhi Yoga through His Words and Actions, and reveals to them the profound Spiritual Path

**P**ositioned in the middle of both the armies on the holy field of Kurukshetra, Lord Krishna was telling Arjun, “**Many, many births both you and I have passed. I can remember all of them; but you cannot, O subduer of the enemy!**”

*bahuni me vyatitani janmani tava charjuna  
tanyaham veda sarvani na tvam vettha  
parantapa*

(Bhagwad Gita, 4.5)

Devotees like Arjun are constant companions of the Lord, and whenever the Lord incarnates, the associate devotees also incarnate in order to serve the Lord in different capacities. Arjun is one of these devotees, and it is understood that some millions of years ago when Lord Krishna spoke the Bhagwad Gita to the sun-god Vivasvan, Arjun, in a different capacity, was also present. But, the difference



Lord Krishna is telling Arjun,

“Many, many births both you and I have passed. I can remember all of them; but you cannot, O subduer of the enemy!”



between the Lord and Arjun was that the Lord remembered the incidence, whereas Arjun could not remember.



Shri Sai Sat Charita, Chapter 51

Sai Baba had once told Shama the same reality : “You and I have been together for 72 generations.” (Shri Sai Sat Charita, Chapter 36) Sai had also made known to the three Dhurandhar brothers of S a n t a c r u z , Mumbai, i.e., Balam, Babulji and Vamanrao,

when these brothers came to Shirdi to take His *darshan* in 1912 AD, the truth of His long bond with them. Baba told them, “We are acquainted with each other for the last sixty generations.” (Shri Sai Sat Charita, Chapter 51)

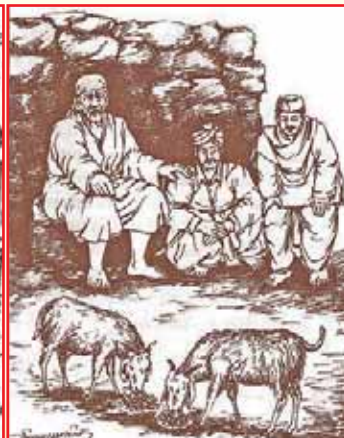
Krishna remembered acts which were performed by Him millions of years before, but Arjun could not. We may also note herein that a living entity forgets everything due to his change of body; but the Lord remembers, because He does not change His *sat-chit-anand*

body (Brahma-samhita, 5.1). He is *advaita*, which means, there is no distinction between His body and Himself. Everything in relation to Him is spirit - whereas the conditioned soul is different from his material body. And, because the Lord’s body and self are identical, His position is always different from the ordinary living entity, even when He descends to the material platform.

Devotees like Shama are constant companions of Sai, and whenever Sai incarnates, the associate devotees also incarnate in order to serve Him in different capacities. Shama was one of such devotees, and it was implicit that at that point of time when Sai Baba was witness to the incidences in the past lives of : (a) the fat cow (The story of Mrs. Seetadevi Tarkhad, wife of Ramachandra Atmaran alias Babasaheb Tarkhad, who was a merchant’s fat cow, yielding much milk in one of her previous births, in Shri Sai Sat Charita, Chapter 27), (b) the uterine brothers (the story of two goats, in Shri Sai Sat Charita, Chapter 46), and (c) Veerabhadrappa and Chanabasappa (The story of the snake and frog, in Shri Sai Sat Charita, Chapter 47), Shama, in a different capacity, was also in attendance on each occasion. But, the difference between Sai and Shama was that Sai remembered the occurrences, whereas Shama could not remember, despite the fact that Sai and Shama had been together for 72 generations.



Shri Sai Sat Charita, Chapter 27



Shri Sai Sat Charita, Chapter 46



Shri Sai Sat Charita, Chapter 47



Sai Baba is *sat-chit-anand-vigraha*. This means that Sai's transcendental body is eternal, full of knowledge and bliss. *Sat* means ever-existing for all time and in all places; in other words, all-pervading in time and space. *Chit* means full of knowledge. Sai has nothing to learn from anyone. He is independently full of all knowledge. *Anand* means the reservoir of all pleasure.

A living entity's body is *asat - achit-niranand* - just the opposite of *sachit-anand*. *Asat* means it will not exist, and *achit* means it is full of ignorance, and *niranand* means full of miseries.



Shri Sai Sat Charita, Chapter 31

**Balaram** Mankar was a staunch devotee of Sai Baba. After the death of his wife he renounced the world and settled in Shirdi. Pleased with his devotion,

Sai Baba then instructed him to go and live in Machchhindragad (District Satara). Sai asked him to practice meditation thrice a day in Machchhindragad.

Mankar went to Machchhindragad and began to practice assiduously the meditation, as suggested by Sai Baba.

After some days Sai Baba gave him actual *darshan* when he was wide awake. Mankar asked Sai Baba, "Why did you send me so far away?" Sai Baba replied, "Your mind was restless while you were in Shirdi. So, to steady

your mind I directed you to Machchhindragad. Earlier you thought that I was in Shirdi with a body, composed of the five elements and three and a half cubits in length. Now look carefully for yourself whether the person you see here now is the same you saw in Shirdi. It is for this that I sent you here." (Shri Sai Sat Charita, Chapter 31)

The central thrust of the above story is on these words of Baba: "Earlier you thought that I was in Shirdi with a body, composed of the five elements and three and a half cubits in length. Now, look carefully for yourself whether the person you see here now is the same you saw in Shirdi."

Sai Baba had once told Megha, "I have neither form nor any extension; I always live everywhere." (Shri Sai Sat Charita, Chapter 28) Sai ever lives, as also the previous Incarnation of Lord Dattatreya and Shri Narasimha Saraswati of Gangapur.

It is a universal truth that the Lord is far, far away, and still, He is within us. His hands are not like our hands. When the Vedas describe, "The Lord has no hands", that means He has no hand like ours, not that a two feet hands which we have got, or two or three feet hands, not this hand. His hand is so large that He can extend His hand in any part of His creation, millions and billions miles away, and everywhere. That



Sai Baba does not change His *sat-chit-anand* body. He is *advaita*, which means there is no distinction between His body and Himself.



is the specific significance of His body. So this is described here :

*angani yasya sakalendriya-vritti-manti  
pasyanti panti kalayanti ciram jaganti  
anand-cinmaya-sad-ujjval-vigrahasya  
govindam adi-purusham tam aham bhajami*  
(Brahma-samhita, 5.32)

(I worship Govind, the primeval Lord, whose transcendental form is full of bliss, truth, substantiality and is thus full of the most dazzling splendor. Each of the limbs of that transcendental figure possesses in Himself, the full-fledged functions of all the organs, and eternally sees, maintains and manifests the infinite universes, both spiritual and mundane.)

Baba's reason of asking Balaram Mankar to practice meditation thrice a day in Machchhindragad was to initiate him into the unique method of *dhyān*, *bhakti* and *jñān yoga* and arouse spirituality in him through His *darshan* in consonance with the teachings from Brahma-samhita.

Nanasaheb Chandorkar was one of the most ardent devotees of Baba. "Nana was a very respectable, married gentleman, having children and having family traditions and a position to maintain. Further, his training had given him excellent qualities of self-restraint and propriety of behaviour. So, he was not ordinarily what one would call a lustful, lewd, or lecherous person. He was on the other hand a very properly behaved and excellent head of a family." (H. H. Narasimhaswami, Life of Sai Baba, Volume II, 1983)

Yet, the Blessed Lord says :

*yatato hyapi kaunteya  
purushasya vipashchitah  
indriyani pramathini  
haranti prasabham manah*

(Bhagwad Gita, 2.60)

(The senses are so strong and impetuous, O Arjun, that they forcibly carry away the

mind even of a man of discrimination who is endeavoring to control them.)

There are many learned sages, philosophers and transcendentalists who try to conquer the senses; but in spite of their endeavors, even the greatest of them sometimes fall victim to material sense enjoyment. Even Vishvamitra, a great sage and perfect *yogi*, was misled by Menaka into sex enjoyment, although the *yogi* was endeavoring for sense control with severe types of penance and *yoga* practice.

Baba, Who was watching Nanasaheb Chandorkar wherever he was, and at every moment, noticed that he needed to be taught and trained in the matter of lust. So, Baba inculcated truths about lust, and made Nanasaheb Chandorkar absorb them.

On one occasion, when Nana was sitting next to Baba at the Dwarkamai, two Muslim ladies were standing for a time at a distance, evidently waiting to see when Nana would go away. They had to remove their



Shri Sai Sat Chrita, Chapter 49

veils at the time of taking *darshan*, which meant - putting their bare foreheads on Baba's Feet; and they did not wish anybody to see their faces. When Nana got up to go away, Baba pulled him down and said, "Let these people come, if they care". So, the ladies had to approach Baba and take *darshan* with Nana by His side. Nothing happened when the elderly lady removed her veil and took





Baba's *darshan*. But, when the younger did the same, her face struck Nana as remarkably beautiful. The sheen of the eyes, the brilliance of the countenance, the perfect proportion of the features, and the indescribable charm of the whole person, were such that Nana was at once smitten with her beauty. After the lady resumed her veil, the thought struck Nana, 'Shall I have another opportunity of seeing this angelic face?'

Now, this state of Nanasahab Chandorkar's mind afforded Sai Baba an opportunity to reveal Nana profound spiritual truths and to initiate him in the essence of *bhakti yoga* thus :

"That our mind is fickle by nature, it should not be allowed to get wild. The senses may get restless, the body, however, should be held in check and not allowed to be impatient. Senses run after objects, but we should not follow them and crave for their objects. By slow and gradual practice restlessness can be conquered. We should not be swayed by the senses; but they cannot be completely controlled. We should curb them rightly and properly according to the need of the occasion. Beauty is the subject of sight; we should fearlessly look at the beauty of objects. There is no room for shyness or fear. Only we should never entertain evil thoughts. Making the mind desireless, observe God's works of beauty. In this way the senses will be easily and naturally controlled and even in enjoying objects you will be reminded of God. If the outer senses are not held in check and if the mind be allowed to run after objects and be attached to them, our cycle of births and deaths will not come to an end. Objects of sense are things harmful. With *vivek* (discrimination) as our charioteer, we will control the mind and will not allow the senses to go astray. With such a charioteer we reach the *Vishnu-pada*, the final abode, our real Home from which there is no return." (Shri Sai Sat Chrita, Chapter 49)

The Blessed Lord says :

*tani sarvani samyamya  
yukta asita mat-parah  
vashe hi yasyendriyani  
tasya prajna pratisthita*

(Bhagwad Gita 2.61)

(One who restrains his senses and fixes his consciousness upon me, is known as a man of steady intelligence.)

That is to say, it is very difficult to control the mind and the senses without being fully Krishna conscious.

Without engaging the mind in Krishna, one cannot cease such material engagements.

A practical example is given by the great saint and devotee Shri Yamunacharya (also known as Alabandara –



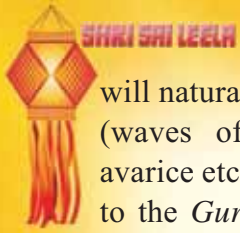
Shri Yamunacharya

"The conqueror) who says : "Since my mind has been engaged in the service of the lotus feet of Lord Krishna, and I have been enjoying an ever new transcendental humor; and, whenever I think of sex life with a woman, my face at once turns from it, and I spit at the thought."

Krishna consciousness or *bhakti yoga* is such a transcendently nice thing that automatically material enjoyment becomes distasteful. It is as if a hungry man had satisfied his hunger by a sufficient quantity of nutritious eatables. Maharaj Ambarisha also conquered a great *yogi*, Durvas Muni, simply because his mind was engaged in Krishna consciousness.

"The senses etc. can never remain without their objects; but if those objects are first offered to the *Guru*, the attachment for them





will naturally vanish. In this way, all the *vrittis* (waves of thought) regarding lust, anger, avarice etc. should first be offered and directed to the *Guru* and if this practice be followed, the Lord will help you in eradicating all the *vrittis*. When before enjoyment of the objects, you think that Baba is close by, the question whether the object is fit to be enjoyed or not will at once arise. Then, the object that is not fit to be enjoyed will be shunned and in this way our vicious habits or vices will disappear and our character will improve.” (Shri Sai Sat Chrita, Chapter 24)

Sai devotees get teachings in Sai consciousness or *bhakti yoga* from Sai Himself thus :

“If a man utters my name with love, I shall fulfil all his wishes, increase his devotion. And, if he sings earnestly my life and my deeds, him I shall beset in front and back and on all sides. Those devotees, who are attached to me, heart and soul, will naturally feel happiness, when they hear these stories. Believe me that if anybody sings my *leelas*, I will give him infinite joy and everlasting contentment. It is my special characteristic to free any person, who surrenders completely to me, and who does worship me faithfully, and who remembers me, and meditates on me constantly. How can they be conscious of worldly objects and sensations, who utter my name, who worship me, who think of my stories and my life, and who thus always remember me, I shall draw out my devotees from the jaws of death. If my stories are listened to, all the diseases will be got rid of. So, hear my stories with respect; and think and meditate on them, assimilate them. This is the way of happiness and contentment. The pride and egoism of my devotees will vanish, the mind of the hearers will be set at rest; and if it has wholehearted and complete faith, it will be one with Supreme Consciousness. The simple remembrance of my name as ‘Sai, Sai’

will do away with sins of speech and hearing.” (Shri Sai Sat Chrita, Chapter 3)

The ‘Ashtavakra Gita’ is a classical *advaita vedanta* scripture. This book documents a dialogue between the sage Ashtavakra and Janak, the king of Mithila, and embodies Ashtavakra’s teaching to king Janak, which vouched him self-knowledge between the time he placed one foot upon the stirrup of his horse and lifted himself to place the other foot on the other stirrup.

That is to say, when king Janak surrendered his body, mind and wealth unreservedly to his *Guru* Ashtavakra, he became absorbed in his own self and went into the state of *Samadhi*. In other words, by teaching him the Gita, he was told that that was his real state and that he could remain established in that natural state.

The ‘Ribhu Gita’ forms the sixth part of *Shiva Rahasya Puran*. It details in about two thousand verses the dialogue on the Self and *Brahman* between the sage Ribhu (who in turn heard it from Lord Shiva Himself) and his disciple Nidagha on the slopes of the Mount Kedar in the Himalayas. The Ribhu Gita presents the timeless teaching of Self Knowledge, emphasized by *Advait Vedant*. Its fundamental tenet is the identity of the Self with *Brahman*, a term signifying the vast Absolute. This scripture presents the teaching given by the sage Ribhu to Nidagha to become enlightened into his true nature.

The following verse contains the declaration of the disciple Nidagha before his teacher Ribhu, expressing the spiritual achievements secured by him by the grace of his teacher, and expressions of his gratitude to his teacher Ribhu :

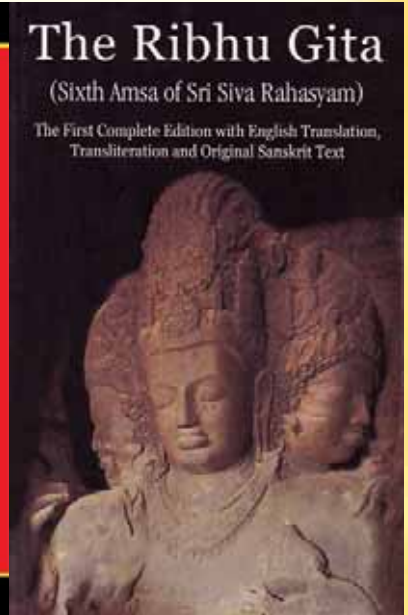
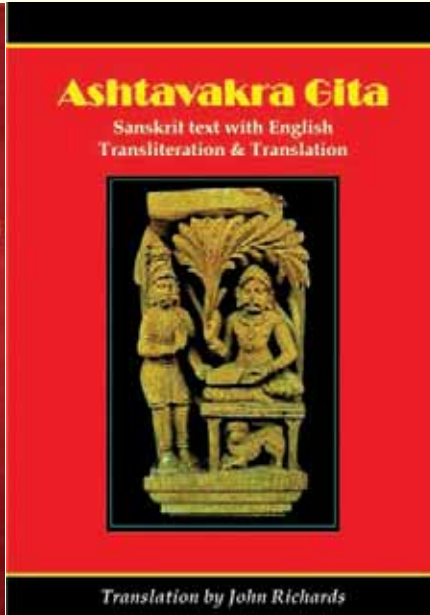
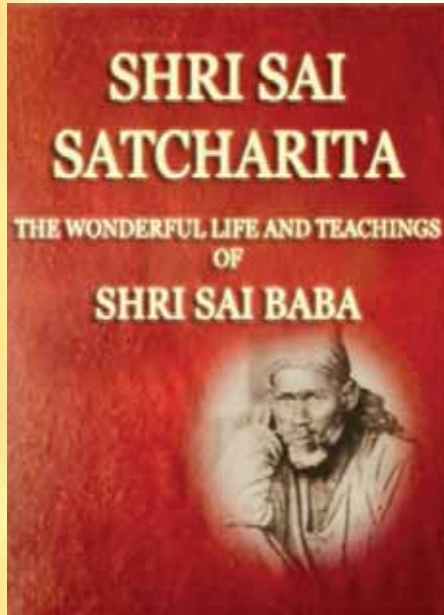
“Lord *Sat Guru*! By thy grace I have, in a split second, shed all sense of differentiation of Self and non-Self. I have attained the certainty that all is *Brahman* and I am that *Brahman* Self, I have become settled in the eternal bliss of *Brahman* Self.”



Shri Sai Sat Charita, like the Ashtavakra Gita and the Ribhu Gita, also teaches about the Supreme state of Realization. That is to say, when the devotee surrenders his body, mind, and wealth completely to the *Guru*, he becomes absorbed in his own Self and goes into the state

of *Samadhi yoga* (experience of the *Self*).

Baba once told a rich man, who had come to Him for being initiated into *Brahma-Jnana* or self-realization, that “for seeing *Brahman* one has to give five things, i.e., surrender five things viz. (1) five *pranas* (vital forces), (2) five



senses (five of action and five of perception), (3) mind, (4) intellect and (5) ego. This path of *Brahma-jnan* or self-realization is ‘as hard as to tread on the edge of a razor’... The knowledge of the self is so subtle and mystic, that no one could, by his own individual effort ever hope to attain it. So, the help of another person - the *Guru*, who has himself got self-realization, is absolutely necessary.” (Shri Sai Sat Chrita, Chapters : 16-17)

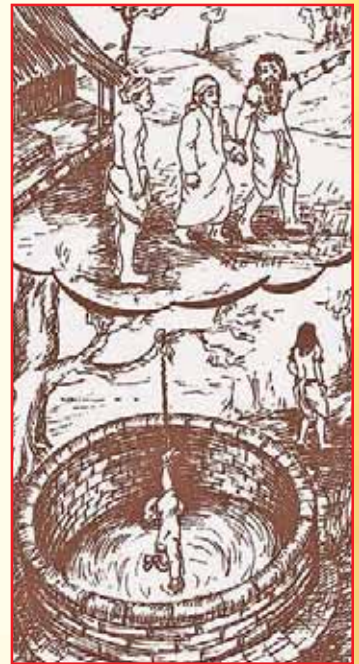
Seek of the seekers, aim of the *yogis*,



Shri Sai Sat Charita, Chapters 16-17

hopefulness of the *karma yogis*, a mile stone for those in search of God, stage of self-realization is sought by one and all (though subconsciously in most cases).

Sai Baba once encountered His *Guru* in a dense jungle. The *Guru* took Him to a well, tied His feet with a rope and hung Him head downwards and feet up from a tree near the well. Baba was kept suspending three feet above the water. Neither He could reach the water with His hands, nor



Shri Sai Sat Charita, Chapter 32

(Contd. on page 12)





## सद्गुरु श्री साईं नाथ

– धरा तल पर अद्भुत अवतरण

### ध्याता, ध्यान, ध्येय

“सूर्य को रुई-बाती की आरती। भक्तिभाव से सौर करते। अथवा गुड़ का गणपति बना कर। निवेदित करते गुड़ ही गाणपत्य। अथवा महार्णव में से अंजुली से लेकर जल। अर्घ्यार्पण उसे ही करते।”

– श्री साईं सत् चरित, अ. १९, पंक्तियाँ ३-४

– देखो कैसा अचम्भा है – सूर्योपासक दीये में घृत डाल कर, रुई की बाती बना कर, उससे जगत् के प्रकाशक परम जाज्वल्यमान सूर्य की भक्तिभाव से आरती उतारते हैं; अर्थात् ज्योति से ही परम ज्योति की आरती! भगवान् गणपति के भक्त उनकी प्रतिमा के अभाव में गुड़ के ही गणपति बना लेते हैं और प्रसाद के रूप में उनको गुड़ ही अर्पित कर देते हैं; अर्थात् प्रसाद के द्वारा प्रसाद का ही पूजन! महासागर में जाकर स्नान करने वाले समुद्र में से ही अंजलि भर कर, जल लेकर उसी का जल उसे ही अर्घ्य रूप में अर्पित कर देते हैं; अर्थात् जल के द्वारा जल का ही पूजन!

श्री हेमाडपन्त के द्वारा श्री साईं सत् चरित में ‘ध्याता, ध्यान, ध्येय’ के इस रूपक द्वारा दिया गया दृष्टान्त अन्यत्र मिलना दुर्लभ है, जिसमें तीनों एकरूप हो जाते हैं।

ध्याता, ध्यान और ध्येय – तीनों शब्द एक ही धातु

– ‘ध्यै’ = ‘ध्यान करना’ से निष्पादित हुए हैं, जिनके क्रमशः अर्थ हैं – ध्यान करने वाला, चिन्तन और जिसका ध्यान किया जावे। अस्तु, तीनों की उपादान सामग्री एक ही होने से इनमें सामंजस्य तो होगा ही; और इनका कार्य भी एक होगा – **समानशीले व्यसनेषु सख्यम्।**

इन्हीं के दूसरे समानार्थक शब्द हैं – साधक, साधना और साध्य। जब साधक सर्व एषणाओं (सभी इच्छाओं यथा जीवैषणा, पुत्रैषणा, धनैषणा आदि) से विनिर्मुक्त होकर जब सर्वभूतस्थ परमात्मा, परम गुरु, अन्तरात्मा को जानता है, ध्यान करता है, पहचानता है, तब वह अद्वितीयता को प्राप्त कर निर्भय हो जाता है। तभी उसे मोक्ष तथा परमानंद की प्राप्ति होती है; और ध्याता, ध्यान और ध्येय समरस हो जाते हैं।

जब सद्गुरु कृपा करके दिव्य नेत्र प्रदान करते हैं, तब अज्ञान का निरसन हो जाता है और उसी क्षण ज्ञानसंवित्ति (प्रत्यास्मरण) हो जाती है। तब मीरा की तरह – “मेरे तो गिरधरगोपाल दूसरो न कोई”, सूर की तरह – “खंजन नैन रूप रस माते।” तुलसी की तरह – “एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास। एक राम घन स्याम हित, चातक तुलसीदास।।”

औरंगाबादकर की तरह – “गुरुकृपांजन पायो मेरे भाई। राम बिना कछु मानत नाहीं।।ध्रु.।। अंदर रामा बाहर रामा। सपने में देखत सीतारामा।।१।। जागत रामा सोवत रामा। जहाँ देखे वहाँ पूनकामा।।२।। एका जनार्दनी अनुभव नीका। जहाँ देखे वहाँ राम सरीखा।।३।।... गुरु...”

– तब सर्वत्र राम ही राम, कृष्ण ही कृष्ण, परम गुरु साईं ही साईं नज़र आते हैं।

एक वयोवृद्ध शक्तिक्षीण महिला की कथा से आप श्री साईं सत् चरित का पारायण करने वाले सभी साईं भक्त परिचित होंगे; पर यहाँ प्रसंगोपात उसका उल्लेख करना आवश्यक है। वह निर्वाण प्राप्त करने के लक्ष्य से साईं से गुरुमन्त्र प्राप्त करने के हेतु शिर्डी आयी। बाबा के आनाकानी करने पर वह निग्रह कर अन्न-जल त्याग कर बैठ गयी। – समाज में तीन हठ विश्वप्रसिद्ध हैं – राजहठ, तिरियाहठ और बालहठ। उसे व्रत-उपवास करते देख कर माधवराव को भय लगा कि कहीं यह अपने तिरिया हठ के कारण अपने प्राण ही नहीं त्याग देवे। माधवराव अपनी मध्यस्थता करने बाबा के पास गये। बाबा ने अनुग्रह करके बुढ़िया को अपने पास बुलाया और





कहने लगे, “हे माता! मैं सत्य ही कहता हूँ; तू अपने जीवन को बेहाल क्यों करती है? मेरे एक गुरु थे; मैं उनकी सेवा करते-करते थक गया; पर वे कानमन्त्र नहीं देते। पर, मेरे मन में प्रबल आशा थी और उनका संग कभी नहीं छोड़ता। मैंने बारह वर्ष तक गुरु-चरणों में वास किया। उनका मुझ पर अपरिमित प्रेम था। मेरे गुरु के समान कोई बिरला ही गुरु होगा। उनके उस प्रेम का क्या वर्णन करें? मैं रात-दिन प्रेम पूर्वक गुरुमुख का ही अवलोकन करता रहता। हम दोनों ही आनंदघन! उन्होंने भी कभी मेरी अवज्ञा नहीं की। मैं जहाँ-कहीं भी होता उनकी कृपादृष्टि ही मुझे सँभाले रहती। कच्छपी (कलुई) जैसे अपनी नयनदृष्टि का चारा डाल कर ही अपने बच्चों का लालन-पालन कर लेती है, वैसी ही मेरे गुरु की भी रीत थी। अर्थात्, मैं, मेरे गुरु, और मेरा ध्यान तीनों समरस हो जाते। हे मात! तुझे भी यही पद्धति अपनानी है।”

भगवान् श्री कृष्ण भी श्रीमद् भगवद् गीता में कहते हैं - “अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते...”

- अध्याय ९, श्लोक २२

अर्थात्, जो अनन्य प्रेमी भक्त जन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते हैं - तैल धारावत् जिनका ध्यान मुझ अविनाशी परमात्मा में ही लगा रहता है, तो वह और मैं एकरूप हो जाते हैं। श्रीमद् भागवत में श्री राधा जी, गोपियों और श्री कृष्ण का प्रेम इसका उत्कृष्ट उदाहरण है।

गोपकन्याएँ दूध-दही, माखन बेचने घर से निकली हैं। कृष्ण-प्रेम में उनकी सुध-बुध बिसर गयी है। उनका मन तो मुरारि के चरण-कमलों में लगा हुआ है। वे बोलना तो चाहती हैं, ‘दूध-दही लो, माखन लो!’ परन्तु, मुरारिपादार्षितचित्तवृत्ति के कारण वे जोर-जोर से बोलने लगीं - ‘माधव लो, कोई माधव लो!’

“विक्रेतुकामाखिलगोपकन्या,  
मुरारिपादार्षितचित्तवृत्तिः।  
दध्यादिकं मोहवशादवोचद्,  
गोविन्द दामोदर माधवेति।।”

- श्री गोविन्ददामोदरस्तोत्रम्

- यह है ध्यान की पराकाष्ठा, जिसमें ध्याता, ध्यान, ध्येय एक हो जाते हैं।

श्रीमद् भागवत के दशम स्कन्ध में एक अन्य प्रसंग है -

दधिमंथन के समय माता यशोदा की तन्मयता की कैसी शोभा थी - आनंद लीजिए और ध्याता, ध्यान,

ध्येय के सही स्वरूप को पहचानिए -

“क्षौमं वासः पृथुकटितटे विभ्रति सूत्रनद्धं।

पुत्रस्नेहस्नुतकुचयुगं जातकम्पं च सुभ्रूः॥

रज्ज्वाकर्षश्रमभुजचलत्कंकणौ कुण्डले च।

स्विन्नं वक्त्रं कबरविगलन्मालती निर्ममन्थ॥”

- सुंदर भृकुटि वाली माता यशोदा दधिमंथन कर रही है। वे अपने स्थूल कटिभाग में सूत की डोरी से बाँध कर रेशमी लहंगा पहने हुई हैं। पुत्रस्नेह के कारण उनके स्तनों से दूध की धारा बह रही है। उनका सारा शरीर डोल रहा है। नेती खींचते रहने से बाँहें कुछ थक गयीं हैं। हाथों के कंगन और कानों के कुण्डल हिल रहे हैं। मुख पर पसीने की बूँदे झलक रही हैं। चोटी में गूँथे हुए मालती के सुंदर पुष्पों की पंखुरियाँ झर रही हैं।

अभिधा से किये गये इस अनुवाद से यह साधारण घटना प्रकट होती है। परन्तु, जब हम इसके गूढ़ अर्थ पर विचार करते हैं, तो निरूपित होता है कि भक्त के तन, मन, वचन - सब अपने लाड़ले बालकृष्ण की सेवा में संलग्न हैं। स्नेह अमूर्त पदार्थ है; वह सेवा के रूप में ही व्यक्त होता है। घर में सेवाकार्य हेतु दासियों के उपस्थित रहने से दधिमंथन कर्म यशोदा के योग्य नहीं है। फिर भी, पुत्र स्नेह की अधिकता से यह सोच कर कि मेरे लाला को मेरे हाथ का माखन ही भाता है, वे स्वयं ही दधि मथ रही हैं। कमर में रेशमी लेंगा डोरी से कस कर बाँधा हुआ है अर्थात् आलस्य प्रमाद नहीं था। रेशमी वस्त्र पवित्रता के प्रतीक हैं। पुत्रस्नेहस्नुतकुचयुगलं = पुत्र के प्रति स्नेह के कारण दोनों स्तनों से दूध झर रहा है। स्तनों में कम्पन भी हो रहा है। (क्योंकि उनको भय है कि कहीं उनको नहीं पिया तो!) रज्ज्वाकर्षश्रमभुजचलत्कंकणौ कुण्डले = नेती को खींचने के श्रम से हाथों में कंकण और कानों में कुण्डल नाच रहे हैं। कंकण झंकार ध्वनि कर रहे हैं कि वे आज उन हाथों में रह कर धन्य हो रहे हैं, जो भगवान् की सेवा में लगे हैं। कुण्डल मैया यशोदा के मुख से बालकृष्ण का लीला-गान सुन-सुन कर परमानंद से हिल रहे हैं। स्विन्नं वक्त्रं = मुख पर पसीने की बूँदे झलक आयी हैं।

कबरविगलन्मालती = चोटी में गूँथे हुए मालती के सुंदर पुष्पों की पंखुरियाँ झर रही हैं। माता भावविभोर होकर श्रृंगार और शरीर को भूल चुकी है। अतः उसे मुख पर पसीना आने और पुष्पों के गिरने का ध्यान ही नहीं है। यहाँ हृदय में बालकृष्ण की लीला का आनंद, हाथों से दधिमंथन और मुख से लीलागान - इस प्रकार मन,





तन, वचन तीनों का श्री कृष्ण के साथ एकतान संयोग है। मेरी युवावस्था में मेरे हृदय पटल पर जो एक छवि (image) अंकित हुई, वह आज भी मिटाये नहीं मिटती। मेरी युवा धर्मपत्नी के उत्संग में आसीन, उसका प्रथम गोलमटोल पंकजाभ ललित शिशु उसके पयोधरों से स्तन्यपान करते हुए अपनी जननी के मुखमण्डल पर स्थित खंजन नयनों में अपनी चकोर दृष्टि गड़ाये और धात्री भी उसके गोल-गोल नेत्र-फलकों में ही एकटक झाँकती हुई, अपने आँचल से उसे कुछ-कुछ ढाँके हुए, दोनों ही दुनिया से बेखबर, एक दूसरे में लीन-खोये हुए, उनको यह पता ही नहीं कि कोई उनको देख भी रहा है। शिशु अपनी जननी के स्वरस से तुष्टि-पुष्टि प्राप्त कर कब अपने नेत्र मूँद लेता है, पता ही नहीं लगता। माता शिशु को पालने में पौढ़ा कर जब झाँकती है, तो मुझे पीछे खड़ा देख कर चौंकती है और पूछती है, अरे! आप यहाँ कब से खड़े थे? मैं क्या उत्तर देता, मैं द्रष्टा, वह दृश्य और उसका दर्शन करता मैं। सब कुछ अद्वितीय, मैं आत्मलीन - दृष्टा, दृश्य, दर्शन सब एकमेव। तुलसी लिखते हैं - 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी।' ऐसे दृश्यों का वर्णन करना शब्दों के सामर्थ्य से बाहर की वस्तु है। काश! रवि वर्मा जैसा कोई चित्रकार अपनी तूलिका से ऐसे वात्सल्य

से पूर्ण दृश्य पटल पर उकेर पाता। काश! अजन्ता, एलोरा की भित्तियों पर हमें ऐसे चित्र देखने को मिलते। कोई शिल्पकार खजुराहो की गुफाओं में ऐसी मूर्तियाँ गढ़ पाता, तो वह शाश्वत आनंद का स्रोत होतीं। उन श्रृंगारिक कामुक मूर्तियों में क्या रखा है जिन्हें देखने लोग दूर दूर से आते हैं। "मूर्ति में जो कुछ स्वारस्य, माधुर्य है, वह यही कि अपने अन्तःकरण का सारा सौंदर्य उसमें उँडेल दिया जाता है। मूर्ति के मानी है, हमारे चित्त की प्रतिमा।" काश! मैं मूर्तिकार होता और अपने चित्त की प्रतिमा गढ़ पाता और अपने अन्तःकरण का सारा सौंदर्य उसमें उण्डेल पाता। माता यशोदा को बालकृष्ण के छोटे से मुख में समग्र ब्रह्माण्ड दिखलायी दिया, इसी शाश्वत आनंद के फलस्वरूप ही तो! ध्याता, ध्यान, ध्येय - जब मिल कर एक हो जाये, यही तो सहज समाधि अवस्था का परमानंद है।

- मदन गोपाल गोयल

प्राचार्य (सेवा निवृत्त)

श्री राम अयन, इन्द्रगढ़ - ३२३ ६१३, जिला बूंदी, राजस्थान.

ई-मेल : [gopalgoyal1963@gmail.com](mailto:gopalgoyal1963@gmail.com)

संचार ध्वनि : (०)९४६०५९४८९०, ७८९१७६३८८४



(Contd. from page 9)

could the water go into His mouth. The *Guru* left the venue for an unknown destination, leaving *Baba* behind in that pose in the well. The *Guru* returned after four or five hours and hurriedly took *Baba* out of the well and quizzed, "How did you feel about your posture in the well?" *Baba* replied, "O *Gurudev*! I was in a state of *paramanand* (bliss supreme)..." (Shri Sai Sat Charita, Chapter 32)

It meant that within the self-realized *Baba* was intuitive peace and poise. Though He remained hanging in the well for about four or five hours, His mind ascended to the tenth plane of the *akashic ethers* of the heavens. *Paramanand* is the stage in the life of human being when he sheds all his artificial inhibitions and orients self towards search of the Absolute Truth. The more one proceeds towards the truthful end, the bliss felt by him in all actions is but part of the eternal joy one had been seeking

*anand*... the state of experiencing eternal and blissful joy finds its logical end when one reaches the source of all inhibitions... the stage of *paramanand*...when all senses get subdued, mind becomes absolutely calm and feeling of oneness of God is experienced. The stage of *paramanand* is called self-realization. The *sadhak* (seeker) gets absorbed in his own self and feels the ecstasy experience of the *Samadhi Yoga*.

"If anyone prostrates before *Sai* and surrenders heart and soul to Him, then unsolicited, all the chief objects of life viz. *Dharma* (righteousness), *Artha* (wealth), *Kama* (desire) and *Moksha* (deliverance), are easily and spontaneously attained." ((Shri Sai Sat Charita, Chapter 6)

- Dr. Subodh Agarwal

'Shirdi Sai Dham',

29, Tilak Road, Dehra Dun - 248 001, Uttarakhand.

E-mail : [subodhagarwal27@gmail.com](mailto:subodhagarwal27@gmail.com)





## बाबा की महासमाधि का महत्व एवं संदेश

इस धरती पर जन्म लेने वाला हर जीव मृत्यु की ओर अग्रसर होते रहता है। इसे ध्यान में रखते हुए, इस महत्वपूर्ण विषय पर साईं के परम भक्त श्री नरसिंह स्वामी जी द्वारा समय समय पर, साईं महासमाधि के अवसर पर दिये गए महनीय संदेशों से साईं को जानने के इच्छुक सभी को अवगत होना चाहिए। बाबा जैसे युगावतार पर जन्म एवं मृत्यु लागू नहीं होते; क्योंकि वे शरीर तक सीमित नहीं होते। वे शरीर की परिधि के बाहर हैं। वे जीवन-पर्यन्त 'जीवन मुक्त' होकर रहते हैं तथा शरीर छोड़ने के उपरान्त अदृश्य रूप में कार्य करते रहते हैं। स्वामी जी द्वारा दिये गए संदेश हमें सन्तों की महासमाधि का महत्व विस्तार पूर्वक समझाते हैं तथा श्री साईं बाबा का विशेष रूप से विवेचन-वर्णन करते हैं, उन्हीं से बाबा का महत्व प्रतिपादित हो जाता है। आशा है कि प्रस्तुत संदेशों से पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे तथा बाबा के मार्ग पर अग्रसर होकर अपने जीवन को सार्थक करेंगे।

(सितम्बर-अक्तूबर २०१३ से क्रमशः)

**देहांत** अर्थात् देह का आवरण उतारना, एक सामान्य मनुष्य के लिए यह दिन उसकी मृत्यु का दिन होता है या फिर मृत्यु की वर्ष-गाँठ। अभी हाल में दिवंगत हुई आत्माओं के लिए यह शोक का दिन है; पर जैसे-जैसे समय बीतता है, दुःख और दर्द भर जाता है। इसी दिन पवित्र एवं पावन स्मृतियाँ आती हैं तथा दिवंगत आत्मा का श्राद्ध एवं तर्पण किया जाता है। परन्तु, सन्तों के लिए यह पुण्यतिथि अर्थात् - देह-बन्धन से मुक्त होना, एक आनंद-मंगल का दिन होता है। भौतिक आवरण से बाहर आने के बाद वे ईश्वर की सत्ता की पहचान एवं अनुभव कराने और ईश्वर के स्वरूप का परिचय कराने, भक्तों का मार्गदर्शन करने, उनका संरक्षण करने एवं प्रार्थनाओं का उत्तर देने में अधिक सक्रिय हो जाते हैं। हमारे लिए उत्तम है कि यह दशहरा - इकादशी दिवस, जिस दिन साईं बाबा ने महासमाधि ली, उसे हम ऐसे उत्तम विचार एवं कार्यों में लगाएँ, जिसकी बाबा अपेक्षा करते हैं।

अब हम विचार करते हैं कि साईं बाबा क्या हैं और वे हमसे क्या चाहते हैं! बाबा एक ज्ञानी, साहसी, निडर, सत्यवादी, स्नेहमय एवं आत्मत्यागी मनुष्य थे; सन्त के रूप में अपने निजी स्वरूप को पहचानने वाले आत्मज्ञानी थे। इन दोनों में विशेष बात यह थी कि वे अपने भक्तों से अपेक्षा करते थे कि वे उनकी तरह परिपूर्णता प्राप्त करें! हमारे लिए आवश्यक है कि हम उनके कुछ विशेष गुण प्राप्त करें, जिनसे हम अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें और फिर जीवन के उच्चतम उद्देश्यों पर पहुँच सकें, जैसे कि उन्होंने स्वयं किया। हम बाबा में निर्भीकता देखते हैं। भगवान् श्री कृष्ण के सद्गुणों की तालिका में सर्वप्रमुख है 'अभयशीलता', बाबा को भी कोई डर नहीं था। उन्हीं की तरह हमें भी निडर होना चाहिए। बाबा को किसी मानव या दानव का कोई डर नहीं था। बाबा को अपनी शक्तियों पर पूर्ण भरोसा था तथा स्नेहमय भगवान्

के पूर्ण संरक्षण पर भी। हमें भी ऐसा भरोसा बाबा पर करना चाहिए। मृत्यु का उन्हें कोई डर नहीं था और न ही जीवन के उलट फेरों से वे भयभीत थे। अगर हम बाबा की जीवन-लीलाओं का निरंतर स्मरण करें, तो हम मृत्यु एवं जीवन के उतार-चढ़ावों से निर्भीक हो जायेंगे। मृत्यु क्या है? - मृत्यु केवल एक परिवर्तन है। इसीलिए, न तो मृत्यु जैसी नाजुक संकट की घड़ी ने और न ही मृत्यु के उपरान्त जीवन ने बाबा को कोई दुःख दिया अथवा हानि पहुँचाई। अगर हमें बाबा के सच्चे भक्त के रूप में जीवन जीना है, तो मृत्यु और जीवन के उतार-चढ़ावों से हमें कोई दर्द या तकलीफ नहीं पहुँच सकती। मृत्यु बाबा के लिए ईश्वरीय कृपा के रूप में वरदान साबित होती है। बाबा का उत्कृष्ट ईश्वरीय स्वरूप, जब वे सशरीर शिर्डी में मौजूद थे, तब वे अपनी दैनिक जीवन-चर्या एवं जीवन-लीला जनसाधारण के समक्ष प्रकट करते थे। परन्तु, इस साक्षात् अवतार की देहस्वरूप परिमितता या सीमितता के कारण अधिकतर लोगों के सामने उनका दिव्य स्वरूप एवं अन्तर्दृष्टि गुप्त ही रही। शरीर त्यागने के पश्चात् बाबा का स्वरूप अधिक स्पष्ट एवं दैविक प्रतीत होता है। क्या अंतर है उस साईं में तथा परमेश्वर में, जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है एवं उत्तर देता है? - निःसंदेह कोई अंतर नहीं है। ईश्वर को अनुभव-रूप में जानना, केवल आशीर्वाद-स्वरूप प्रार्थनाओं के रूप में पाना है। इन्सान साईं को ईश्वर मानने के सही निष्कर्ष पर अपनी प्रार्थनाओं के उत्तर पाने के निजी अनुभव द्वारा पहुँचता है। बाबा भक्तों को आशीर्वाद के रूप में एवं प्रार्थनाओं का उत्तर साक्षात् रूप में देते थे। शिंदे ने पुत्र प्राप्त करने की प्रार्थना, दत्त मंदिर (गंगापुर) में की, तो साईं शिर्डी में शरीर-रूप में विद्यमान थे (शिंदे के प्रारब्ध कर्म में पुत्र-रत्न की प्राप्ति नहीं थी); पर उन्हें उसी समय-क्रम में पुत्र की प्राप्ति हुई। इसी प्रकार अनगिनत लोग साईं से



प्रार्थना करते हैं और उनसे अभीष्ट उत्तर प्राप्त करते हैं।

निश्चित तौर पर वह शक्ति जो प्रार्थनाओं का उत्तर देती है, वह ईश्वर है। अगर वह शक्ति भगवान् है, तो ईश्वर का क्या महासमाधि-दिवस या श्राद्ध हो सकता है? क्या ईश्वर मर सकता है? “नहीं, ईश्वर सदैव जीवित है। वह हर प्राणी में हर क्षण नित्य और शाश्वत एवं निरंतर स्थिति में विद्यमान है। इसमें मृत्यु की घड़ी भी शामिल है और मृत्यु-उपरांत जीवन का हर क्षण भी। हमें अकसर जो बताया जाता है कि ‘मृत्यु’ का अर्थ यदि ‘विनाश’ या ‘विलोप’ है, तो यह झूठ है। किसी भी वस्तु का अस्तित्व में न रहना या उसका विनष्ट होना सम्भव नहीं। मृत्यु केवल एक परिवर्तन है - दृष्य से अदृष्य होना। यह परिवर्तन ईश्वर हर प्राणी में करता है। जो मरता है, वह शारीरिक आवरण को छोड़ता है, न कि आंतरिक जीवन-शक्ति को छोड़ता है। जिसे हम ईश्वर कह सकते हैं, यह आंतरिक जीवन शक्ति जीवात्मा कहलाती है। इस प्रकार जीव जन्म-जन्मांतर तक, आवरण बदलता रहता है, जब तक उसे स्वयं के अंतरंग की वास्तविक पहचान नहीं होती कि वह स्वयं भगवान् है ‘सत्, चित् और आनंद रूप’! ईश्वर ही जीव में समाहित है और वही हर जीव में तब तक परिवर्तित होता रहता है, जब तक कि वह अपने निजी स्वरूप को नहीं जान लेता। किसी को भी इस परिवर्तन से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

मृत्यु ईश्वर द्वारा रचित प्रावधान है, जो एक जीवन और दूसरे जीवन के बीच एक कड़ी या सीमा-रेखा है। इसका विशेष महत्व है - जीवन की प्रतिष्ठा बढ़ाना। जो मृत्यु का साहस पूर्वक सामना करता है, वह वीर नायक या ‘हीरो’ है। वह यह समझने के लिए उपयुक्त है कि हम केवल शरीर नहीं हैं, इसके आगे भी कुछ शेष हैं, जो इस शरीर का उपयोग कर रहे हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि शरीर को अपनी इच्छा से सही क्षण में त्याग दिया जाए। इस दृष्टिकोण की अनेक भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हैं। जो मृत्यु का साहस पूर्वक सामना करते हैं, वे बहुत कुछ प्राप्त करते हैं। भगवान् श्री कृष्ण के अनुसार ‘एक योद्धा को वीरता पूर्वक लड़ते हुए मृत्यु का आलिंजन करने से अधिक सार्थकता और किसी भी प्रकार संप्राप्त नहीं हो सकती।’

**हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा**

**वा भोक्ष्य से महीमा।**

**तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चयः॥**

यदि तुम युद्ध में मारे गये, तो तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी अथवा युद्ध में विजय प्राप्त होने पर पृथ्वी का राज्य भोगोगे। अतः हे कुन्तीपुत्र! युद्ध के लिए दृढ़ निश्चय करके उठ खड़े हो।

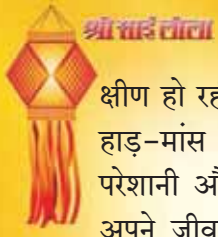
इस संसार से दो तरह के व्यक्ति ही स्वर्ग में पहुँच पाते हैं। एक तो सिद्ध योगी, जो अपने निजी स्वरूप को उस सर्वोच्च से एकाकार कर पाते हैं तथा दूसरे वे योद्धा जो युद्ध करते-करते अपने प्राण त्याग देते हैं।

अर्जुन ने निर्भीकता पूर्वक श्री कृष्ण के आवाहन का उत्तर दिया (श्री कृष्ण के व्यंग से उत्तेजित होकर ‘वाक्य क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ’, अर्थात्, ‘हे पार्थ! कायरता को मत अपनाओ; क्योंकि यह तुम्हें शोभा नहीं देता। ‘भया द्रणा दुपरंतं मस्यन्ते त्वां महारथाः।’ अर्थात्, महारथी लोग भी तुमको ऐसा कायर समझेंगे जो युद्ध से डर कर भाग रहा हो।) (‘आजी तब्ये मोहः - करिण्ये वचनं तव।’ ‘मेरा भ्रम नष्ट हो गया है; मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा। और आगे भी हे कृष्ण! युद्ध मेरा गर्व है।)

साईं ने अपने उदाहरण द्वारा यह सिद्ध किया कि भगवान् कृष्ण का संदेश ‘वीरता पूर्वक युद्ध करते-करते वीर गति को प्राप्त होना है; मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं।’ यही भगवद् गीता के उपदेश का सार है। इसके साथ ही अहिंसा के व्रत का पालन करने का संदेश भी गीता देती है। दूसरी अन्य स्थिति में जहाँ पर योद्धाओं को युद्ध करके अपना कर्तव्य पूरा करने की आवश्यकता नहीं है। एक योद्धा जब मृत्यु का सामना साहस पूर्वक करता है तब वह ऊँचे दर्जे का त्याग करता है। जिस देश के पास इस प्रकार के उच्च कोटि के योद्धा हों, वह देश सुरक्षित, स्वतंत्र एवं सम्पन्न रहेगा। जिस देश के पास इस प्रकार के योद्धा नहीं होंगे, वह देश असुरक्षित, गुलाम एवं बंधुआ मजदूरों की भाँति हमेशा दुःखी रहेगा।

अब हम इस संदेश को तथा बाबा के प्यार एवं संरक्षण को महासमाधि से जोड़ते हुए समाप्त करते हैं। युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते हुए शरीर त्याग देना भी आसान प्रतीत होता है, तुलनात्मक दृष्टि से एक लम्बी आयु तक अपने ऊपर आश्रित हज़ारों भक्तों को संरक्षण देने तथा उनकी जरूरतें एवं आशाएँ पूरी करने में निरन्तर कार्यरत रहने में। बाबा की कृपा एवं सहायता तो रोज़ाना सैकड़ों लोग लेते थे, जब वे जीवित थे। बाबा ने एक बार जी. एस्. खापर्डे से कहा था कि हज़ारों लोग उनसे रोज़ मदद माँगते हैं। उनका ध्यान हर दम रखने में उनकी स्थिति





क्षीण हो रही है, यह सिलसिला तब तक जारी रहेगा जब हाड़-मांस का यह शरीर वे नहीं छोड़ते, परन्तु वह इस परेशानी और नुकसान से कतई चिंतित नहीं हैं; क्योंकि अपने जीवन और सुख के मुकाबले उनके लिए भक्तों एवं बच्चों का संरक्षण विशेष महत्व रखता है। यही क्रास (प्रतीक चिह्न) जिससे बाबा जुड़े हैं। इसी क्रास रूपी सिंहासन से बाबा की आत्मा प्रभुत्व एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष पर स्थिर होकर भक्तों का उत्थान कर रही है। आज हम सब मिल कर बाबा को स्वर्गारोहण के दिन याद करते हैं, और समझते हैं कि जीवन का वास्तविक सत्य है 'परोपकार' अथवा 'त्यागमय जीवन ही जीवन है।' या प्यार-भरी कुर्बानी ही जीवन है। भोग-विलास में व्यतीत जीवन मृत्यु है। यदि हम सब मिल कर प्रयास करें तथा घोर संघर्ष द्वारा आदर्शवादी श्रेष्ठ सिद्धांत तक पहुँच पाएँ, तो निश्चय ही हमें व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय ध्येय प्राप्त होगा। "पात्रता प्राप्त होने पर ही तुम यह पाओगे" - ऐसा ही साईं ने कहा था।...

साईं बाबा का आज का यह १९४५ सन् का महासमाधि दिवस विश्व इतिहास और हमारे राष्ट्रीय इतिहास के नाजुक दौर का हिस्सा रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध का लगभग अंत हो चुका था; विश्व शांति तथा पुनर्निर्माण के कार्यक्रमों की हर जगह चर्चा हो रही थी; पर स्थायी विश्व शांति की कोई आशा किरण दिखाई नहीं दे रही थी - शांति, जो देश एवं विश्व को सुस्थिर, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व प्रदान करे। यह प्रश्न सभी के मानस पटल पर रह-रह कर उभर रहा था।

यदि हम घोर निराशावादी दृष्टिकोण को दूर हटा दें, जिसके अनुसार प्रकृति का विधान अतिक्रूर है, प्रगतिक्रम में पहले भयंकर संघर्ष करने पर कमज़ोर की समाप्ति तथा शक्तिशाली की विजय निश्चित थी; इस पर सचमुच विचार करें, जिसका कोई विश्वसनीय आधारभूत सिद्धान्त नहीं है, और विरोध में प्राणियों का भौतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास एवं कई अन्य व्याकुल कर देने वाले तथ्य हमारे सामने हैं। निरपेक्ष दर्शकों के मतानुसार विजेताओं में दूरदृष्टि का न होना, आत्मनियंत्रण, सच्ची विद्वत्ता और आचरण के अभाव में युद्ध के दोबारा भड़क उठने, यानी कि तीसरे विश्व युद्ध की सम्भावना की भविष्य वाणी की जा सकती है - तीसरा विश्व युद्ध, जिसके कि पिछले दोनों विश्व युद्धों से अधिक भयानक

एवं अधिसंख्य क्रूर परिणाम होंगे। ऐसे समय में साईं भक्तों एवं सामान्य जनता का क्या दायित्व है? बाबा की पुण्यतिथि के अविस्मरणीय दिवस पर हम भक्त एवं अन्य सब बाबा का अपने भक्तों के प्रति संरक्षण एवं उनके धरती पर अवतरण के उद्देश्य - 'मानव मात्र की भलाई के प्रति वचनबद्धता' के प्रति अपना आभार प्रदर्शित कर सकते हैं, कम से कम इस देश में तो अवश्य ही।

साईं ने दयालु माँ के रूप में उस हर व्यक्ति को संरक्षण दिया, जिसने उनमें आश्रय ढूँढा और उन्हें प्राप्त करने की कोशिश की, वे हमेशा उनके आचरण एवं उनके कार्यकलापों पर निगाह रखते हैं। बाबा उन्हें भौतिक एवं आध्यात्मिक संकटों से बचाते हुए, जीवन के वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए - मानवता की लम्बे समय तक स्वार्थ रहित सेवा करने के लिए उनका मार्गदर्शन करते हैं। बाबा का सम्पूर्ण जीवन इसी पर केंद्रित था तथा उनके सचेत एवं ज्ञानी भक्त इस संदेश को उनकी कही गई बातों द्वारा समझ जाते थे। बाबा पूर्णतः स्वार्थ रहित थे। वे अनगिनत लोगों का भला कर सकते थे। बाबा के हर सच्चे भक्त का यही उद्देश्य होना चाहिए। वह वहीं तक लोकोपकार करें जहाँ तक उसकी सामर्थ्य एवं परिस्थिति इजाज़त दे। कोई भी यह नहीं कह सकता कि यहाँ गरीब मानव प्रकृति पर ज़्यादती की जा रही है। आज-कल स्वार्थ, छल-कपट, मतलबी अमीरों द्वारा गरीबों का शोषण, झूठ, पक्षपात एवं अन्याय के कई प्रकार के व्यवहार व्यक्तिगत एवं सामूहिक जीवन में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार दुर्व्यवहार की निरंकुश लहरें हम सबको, इस देश तथा सम्पूर्ण विश्व को युद्धों में फँसा कर सबकी शांति भंग करके मानव जाति को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर सकती है। इस भयानक बीमारी की उचित रोकथाम की अत्यन्त आवश्यकता है। राजनीतिक युक्तियाँ एवं सदाचार की उपदेशात्मक व्याख्याओं से भी कुछ हासिल नहीं होगा। हमें भ्रष्टाचार के स्वरूप को निर्दयता पूर्वक नष्ट करना होगा, ताकि मानव जाति को बचाया जा सके। इस दिशा में नित्य प्रति प्रयत्न किये जाने चाहिए। यह भयानक विपत्ति, जो हमारे ऊपर मँडरा रही है, उससे लोगों को किस प्रकार बचाना सम्भव है?

हर साईं भक्त ने यदि यह प्रण पहले नहीं किया है, तो वह अब इसी क्षण करे, कि वह अपने हर कार्य, विचार एवं वाणी पर नज़र रखेगा, ताकि वह प्रेम, दया,



सहनशीलता, दान एवं भाईचारे से ओतप्रोत जीवन जी सके। दूसरे व्यक्ति एवं समूह, जिनके साथ उसका सम्पर्क हो - चाहे वह किसी भी देश, जाति, धर्म, रंग-रूप एवं हैसियत के हों, हमें स्वयं को तथा किसी अन्य व्यक्ति को भी इस मापदण्ड से दूर हटने से रोकना है। जहाँ तक सम्भव हो, घृणा तथा शत्रुता को दिमाग से हटाना है, तथा ढोंग, पाखण्ड एवं शोषण को भी समाप्त करना है। हमें हर रोज़ कुछ सकारात्मक काम करने हैं। सबको स्नेह, सत्य, न्याय एवं सेवा का संदेश देना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। यह सामान्य निर्देश है। इन निर्देशों को बाबा की जीवन शैली द्वारा सबको समझाना एवं दर्शाना है। बाबा के पास असीम शक्तियाँ थीं, जिनसे वे सकारात्मक एवं नकारात्मक कार्य कर सकते थे; परन्तु बाबा ने उनका प्रयोग केवल कमजोर एवं अभागे व्यक्तियों के हितार्थ किया। बाबा ने मानवता की निस्वार्थ सेवा की; देश, जाति, वर्ण, वर्ग, पंथ और सम्प्रदाय का कोई भेद उनमें नहीं था। बाबा सबसे प्रेम करते थे, जिसमें पापी एवं अपराधी भी शामिल थे। बाबा ने लोगों को समझाया कि जब वे आपस में झगड़ा करते हैं और एक-दूसरे को भला-बुरा कहते हैं, तो उनका दिल दुखता है; परन्तु अगर वे एक-दूसरे के दोषों और भूलों को सहन करते हैं, तो उनका दिल खुश होता है। उन्होंने यह भी कहा कि परस्पर बंट कर वे लुट जायेंगे; परन्तु एक-दूसरे से हमदर्दी और एकता उन्हें समृद्धि प्रदान करते हुए जीवन के गन्तव्य तक पहुँचा देगी। बाबा की मस्जिद में हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि सब एकसाथ मिल कर बाबा की पूजा एवं आराधना करते थे। एक महान सद्गुरु के प्रादुर्भाव में एक-दूसरे धर्मावलंबियों को ध्वस्त करने से दूर हट कर, एक-दूसरे के मंदिरों-मस्जिदों एवं उपासना गृहों का वे निर्माण करने लगे, एक-दूसरे के साथ मिल-जुलकर इसी इमारत में खुशियाँ मनाने लगे। हिंदुओं ने मस्जिद के पुनर्निर्माण का कार्य किया। बाबा के एक ब्राह्मण भक्त श्री उपासनी बाबा ने अपने मंदिर के निकट एक मस्जिद का निर्माण करवाया। मुसलमान ईद का त्योहार द्वारकामाई-मस्जिद में शांति से मनाते थे। जब हिंदुओं की पूजा का समय होता, तो मुसलमान भक्त द्वारकामाई-मस्जिद में ढोल-बाजा बजाते और उनकी पूजा में मदद करते थे।

मुसलमान हिंदू देवताओं की मूर्तियाँ बनाने एवं मंदिर-निर्माण करने में हिंदुओं की मदद करते थे। मुसलमान इस इमारत को मस्जिद कहते थे। वे पश्चिमी दीवार की तरफ़ मुड़ कर इबादत करते थे; हिंदू इसे द्वारकामाई नाम से सम्बोधित करते और विधि-विधान के साथ बाबा के चित्र की पूजा करते; दीपक जलाते, तुलसी वृन्दावन की उपासना करते, बाजे बजाते, झाँझ एवं मंजीरा बजाते, तथा जोर-जोर से वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते। ऐसा आनंद भरा दृश्य हमें देश के अन्य भागों में भी देखने को मिलता है, जब हिंदू एवं मुसलमान संत इस प्रकार मिलजुलकर कार्य करते हैं। जैसे आनंदपुर में नागूर बाबा, बरदान गुफा आदि जहाँ मुसलमान या मुसलमान जैसे दिखते संत (जैसे साईं बाबा) हिंदुओं को हिंदू कर्मकाण्ड, हिंदू मंत्रों के विधि-विधानों पर उपदेश दें और यह निश्चित करें कि वे अपने पूर्वजों का धर्म नहीं छोड़ें तथा साथ ही वे मुसलमानों को इस्लाम पर चलने का मार्ग दिखाएँ और अन्य धर्मावलंबियों को अपने-अपने धर्म-ग्रन्थों में दी गई आचार-संहिता पर चलने को कहें।

अब इस विषय पर और गहराई में जाने की आवश्यकता नहीं। अब हम सब मिलकर तहे दिल से कट्टरता, धर्मान्धता, असहनशीलता, घृणा, स्वार्थ एवं झूठ का विरोध करें, तथा इन सबको छोड़ने का दृढ़ संकल्प करें। पूरी ईमानदारी एवं तत्परता से इस दृढ़ संकल्प का पालन किया जाए, तो इन सिद्धांतों को अपने आचरण एवं व्यवहार में उतारना मुश्किल नहीं है। हर रोज़ हमें अपने अच्छे विचारों को कार्य-रूप में परिणत करने के नये-नये अवसर मिलेंगे। हमारे कर्म स्वयं हमारे लिए बोलेंगे। सत्कर्मों की चमक के सामने बुरे कर्म और विचार वाले व्यक्ति, जिन्हें कि मानव जाति के लिए दुर्भाग्य कहा जा सकता है, टिक नहीं पायेंगे।

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद :

**रीता मलिक**

१०, मीराबाई पॉलिटेक्निक,

आवासीय परिसर, महारानी बाग,

नई दिल्ली - ११० ०६५.

ई-मेल : [malik.rita2@gmail.com](mailto:malik.rita2@gmail.com)

संचार ध्वनि : (०)९८६८८५८२०







## निर्गुण निराकार सगुण साकार श्री साई

१९वीं शताब्दी में धर्म के नाम पर समाज में वैमनस्य काफ़ी बढ़ा हुआ था। श्री साई बाबा इसी वैमनस्य को दूर करने के लिए मानव के कल्याण हेतु कलियुग में शिर्डी में अवतरित हुए और इसीलिए उनको 'कलियुगी अवतार' कहा जाता है। उन्होंने 'सबका मालिक एक' की शिक्षा देते हुए उपदेश दिया कि राम, जो हिंदुओं के भगवान् हैं और रहीम, जो मुसलमानों के खुदा हैं, एक ही हैं और उनमें जरा सा भी कोई भेद नहीं है, तो आपस में क्यों झगड़ा करते हो?

श्री साई बाबा जब देह रूप में थे उस समय उन्होंने सभी को आपस में मिलजुलकर रहने की प्रेरणा दी और आज भी उनका श्री साई सत् चरित विश्व के सभी सम्प्रदायों को आपसी विवाद और तर्क-वितर्क त्याग कर आपस में भाईचारे को बढ़ावा देता है, जो आज के समय की बहुत बड़ी ज़रूरत है। भले ही वे आज देह रूप में नहीं हैं, लेकिन भक्तों को उनकी पूजा-अर्चना द्वारा भावों के माध्यम से उनकी अनुभूति अवश्य मिलती है। इसके अलावा ऐसे प्रमाण भी मौजूद हैं, जिनमें उन्होंने भक्तों को साक्षात् दर्शन दिये हैं।

श्री साई बाबा के जीवनकाल की कथाओं का उल्लेख श्री साई सत् चरित में वर्णित है। ऐसे श्रद्धालु, जो बाबा को सद्गुरु (ईश्वर) स्वीकार करते हैं, उनके लिए

उनकी कथाएँ रुचिकर और शिक्षाप्रद हैं। लेकिन वे, जो उन पर विश्वास नहीं करते हैं, उनके लिए उनकी कथाएँ काल्पनिक हैं। बाबा के समाधि लेने के बाद की ऐसी अनगिनत घटनाएँ हैं, जो यह प्रमाणित करती हैं कि बाबा देह त्यागने के पश्चात् आज भी हमारे बीच में हैं।

श्री साई सत् चरित के अध्याय ३० में उल्लिखित है कि उनकी कथाएँ कपोलकल्पित नहीं, बल्कि विशुद्ध अमृततुल्य हैं। उनकी कथाओं को जो भी हृदयंगम करेगा, उन्हें उनकी महानता और सर्वव्यापकता विदित हो जायेगी। इस अध्याय में यह भी स्पष्ट रूप से वर्णित है कि जो वाद-विवाद और आलोचना करना चाहते हैं, उन्हें उनकी कथाओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, बाबा के चरणों में पहुँचने के लिए तर्क की नहीं, बल्कि प्रगाढ़ प्रेम और भक्ति की आवश्यकता है।

श्री साई बाबा विश्व को सही दिशा देने हेतु अवतरित हुए और उन्होंने अपने देहकाल में ही नहीं, बल्कि वे आज भी सभी वर्गों के लोगों को अथाह सुख-शांति पहुँचा रहे हैं। उनको सभी सिद्धियाँ प्राप्त थीं; लेकिन उन्होंने फिर भी एक फ़क़ीर के रूप में अपना जीवन बिताया। सृष्टि, जिसका निर्माण पंच तत्वों से मिल कर हुआ है, उन पर बाबा का पूर्ण नियंत्रण था।



एक बार शिर्डी में काफ़ी तेज तूफ़ान आया और इतनी अधिक मूसलाधार वर्षा हुई कि चारों ओर जल ही जल दिखाई देने लगा। तब शिर्डी के लोगों ने मस्जिद में आकर बाबा से अपने बचाव के लिए प्रार्थना की, तो बाबा ने मस्जिद के निकट खड़े होकर बादलों की ओर दृष्टि करके गरजते हुए शब्दों में कहा - “शान्त हो जाओ!” सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुछ समय के बाद ही भारी वर्षा का जोर कम होकर वायु धीमी पड़ गई और आँधी भी शान्त हो गई।

एक अन्य अवसर पर मध्याह्न के समय मस्जिद में धूनी की अग्नि इतनी अधिक प्रचण्ड हो गई कि उसकी लपटें ऊपर छत तक पहुँचने लगीं। बाबा ने अपना सटका उठा कर सामने के खम्भे पर बल पूर्वक प्रहार करते हुए कहा - “नीचे उतरो और शान्त हो जाओ!” बाबा के सटके की हरेक ठोकर पर अग्नि की लपटें कम होने लगीं और कुछ ही मिनटों के अंदर धूनी पूरी तरह शान्त और यथावत हो गई।

चाँद पाटिल ने बाबा से प्रथम भेंट के दौरान स्वयं देखा कि उन्होंने चिलम के लिए चिमटा ज़मीन में घुसेड़ कर किस प्रकार प्रज्वलित अग्नि का अंगारा निकाला और सटके से ज़मीन पर प्रहार करके चिलम की साफ़ी के लिए जल निकाला।

श्री साई बाबा प्रत्येक तीसरे दिन मस्जिद से पर्याप्त दूरी पर एक बरगद के पेड़ के नीचे अपनी आँतें स्वच्छ करने की क्रिया भी किया करते थे। वे अपनी आँतों को उदर से बाहर निकाल कर उन्हें कुएं के पानी से चारों ओर से स्वच्छ करके निकट के वृक्ष पर सूखने के लिए रख देते थे और आँतों के सूखने के पश्चात् उनको पहले की भाँति पुनः उदर में स्थापित कर देते थे। वे कभी-कभी खण्ड योग भी करते थे। खण्ड योग में वे अपने हाथ, पैर आदि को धड़ से अलग कर देते थे।

१८८६ में मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन बाबा को दमा से अधिक पीड़ा हुई, तो उन्होंने इस व्याधि से छुटकारा पाने के लिए अपने प्राण ब्रह्माण्ड में चढ़ा कर समाधि लगाने का विचार किया और भगत म्हालसापति से कहा कि “तुम मेरे शरीर की तीन दिन तक रक्षा करना और यदि मैं वापस लौट आया तो ठीक है, नहीं तो उस स्थान (एक स्थान की ओर इंगित करते हुए) पर मेरी समाधि बना देना।” ऐसा कह कर बाबा रात्रि में लगभग १० बजे

पृथ्वी पर लेट गये और उनका श्वास बंद हो गया तथा ऐसा दिखाई देने लगा कि जैसे उनके शरीर में प्राण ही न हों। सभी लोग वहाँ एकत्रित हुए और शरीर परीक्षण के बाद शरीर को बाबा द्वारा बताये हुए स्थान पर समाधिस्थ कर देने का निश्चय करने लगे।

परन्तु, भगत म्हालसापति ने उन्हें ऐसा करने से रोका और उनके शरीर को अपनी गोद में रख कर वे तीन दिन तक उसकी रक्षा करते रहे। तीन दिन व्यतीत होने पर रात्रि को लगभग ३ बजे प्राण लौटने के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे और बाबा का श्वास पुनः प्रारम्भ हो गया तथा शरीर भी हिलने-डुलने लगा। उन्होंने नेत्र खोल दिये और करवट लेते हुए पुनः चेतनावस्था में आ गये।

द्वारकामाई एक जीर्ण-शीर्ण मस्जिद थी। एक बार जब बाबा अपने भक्तों के साथ मस्जिद में खाना खा रहे थे, तब कुछ टूटने की आवाज़ आई, तो उन्होंने अपना हाथ ऊपर उठा कर कहा - “सब्र, सब्र!” बाबा द्वारा केवल दो शब्द कहने से ही वह शोर रुक गया तथा सभी भक्त पुनः अपना खाना खाने लगे। लेकिन, जैसे ही वे खाना खाकर बाहर आये, तो छत का एक बड़ा हिस्सा टूट कर नीचे आ गिरा।

एक बार दासगणु महाराज ने गंगा-यमुना-सरस्वती के पावन तट पर जाकर स्नान करने का निश्चय किया। जब वे बाबा से प्रयाग जाने हेतु आज्ञा लेने पहुँचे, तो बाबा ने कहा - “इतनी दूर व्यर्थ भटकने की क्या आवश्यकता है? अपना प्रयाग तो यहीं है। मुझ पर विश्वास करो!” जैसे ही दासगणु बाबा के चरणों की ओर झुके, तो बाबा के श्री-चरणों से गंगा-यमुना-सरस्वती की धारा वेग गति से प्रवाहित होने लगी।

एक बार शिर्डी के दुकानदारों ने संगठित होकर निश्चय किया कि आज कोई भी उन्हें तेल की भिक्षा नहीं देगा। जब बाबा रोज़ की भाँति दुकानदारों के पास तेल माँगने के लिए पहुँचे, तो प्रत्येक दुकानदार ने उनको तेल देने से मना कर दिया। बाबा बिना तेल लिए ही मस्जिद में आ गये। उन्होंने सूखी बत्तियाँ दीपों में डाल दीं और टमरेल (टीन का बर्तन), जिसमें नाम मात्र का तेल था, में पानी मिला कर पी गये तथा तेल मिश्रित पानी को पुनः टीनपाट में उगल दिया और उस पानी को दीपों में डाल कर दीप प्रज्वलित कर दिये।

एक बार शामा को विषधर साँप ने उसके हाथ की





उँगली में डस लिया। जब वह बाबा के श्री-चरणों में पहुँचा, तो बाबा ने कहा - “अरे, ओ नादान कृतघ्न बम्मन, ऊपर मत चढ़! सावधान, यदि ऐसा किया तो हट, दूर हट, नीचे उतर!” बाबा के ये आदेश सर्पदंश के लिए थे, जिनसे शामा का सर्पदंश दूर हो गया। आज भी ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जिनमें दवाओं ने कोई प्रभाव नहीं दिखाया, मगर बाबा की उदी एवं उनकी पूजा-अर्चना से भक्तों को पूर्व की भाँति स्वास्थ्य, समृद्धि, चिन्ता से मुक्ति व अनेक सांसारिक लाभ पहुँच रहे हैं।

श्रीमद् भगवद् गीता के चौथे अध्याय के ७-८ श्लोक में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि “जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ। धर्म की स्थापना, दुष्टों का विनाश तथा साधु जनों के परित्राण के लिए मैं युग-युग में जन्म लेता हूँ।” साधु एवं सन्त भगवान् के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। वे उपयुक्त समय पर प्रकट होकर अपनी कार्यप्रणाली के माध्यम से अपना अवतार कार्य पूर्ण कर देह त्यागते हैं?

विश्व में भगवान्, सन्त, गुरु तो अनेक हैं, लेकिन श्री साईं बाबा जैसे भगवान्, महान सन्त, सद्गुरु आज तक नहीं हुए हैं। वे दत्तात्रेय अवतार हैं और उनमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहित सभी देवी-देवताओं का पूर्ण वास है। वे ज्ञानावतार होकर भी सदैव अज्ञानता का प्रदर्शन करते थे। उनकी विशिष्टता थी कि वे दुनिया में अपने लिए एक पहचान बनाने व आदर-सत्कार पाने की कोशिश करने में रुचि नहीं रखते थे। उन्होंने कलियुग की त्रुटियों को दूर करने के लिए अवतार लिया। वे किसी एक धर्म से जुड़े लोगों के नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के हैं। उन्होंने सभी धर्मों के लोगों को अपनी गाथाओं के माध्यम से सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। वे किसी ढोंग व आडम्बर में विश्वास नहीं करते थे।

वस्तुतः सन्त मानव के कल्याण व विश्व के उद्धार हेतु अवतरित होते हैं तथा जब वे शरीर धारण करते हैं और जनसम्पर्क में आते हैं, तो इसी तरह का आचरण करते हैं। वे बाह्य रूप से दूसरे लोगों के समान ही दैनिक क्रियाकलाप करते हैं। लेकिन, वे आन्तरिक रूप से अपने अवतार कार्य और उसके ध्येय के लिए सदैव सचेत रहते हैं। अर्थात्, वे एक निश्चित ध्येय लेकर इस संसार में अवतरित होकर स्वयं ही देह धारण करते हैं और जब ध्येय पूरा हो जाता है, तब जिस सरलता और आकस्मिकता के

साथ वे अवतरित होते हैं, उसी प्रकार लुप्त भी हो जाते हैं। बाबा का अपने भक्तों के साथ जन्म-जन्मान्तर का सम्पर्क है। इसीलिए, उन्होंने अपने भक्तों के लिए धरती पर अवतार लिया।

श्री साईं बाबा के बारे में आज तक कोई भी यह नहीं जान सका कि उन्होंने किस देश, धार्मिक परिवार, जाति व कुल में जन्म लिया? श्री साईं बाबा वास्तव में कौन थे, कहाँ तथा किस जाति में उनका जन्म हुआ, उनके माता-पिता ब्राह्मण थे या मुस्लिम, उनकी शिक्षा कहाँ हुई और उनके गुरु कौन थे, इससे सम्बंधित जानकारी किसी को भी नहीं है तथा न ही इसका कोई अधिप्रमाणित प्रमाण उपलब्ध है।

श्री साईं बाबा ने ६० वर्ष मस्जिद में बिताये। वे ईद के दिन मुसलमानों को मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए आमंत्रित करते थे तथा जब भोजन तैयार हो जाता, तब मस्जिद में बर्तन मँगवा कर मौलवी से फातिहा (कुरआन की पहली सूरा) पढ़ने को भी कहते थे। इसके अलावा दोपहर के नैवेद्य के पश्चात् यदि कोई प्रसाद लेकर आता और अगर वहाँ बड़े बाबा (मालेगाँव के एक मुस्लिम फ़कीर पीर मोहम्मद) या कोई अन्य मुस्लिम भाई उपस्थित होते, तो वे पहले उनसे सुरा या कुरान पढ़वाते थे और उसमें स्वयं भी शामिल होते थे।

श्री साईं बाबा मस्जिद के प्रांगण में भट्टी बना कर भक्तों के लिए स्वयं भोजन तैयार करते थे। वे कभी-कभी मांस मिश्रित पुलाव भी बनाते थे। मांसाहारी भक्तों को मांसाहारी भोजन दिया जाता था; लेकिन शाकाहारी भक्तों को इसका स्पर्श तक नहीं होने दिया जाता था। उन्होंने किसी भी भक्त को मांसाहार के लिए कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया और न ही उनकी आन्तरिक इच्छा थी कि किसी को इसके सेवन की आदत पड़ जाये। उन्होंने मुस्लिमों को चन्दनोत्सव मनाने की अनुमति भी दी।

श्री साईं बाबा ने एकादशी के दिन दादा केलकर साहब को कुछ रुपये देकर मांस खरीद कर लाने के लिए कहा। वे बाबा की आज्ञा का अनुपालन करते हुए बाज़ार जाने के लिए तैयार हो गए। लेकिन, तभी बाबा ने उनसे कहा कि तुम न जाओ; किसी अन्य को भेज दो। तब दादा साहेब ने अपने नौकर पाण्डू को मांस खरीदने के लिए भेजा। लेकिन, बाबा ने उसको भी वापिस बुला कर कार्यक्रम स्थगित कर दिया। बाबा ने ऐसे ही एक अन्य



अवसर पर दादा केलकर साहेब से कहा कि देखो तो नमकीन पुलाव कैसा पका है? दादा साहेब ने यों ही कह दिया - अच्छा है। तब बाबा ने उनसे कहा कि तुमने न तो अपनी आँखों से देखा और न ही जिह्वा से स्वाद चखा, फिर यह कैसे कहा कि अच्छा है? फिर बाबा ने दादा साहेब की बाँह पकड़ कर बल पूर्वक बर्तन में डाल कर कहा कि थोड़ा सा इसमें से निकाले और अपना कट्टरपन छोड़ कर चख कर देखो। श्री साईं बाबा कभी-कभी भक्तों की इस तरह की कठिन परीक्षा जरूर ले लिया करते थे। लेकिन, यह कहना कि बाबा अपने भक्तों को मांस के सेवन के लिए बाध्य करते थे, सर्वथा मिथ्या एवं मनगढ़ंत है।

वास्तव में कोई भी सन्त या गुरु कभी भी अपने कर्मकाण्डी शिष्य को वर्जित भोज्य खिलवा कर अपनी अपकीर्ति नहीं चाहेगा। बाबा ने अपने भक्तों को कभी भी ऐसा कार्य नहीं करने दिया, जिसे वे अनुचित समझते थे। उनकी इच्छा दादा साहेब को नमकीन पुलाव खिलाने की नहीं थी। बाबा केवल उनकी परीक्षा ले रहे थे कि वे किस सीमा तक उनके आदेश का अनुपालन करते हैं?

श्री साईं बाबा मस्जिद में सदैव धूनी प्रज्वलित रखते थे और उनके कान हिंदुओं के रिवाज के अनुसार छिदे हुए थे। मस्जिद में चक्की चलाई जाती थी। शंख तथा घण्टानाद की ध्वनि भी सुनाई देती थी। वहाँ पर सदैव भजन हुआ करते थे व अन्य संगीत वाद्य निरंतर बजते थे। उसी मस्जिद में पवित्र अग्नि में चावल अर्पित किये जाते थे और लोगों को अन्नदान कराया जाता था। हिंदू भी बाबा के चरण स्पर्श कर अर्घ्य द्वारा उनका पूजन करते थे तथा कुलीन से कुलीन ब्राह्मण भी अपना अभिमान त्याग कर मस्जिद में उनको साष्टांग प्रणाम करते थे।

श्री साईं बाबा श्री कृष्ण भगवान् के सम्मान में गोकुल अष्टमी का त्यौहार आने पर गोपाल काला उत्सव भी बड़े धूमधाम के साथ मनवाते थे। उन्होंने अपने निकटवर्ती भक्त तात्या पाटिल के माध्यम से भगवान् गणपति, शंकर, पार्वती, शनि, हनुमान जी और ग्राम्य देवता इत्यादि मंदिरों को ठीक कराते हुए शिर्डी के प्रायः सभी मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया।

बाबा मस्जिद में धूनी, पूजा और अग्निहोत्र करने देते थे। वहाँ वे शंख और घण्टे की ध्वनि सहन करते थे। वहाँ हरि नाम का उच्चारण होता था। वहाँ उनके द्वारा हिंदुओं

के पवित्र धार्मिक ग्रन्थों - गीता, रामायण, वेद-पुराण इत्यादि का उपदेश दिया जाता था। वहाँ वे अपने माथे पर कस्तूरी का वैष्णवी तिलक व चंदन का लेप लगाने देते थे। वहाँ हिंदुओं का पवित्र तुलसी वृन्दावन रखा गया था। वहाँ आरती होती थी। झण्डे फहराये जाते थे। बाबा केसरिया रंग के वस्त्र धारण करते थे।

श्री साईं बाबा ने समाधिस्थ होने से पूर्व श्री वझे, जो ब्राह्मण थे, को हिंदुओं के पवित्र धार्मिक ग्रन्थ रामायण का 'राम विजय' प्रकरण पढ़ने को कहा। शरीर त्यागने के अगले दिन प्रातः श्री लक्ष्मण मामा, जो ब्राह्मण ज्योतिषी थे और प्रतिदिन सुबह बाबा का पूजन किया करते थे, को स्वप्न में आकर पूर्व की भाँति पूजन व काकड़ आरती किये जाने के लिए निर्देश दिया। बाबा ने उसी दिन इसी तरह का स्वप्न श्री दासगणु महाराज को पण्ढरपुर (सोलापुर, महाराष्ट्र) में दिया। उसके अनुसार दासगणु जी ने भी अपने शिष्यों के साथ पण्ढरपुर से तुरन्त शिर्डी पहुँच कर बाबा की समाधि के समक्ष अखण्ड कीर्तन एवं हरिनाम शुरू किया। बाबा ने हिंदुओं की विविध प्रकार की पूजाओं का सहर्ष स्वीकार किया था हिंदुओं के विभिन्न देवी-देवताओं की तनिक भी उपेक्षा सहन न करके स्वयं की जेब से रुपये व्यय करके जीर्ण-शीर्ण मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया।

उपर्युक्त तथ्यों के अलावा बाबा के समय की निम्नांकित कुछेक गाथाओं के सारांश पर भी ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है :-

मेघा कट्टर ब्राह्मण था और भगवान् शिव का परम उपासक था। वह प्रारम्भ में बाबा को मुस्लिम समझता था। लेकिन, बाद में भगवान् शिव का अवतार मान कर उनकी प्रतिदिन पूजा-अर्चना करने लगा। वह शिर्डी में जितने भी मंदिर हैं, पहले वहाँ जाकर पूजन करता था और इसके बाद मस्जिद में बाबा को प्रणाम करने के लिए आता था एवं कुछ देर चरण-सेवा करने के बाद ही चरणामृत ग्रहण करता था। एक बार वह खण्डोबा (भगवान् शिव) मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए गया, तो वहाँ के दरवाज़े बंद देख कर बिना पूजा किये ही मस्जिद में बाबा के पूजन हेतु आ गया। लेकिन, बाबा ने उसकी सेवा स्वीकार नहीं की और उसे पुनः जाकर पूजन करके आने के लिए कहा तथा यह भी बताया कि अब खण्डोबा मंदिर के द्वार खुल गये हैं।





मेघा जब खण्डोबा मंदिर गया, तो उसने वहाँ जाकर देखा कि भगवान् खण्डोबा मंदिर के द्वार वास्तव में खुले हुए हैं। बाबा ने खण्डोबा मंदिर में पूजा करने के बाद ही मेघा को अपना पूजन करने की अनुमति दी। मेघा ने बाबा की नियमित रूप से प्रतिदिन जीवनपर्यन्त आरती की थी। वह बाबा की आरती एक टाँग पर खड़े होकर किया करता था। बाबा भी उसको बहुत अधिक प्रेम करते थे। बाबा ने उसकी मृत्यु की सूचना तीन दिन पूर्व देते हुए कहा था - “यह मेघा की अंतिम आरती है।” बाबा ने अपने स्वयं के खर्चे से उसका मृत्यु भोज ब्राह्मणों को दिये जाने की आज्ञा दी थी।

श्री साईं बाबा ने श्री बापू साहेब जोग को साठे वाड़ा में हिंदुओं के पवित्र ग्रन्थ ज्ञानेश्वरी (श्रीमद् भगवद् गीता का मराठी टीका भाष्य - भगवान् श्री कृष्ण और अर्जुन संवाद) और एकनाथी भागवत का वाचन व उसका अर्थ भक्तों को समझाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। भक्त जब बाबा से कोई प्रश्न पूछते थे, तब वे कभी आंशिक उत्तर देते थे और कभी उन्हें उपर्युक्त भागवत अथवा अन्य प्रमुख ग्रन्थों का श्रवण करने के लिए कह देते थे।

एक सरकारी अधिकारी ने अपने एक डाक्टर मित्र को शिर्डी चलने के लिए कहा, तो उन्होंने कहा कि मेरे ईष्ट श्री राम हैं; इसलिए मैं किसी मुस्लिम के समक्ष मस्तक नहीं नमाऊँगा। लेकिन, सरकारी अधिकारी द्वारा यह परामर्श देने पर कि तुम्हें नमन करने के लिए कोई भी बाध्य नहीं करेगा, तब डाक्टर साहब उनके साथ शिर्डी आये। लेकिन, शिर्डी पहुँचने पर डाक्टर साहब को बाबा के दर्शन के लिए सबसे आगे चलते देख कर और उन्हें ही बाबा की सर्वप्रथम चरण-वंदना करते देख कर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। लोगों ने डाक्टर से अपना निश्चय बदलने और इस तरह एक मुस्लिम को दण्डवत् प्रणाम करने के बारे में पूछा, तो डाक्टर साहब ने बताया कि बाबा के स्थान पर उन्हें अपने प्रिय ईष्ट देव श्री राम के दर्शन हुए; इसलिए उन्होंने बाबा को नमस्कार किया।

श्री साईं बाबा के पास श्री वामन नार्वेकर नामक भक्त एक ऐसा सिक्का लेकर आये, जिसके एक तरफ़ राम, लक्ष्मण, सीता और दूसरी तरफ़ करबद्ध मुद्रा में हनुमान जी का चित्र अंकित था। बाबा ने इस सिक्के को शामा को देते हुए कहा, “शामा, तुम इस सिक्के को अपने भण्डार में जमा करके अपने देवालय में प्रतिष्ठित कर इसका नित्य

पूजन करो!” वे सभा मण्डप में पालना बँधवा कर कथा-कीर्तन और राम-कीर्तन भी करवाते थे।

श्री तात्या साहेब नूलकर पण्ढरपुर के उप न्यायाधीश थे। वह सन्तों पर विश्वास नहीं करते थे। वह बाबा की कीर्ति सुन कर ब्राह्मण रसोईया मिलने के बाद ही शिर्डी गये। शिर्डी पहुँचने पर उनकी बाबा में सच्ची निष्ठा हो गई तथा वे बाबा को ईश्वर का अवतार मानने लगे। वे बाबा से प्रभावित होकर जीवनपर्यन्त शिर्डी में ही रहे। बाबा ने उनका अन्तकाल निकट आने पर पवित्र धार्मिक पाठ सुनाये जाने की अनुमति दी थी। बाबा ने विजयानंद नाम के एक दक्षिण भारतीय संन्यासी का अंतिम समय निकट देख कर उन्हें भी ‘भागवत’ और ‘राम विजय’ पढ़ने की आज्ञा दी।

श्री साईं बाबा हिंदू शास्त्रों, पुराणों, वेदों में पूर्ण पारंगत थे तथा वेदों में ऐसा कुछ भी नहीं था, जो उनसे छिपा हो। वे हिंदुओं के धार्मिक मनोभाव के अनुसार उनसे मिलते थे, बातचीत करते थे और धार्मिक ग्रन्थों के पारायण सुनाया करते थे। उनका पहनावा मुस्लिम पेहराव जैसा था, चेहरे पर दाढ़ी-मूँछ की बनावट मुस्लिमों की तरह थी और अंदाज भी सुफियाना सा था। इस तरह आकृति से वे मुस्लिम की तरह प्रतीत होते थे। वे मुस्लिमों के साथ बैठ कर कुरान सुनते थे और उनके साथ नमाज़ भी अदा करते थे। वे मस्जिद में रहते थे। इसलिए लोग उन्हें मुस्लिम समझते थे। वे ‘हिंदू हैं या मुस्लिम’ इस प्रश्न पर एक बार इतने अधिक दुःखी हुए कि उन्होंने अपने शरीर से सभी वस्त्र उतार कर फेंक दिये तथा लोगों से प्रश्न भी किया कि कोई बताये कि उनका धर्म क्या है? लेकिन, यह वास्तविकता है कि उनकी अपनी जाति तो क्या, अपना कोई नाम तक भी नहीं था।

श्री साईं बाबा लगभग वर्ष १८५८ में चाँद पाटिल की पत्नी के भतीजे की बारात के साथ तरुण फ़क़ीर के रूप में शिर्डी आये, तो भगवान् खण्डोबा मंदिर के पुजारी पंडित म्हालसापति ने उन्हें बैलगाड़ी से बारातियों के साथ उतरते समय उनके तेजस्वी स्वरूप को देख कर उनका “आओ साईं” कह कर सम्बोधन करते हुए अभिनंदन किया था और इसके पश्चात् ही वे ‘साईं’ नाम से प्रसिद्ध हुए। जब उनका अपना कोई नाम अथवा जाति ही नहीं थी, तब उनको हिंदू या मुस्लिम कैसे घोषित किया जा सकता है? उन्होंने रामनवमी पर्व, जो हिंदुओं का एक



प्रमुख त्यौहार है, को न केवल स्वयं मनवाया, बल्कि रामनवमी के दिन ही मुस्लिमों के उर्स को भी एक साथ आयोजित करवाने की अनुमति देकर हिंदुओं एवं मुस्लिमों में आपसी भेदभाव को दूर करके एकता, भाईचारे और प्रेम को बढ़ावा दिया।

हमारा देश ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व अध्यात्म से जुड़ा हुआ है। यदि ऐसा न होता, तो पैगम्बर मोहम्मद साहब, प्रभु ईसा मसीह, गुरु नानक देव, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर इत्यादि न होते। इन सभी सन्त-महात्माओं ने संसार को प्रकाश दिखाया तथा लोगों में एक अटूट विश्वास पैदा किया। लेकिन, आज कुछ लोग इसी विश्वास के नाम पर लोगों को गुमराह कर रहे हैं और समाज में धर्म व शांति का संदेश देने के बजाय हिंसा और विद्वेष का कारण बन रहे हैं। इस सच्चाई को कोई नकार नहीं सकता कि देश के कथित कुकर्मी सन्त-महात्माओं की वजह से ही हमारे देश की प्राचीन और महान सन्त परम्परा को गहरा धक्का पहुँच रहा है।

भागवत में बताया है कि कोई धर्म विशेष नहीं, बल्कि जो मनुष्य को उसकी भक्ति व भगवत्प्रेम में अग्रसर होने में मदद करे, वही सर्वोत्तम धर्म है तथा यही उच्च कोटि के धर्म की परिभाषा है। धर्म का उद्देश्य ईश्वर को समझना, उससे प्रेम करना व प्रेम सीखना है। विद्वानों का भी धर्म के बारे में मत है कि वास्तव में धर्म का न तो कोई नाम है और न ही कोई रूप! मनुष्य के व्यक्तित्व के आधार पर ही उसे धार्मिक या अधार्मिक कहा जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति धर्म के नाम पर अधर्म का आचरण करता है, तो उसे धार्मिक नहीं कहा जा सकता।

श्री साईं बाबा की अनुपस्थिति में एक भक्त ने दूसरे लोगों के सम्मुख किसी को अपशब्द कहे व अपने भाई के गुणों की उपेक्षा करके दोषारोपण में ऐसे कटु वाक्यों का प्रयोग किया, जिससे सुनने वालों को भी उसके प्रति घृणा होने लगी। उस व्यक्ति की दोपहर में लेण्डी के निकट बाबा से भेंट हुई, तो बाबा ने विष्ठा खा रहे एक सुअर की ओर उँगली उठा कर कहा, “देखो, वह कितने प्रेम से विष्ठा खा रहा है। तुम जी भर कर अपने भाईयों को सदा अपशब्द कहा करते हो और यह तुम्हारा आचरण भी ठीक उसी के सदृश ही है।”

श्री साईं बाबा ने अपने जीवनकाल में कभी भी किसी से यह नहीं कहा कि मैं ईश्वर हूँ या शरीर त्यागने

के बाद मेरी प्रतिमा मंदिरों में स्थापित की जाए। भक्तों ने स्वयं उनको ईश्वर स्वीकार किया है और इसी परिदृश्य में संस्थापकों द्वारा मंदिरों में उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठापित की गयी है।

श्रद्धालु भगवान् को किस रूप में स्वीकार करता है, यह उसका अपना स्वयं का अधिकार है। श्रद्धालु किसकी पूजा-अर्चना करें, इसके लिए उसको कोई भी बाध्य नहीं कर सकता। जिन किन्हीं श्रद्धेय देव (भगवान्) की पूजा-अर्चना करते हैं, उनकी हमें अनुभूति और दुःख-दर्द में एक सहारा मिलता है। बाबा की आराधना करने से हमें इन अनुभवों का फल प्राप्त होता है। इसीलिए तो साईं बाबा अपने भक्तों के लिए भगवान् हैं। क्या किसी ने भगवान् को अपनी आँखों से देखा है कि भगवान् का स्वरूप किस प्रकार का होना चाहिए? इस्लाम में भूमि पर रेंगने वाली चींटी की भी अकारण हत्या करने को पाप बताया गया है। यदि कोई बच्चा भी किसी पशु-पक्षी को परेशान करता है या उसे दुःख पहुँचाता है, तो वह ईश्वर से क्षमा माँगे और दूसरे बच्चों को भी ऐसा करने से रोके। सभी धर्म समाज में आपसी विद्वेष उत्पन्न करने की इजाज़त नहीं देते। बाबा ने भी अपने मनुष्य अवतार में यही तो कार्य किया।

यदि किसी को श्री साईं बाबा के बारे में तनिक भी संदेह है, वह सच्ची निष्ठा एवं श्रद्धा-सबूरी के साथ उनकी पूजा-अर्चना करें, तो उसे स्वतः अनुभूति होगी कि वास्तव में श्री साईं बाबा भगवान् हैं या नहीं? या फिर, वह विश्व प्रसिद्ध पावन तीर्थ स्थली शिर्डी जाकर श्री समाधि मंदिर में बाबा के एक बार दर्शन कर लें, तो उसके सभी संदेह बाबा वहीं पर ही दूर कर देंगे और वह उनका ही होकर रह जायेगा। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ऐसा बाबा के जीवनकाल में भी हुआ है और आज भी ऐसे, जिनमें यह दास भी शामिल है, अनगिनत उदाहरण हैं, जिन्हें उनके प्रति तनिक भी संशय रहे हैं, उनको बाबा ने दूर करके अपने चरणों की शीतल छाया में स्थान दिया है। यही वजह है कि आज बाबा के श्री-चरणों में अथाह श्रद्धालु पहुँच रहे हैं।

श्री साईं बाबा के जीवनकाल में मिथ्या गुरु जौहर अली, नानावली और उन्हें भिक्षा में तेल न देने वाले दुकानदारों सहित ऐसे अनेकों उदाहरण मौजूद हैं, जिन्होंने बाबा का निरादर किया, लेकिन बाबा के गुणों एवं सत्कृत्यों से वे सभी बाबा के चरणों के दास बन गये।





श्री साई बाबा का सम्पूर्ण जीवन फ़क़ीरी में बीता और उन्होंने कभी भी मन में धार्मिक निष्ठा प्रदर्शित करने का विचार नहीं किया। वे सांसारिक भोग-विलास की वस्तुओं से सदैव घृणा करते थे। वे फटे-पुराने कपड़े पहनते थे और बिस्तर भी फटे-पुराने कपड़ों का ही लगाते थे और तकिये व आसन के रूप में एक ईंट को उपयोग में लाते थे। वे अपने पास केवल एक कफ़नी, लूंगी, चिलम, चिमटा और टीन का एक पुराना लोटा रखते थे। क्या बाबा के बारे में गलत प्रचार करने वालों के कृत्य और रहन-सहन के स्तर उनके तदनु रूप हैं?

श्री बी. वी. देव, श्री साई बाबा के परम भक्त और एक सरकारी अधिकारी थे। उन्होंने अपनी माता जी के व्रत के पश्चात् उद्घापन कार्यक्रम में शामिल होने हेतु बाबा को पत्र के माध्यम से निमंत्रण भेजा, तो बाबा ने कहा कि - “जो मेरा स्मरण करता है, उसका मुझे सदैव स्मरण रहता है। मुझे यात्रा के लिए कोई भी साधन - गाड़ी, तांगा या विमान की आवश्यकता नहीं है। मुझे तो जो प्रेम से पुकारता है, उसके सम्मुख मैं अविलम्ब प्रकट हो जाता हूँ।” बाबा ने पत्र के माध्यम से श्री देव को सूचना भिजवाई कि - “वे दो व्यक्तियों के साथ अवश्य आयेंगे।”

लेकिन, उद्घापन कार्यक्रम के पश्चात् श्री बी. वी. देव ने बाबा पर उपस्थित न होने का आक्षेप लगाया, तो बाबा ने उद्घापन कार्यक्रम में उपस्थित होने का उन्हें प्रमाण देते हुए पत्र भिजवाया कि - “मैं अपना वचन पूर्ण करने के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर दूँगा। मेरे शब्द कभी भी असत्य नहीं निकलेंगे।”

श्री देव ने बाबा के उपस्थित होने के प्रमाण का आदर करते हुए स्वयं पर न केवल पश्चात्ताप किया, बल्कि उनकी आँखों से प्रसन्नता की अश्रुधाराएँ भी प्रवाहित हुईं। इस तरह की बाबा की अनगिनत गाथाएँ हैं। श्री देव वर्ष १९४४ तक जीवित थे। इस कथन एवं उनकी अन्य गाथाओं की पुष्टि, श्री साई बाबा की दिव्य लीलाओं को नकारने वाले, समकालीन पीढ़ी के पारिवारिक सदस्यों से करके अपने सभी संदेहों का सहजता से निवारण कर सकते हैं कि क्या वे एक साधारण फ़क़ीर थे?

यदि मन में द्वैत भाव है, तो दो अलग अलग शरीर धारण किये हुए जीव अलग-अलग दिखाई देते हैं; लेकिन जब मनुष्य के मन में अद्वैत भाव अर्थात् समभाव

आ जाता है, तब ईश्वर को सर्वव्यापक जान लेने पर दोनों ही एक समान दिखाई देते हैं।

ऐसे व्यक्ति जो दूसरों के हृदयों को चोट पहुँचाने वाली, उनके विश्वासों को छलनी करने वाली बातें करते हैं और दूसरों की बुराई कर प्रसन्न हो जाते हैं, वे अपनी बड़ी-बड़ी बातों के बुने जाल में फँस कर अपनी बुराइयों के बोझ तले ऐसे मर जाते हैं, जैसे रेत के टीले को अपनी बाँबी समझ कर साँप घुस जाता है और दम घुटने से उसकी मौत हो जाती है।

ऐसा कहते हैं कि ईश्वर में छः गुण यथा - कीर्ति, श्री, वैराग्य, ज्ञान, ऐश्वर्य और उदारता होते हैं। बाबा में ये सभी गुण विद्यमान थे। उन्होंने भक्तों की इच्छा पूर्ति के लिए ही सगुण अवतार धारण किया। बाबा का कहना है - “मेरे भक्तों के घर अन्न तथा वस्त्रों का कभी अभाव नहीं होगा। यह मेरा वैशिष्ट्य है कि जो भक्त मेरी शरण आ जाते हैं और अन्तःकरण से मेरे उपासक हैं, उनके कल्याणार्थ मैं सदैव चिंतित रहता हूँ।” भगवान् श्री कृष्ण ने भी गीता में यही (“**सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज। अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।**” - १८/६६) उपदेश दिया है।

श्री साई बाबा की एक सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि जो भक्त उनकी भक्ति करते हैं, उन्हें अपना धर्म छोड़ने की कतई भी आवश्यकता नहीं है। वे अपने धर्म में ही बने रहते हैं और इसीलिए श्री साई बाबा पूरे विश्व में एक ऐसे ईश्वरी अवतार हैं, जिनके भक्त सभी धर्मों में देखने को मिलते हैं एवं इसीलिए श्री साई बाबा किसी एक धर्म विशेष के न होकर सभी धर्मों के हैं, जो एक गौरव की बात है। उनकी उक्ति - कृति से दी गई शिक्षा विभिन्न धर्म के समाज में एकता की भावना स्थापित करने वाली है।

वस्तुतः श्री साई बाबा को नमन कर अनन्य भाव से, जो भी उनकी शरण में जाता है, उसे फिर अन्य कोई साधना करने की आवश्यकता नहीं है। बाबा का नाम सुमिरन करने से भक्त को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष उसे सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। अश्वमेघ यज्ञ, प्रयाग तीर्थ स्नान, चारों धामों की यात्रा, तुलादान (अपने वजन के बराबर सोना दान करना), गुप्त दान की तुलना यदि सद्गुरु के नाम जाप से करें, तो इन सभी में सद्गुरु का

(पृष्ठ २८ पर)



## ...साईं का अमूल्य दृष्टान्त...

**आ**त्मा का सच्चा ज्ञान जान लेना परम आवश्यक है और इसके लिए ध्यान बहुत जरूरी है। ध्यान की अवस्था में जीव, आत्मा में निमग्न हो जाता है, जिससे जिज्ञासा की शांति हो जाती है। अपने चित्त को ज्ञानेंद्रियों के लक्ष्यों से हटा कर, अलग कर, सर्व शक्तिमान परमेश्वर पर केंद्रित करो, तभी ध्यान योग सफल होगा और वांछित उद्देश की प्राप्ति होगी।

मेरे निराकार स्वरूप का ध्यान करो, जो कि - सत्-चित्त-आनंद है। सच्चिदानंद। यदि ऐसा नहीं कर पा रहे हो, तो मेरी साकार कल्पना करो, अर्थात् मेरी प्रतिमा, चित्र, छबि, या ऐसे ही किसी साकार स्वरूप का। मेरे सिर से पैर तक के सर्वांग स्वरूप को अपने मानस पटल पर लाकर दिन-रात देखो। इस स्वरूप को मन की आँखों से अनवरत देखा करो। उसको बारम्बार मन में उतारते रहो।

जब इस तरह से मुझ पर चित्त को केंद्रित करोगे, तब तुम्हारे चित्त के सारे क्रिया-कलाप एकीकृत हो जायेंगे और ध्यानी, ध्यान की क्रिया एवं ध्याता के बीच की सभी दूरियाँ या अंतर अदृश्य हो जायेंगे। सभी एकाकार हो जायेगा। जब ये तीनों अदृश्य हो जायेंगे, तो वह जो ध्यान कर रहा है, सर्वोच्च उर्जा या परम सत्ता या परमात्मा तक पहुँच जायेगा। यही तो ध्यान का लक्ष्य है। इस प्रकार आत्मकेंद्रित होकर प्राणी परम सत्ता परमेश्वर को आत्मसात कर सकता है। उनसे वह अभिन्नता प्राप्त कर सकता है। इसे ही आत्मसाक्षात्कार कहते हैं।

‘ध्यान’, ‘ज्ञान’ से अधिक महत्वपूर्ण है। पर, ध्यान के लिए सही ज्ञान होना जरूरी है। जब तक ‘ब्रह्म’ को नहीं समझा जायेगा, सही ध्यान नहीं मिलेगा। सच्चे ज्ञान के लिए ध्यान मूलतः जरूरी है। इस क्रिया को ‘प्रत्यज्ञ आत्म अनुष्ठान’ कहते हैं, अर्थात् ‘आत्मा’ को जानना। ‘प्रत्यक्ष आत्मा’ स्वयं ही ईश्वर है। ईश्वर ही गुरु है। इनमें, इन तीनों में जरा सी भी भिन्नता नहीं है। यदि कोई इनमें भिन्नता देखने का प्रयास करे, तो वह पूर्णतया वंचित रह जायेगा। कुछ नहीं दिखेगा।

जब गहरे दृढ़ संकल्प से चिन्तन करते हुए ‘ध्यानी’ और ‘ध्याता’ का अंतर अदृश्य हो जाता है, तब चित्त एक ऐसा दीपक बन जाता है, जोकि एकाग्रता पूर्वक जलता रहता है। अद्भुत शक्ति छा जाती है। सब नीरव

हो जाता है। यही ही ‘समाधि’ है।

पूर्णतया इच्छाविहीन होकर यह विश्वास किया जा सकता है कि ‘वह’ सभी में विद्यमान है। जब एकात्मकता की अवस्था प्राप्त हो जाती है, तब भय नहीं रह जाता और ‘उस’ पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है; क्योंकि ‘वह’ तब ध्यान में आता है, मिलता है।

तदुपरान्त वे बंधन - जोकि कर्मों की अज्ञानतावश बन जाते हैं, शीघ्र टूट जाते हैं। इस सांसारिक जीवन की पाबंदियाँ भी हट जाती हैं और ‘सत्-चित्त-आनंद’ प्राप्त होता है। सच्चिदानंद।

प्रारम्भ से ही समझ लेना चाहिए कि आत्मा है या नहीं है; क्या वह अलग और स्वतंत्र अस्तित्व वाली वस्तु है। आत्मा की सही जानकारी यह है कि वह ज्ञान का आदर्शतम उदाहरण है। वह स्वयं ही मुक्ति है और शाश्वत, चिरंतन आनंद है। आत्मा - परमात्मा का अंश ही है।

व्यर्थ में किसी से उपदेश प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। श्री सद्गुरु साईं को निज विचारों व कर्मों का मुख्य ध्येय बना लेना चाहिए, तभी निस्संदेह परमार्थ की प्राप्ति हो जायेगी। साईं की ओर अनन्य भाव से देखो, तो वे भी हमारी ओर वैसे ही देखेंगे। उनको पा लेने के हेतु किन्ही साधनाओं या शास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता नहीं; अपितु केवल निज गुरु में अखण्ड विश्वास ही पर्याप्त है। सम्पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि वे ही कर्ता है और वह भक्त धन्य है जो कि सद्गुरु साईं नाथ की अद्भुत महानता से चिर-परिचित हो और उनको हरि (विष्णु), हर (महेश) और ब्रह्म (ब्रह्मा) समझता है।

(श्री साईं सत् चरित के १९वें अध्याय से प्रेरित)

## साईं अवतार और भक्त

परम पिता परमेश्वर, जोकि समस्त सृष्टि के रचयिता हैं, ने मनुष्य को त्रिगुणमय बनाया, अर्थात् उसमें सत्व-रज-तम गुणों का समावेश किया। परन्तु, माया के प्रभाव से मनुष्य को लगने लगता है कि वह एक देह है, शरीर है। वह प्रभु के द्वारा प्रदत्त सत्-चित्त-आनंद, अर्थात् सच्चिदानंद - स्वरूप को भूल जाता है और शरीर पाकर वह ऐसी धारणा बना लेता है कि वही कर्ता है और





उपभोग करने वाला है। इसी सोच की वजह से वह अपने आपको अनेकानेक मुसीबतों और दुखों में उलझा लेता है। उसको बच निकलने का मार्ग सुझाई नहीं देता है। मुक्ति का एक ही रास्ता है - गुरु के पावन चरणों में अटूट, निर्मल प्रेम व पूर्ण श्रद्धा - विश्वास। यही प्रभु-चरणों में आसक्ति और भक्ति उसको मुक्ति मार्ग पर ले जायेगी।

श्री साईं प्रतिभाशाली अभिनेता है - महान कलाकार - रंगरेज, जोकि अपने भक्तों को असीम आनंद पहुँचा कर, उनको निज स्वरूप में परिवर्तित कर लेते हैं - अपने रंग में रंग देते हैं।

हम सब उनके समस्त भक्त उपरोक्त गुणों के कारण उनको, श्री साईं बाबा को ईश्वर का ही अवतार मानते हैं। पर, श्री साईं सदैव कहा करते, “मैं तो प्रभु (अल्लाह) के चरणों का एक दास (गुलाम) हूँ।” अवतार होते हुए भी वह एक सामान्य मनुष्य के भाँति संसार में रहते थे। मनुष्य को कैसे आचरण करने चाहिए, और अपने वर्ण-जाति के कर्तव्यों को किस प्रकार से निभाना चाहिए - इसका उदाहरण संसार के समक्ष रखा। उन्होंने अपनी तुलना अन्य किसी से नहीं की और न ही दूसरों को ऐसा करने दिया। जो पूरे विश्व को प्रभुमय मानता हो, सभी में - जड़ और चेतन में अथवा चराचर को प्रभु स्वरूप मानता हो, उसको विनयशीलता रूपी आभूषण सम्पन्न माना जायेगा। उन्होंने किसी का अनादर, उपेक्षा कभी भी नहीं की। वे सभी में ‘हरिदर्शन’ करते थे। वे सभी में विशुद्ध चैतन्यता देखा करते थे।

श्री साईं ने कभी भी नहीं कहा कि वे ईश्वर हैं - “मैं अनल हक (सोऽहम) हूँ।” वे सदा यही कहते थे कि - “मैं तो यादे हक (दासोऽहम) हूँ।” साईं हमेशा जपा करते थे - “अल्लाह मालिक”। उनके होठों से निकलता था, “अल्लाह मालिक”, “मालिक भला करे”, और “सबका मालिक एक”।

हम संसारवासी अन्य साधु-सन्तों को जानते नहीं हैं और न ही हमें पता है कि उनकी दिनचर्या क्या है, वे किस प्रकार का आचरण-व्यवहार किया करते हैं। प्रभु की कृपा से हमें मात्र इतना ही पता है कि वे अज्ञानी और बद्ध जीवों का कल्याण करने के लिए जग में स्वयं अवतीर्ण हुआ करते हैं। निज शुभ कर्मों के परिणाम स्वरूप ही हममें सन्तों की कथाएँ और लीलाएँ श्रवण करने की प्रेरणा मिलती है, अन्यथा नहीं। श्री साईं बाबा करुणा के

अवतार, दया के सागर, हरि स्वरूप प्रभु हैं। हमको उनके बताये हुए मार्ग पर सदा ही चलना चाहिए - ईश्वर स्वरूप श्री साईं का अनुसरण करना चाहिए, उनका नाम-स्मरण और गुणगान नियमित रूप से करना चाहिए। ऐसा करते रहने से ही हमें आत्मसाक्षात्कार हो सकेगा। प्रभु से मिलना हो सकेगा। हमें चाहिए कि निज अहंकार को गुरु के चरणों में अर्पित कर दें, अर्थात् निराभिमानी होकर गुरु की पादसेवा करें, तभी सत्य स्वरूप की प्राप्ति हो सकेगी। श्री साईं बाबा की लीलाओं-कथाओं का श्रवण-मनन करने से ही भक्तों को जीवन का लक्ष्य तथा सत्य स्वरूप से आत्मसाक्षात्कार की प्राप्ति सहज रूप से हो जायेगी - जीवन सफल हो जायेगा। सद्गति पा लेंगे।

## दासगणु का शंका समाधान

सद्गुरु श्री साईं नाथ भगवान् के अलौकिक गुणों का बखान करने वाले, उनकी अपार महिमा को अपने छन्दों में ढाल कर सुमधुर वाणी से कीर्तन-गायन करने वाले श्री दासगणु महाराज ने सन्त-प्रशस्ति में कतिपय ग्रन्थों का लेखन कार्य किया, जिनमें प्रमुख हैं : भक्तलीलामृत और सन्तकथामृत। इनमें आधुनिक सन्तों का चरित्र-चित्रण दिया गया है। इन दोनों ग्रन्थों में श्री साईं बाबा की अद्भुत जीवनी एवं अमूल्य सद्गुणों का वर्णन अत्यन्त रोचक व प्रभावशाली ढंग से किया गया है। भक्तलीलामृत के ३१, ३२ व ३३वें अध्यायों में तथा संतकथामृत के ५७वें अध्याय में श्री साईं बाबा का चरित्र-वर्णन सुंदर रूप से संकलित है। इन दो ग्रन्थों के अतिरिक्त भी श्री दासगणु जी ने अनगिनत कविताओं, गीतों एवं भजनों को लिखा और महाराष्ट्र में जनसमूहों तक निज कीर्तन-गायन के माध्यम से पहुँचाया। श्री साईं नाथ की कीर्ति-महिमा चारों ओर फैलती गयी। जिसके परिणाम स्वरूप शिर्डी में साईं भक्तों के आने का जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ, वह अद्भुत और अनोखा है। उसी दौरान श्री दासगणु जी ने ‘ईशावास्य भावार्थ बोधिनी’ की रचना की। यह ईशोपनिषद पर टीका-व्याख्या है। ईशोपनिषद एक लघु उपनिषद होते हुए भी, उसमें अनेक विषयों का समायोजन है, जोकि असाधारण अन्तर्दृष्टि देता है। ईशोपनिषद में एक आदर्श सन्त की जीवनी, जोकि सांसारिक आकर्षणों व कष्टों में अविचलित रहता है, आत्म तत्व का वर्णन, कर्मयोग के सिद्धान्तों की व्याख्या, ज्ञान और कर्तव्य के पोषक तत्वों का विस्तार, आत्मा संबंधी गूढ़ तत्वों का संकलन मात्र



१८ श्लोकों में किया गया है। इस उपनिषद का प्राकृत भाषा में अर्थ-अनुवाद सरल नहीं था। श्री दासगणु जी ने ओवी छंदों में अनुवाद तो किया, पर उसके सार तत्व को ग्रहण न कर सकने के कारण उन्हें स्वयं ही सन्तोष नहीं मिला। तदुपरान्त उन्होंने अनेक विद्वानों से राय-मशविरा और वाद-विवाद भी किया; पर समस्या 'जस की तस' जटिल बनी रही। भावार्थ व टीका सुगम व सरल न बन पाने से दासगणु सहज और सन्तुष्ट न हो सके।

उनके मन में यह विचार आया कि जिस व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार हो चुका हो, वही इस उपनिषद की सही टीका-टिप्पणी कर सकता है। जब कहीं भी उनकी शंका का निदान न हो सका, तो वे सद्गुरु साईं नाथ के समक्ष शिर्डी में प्रस्तुत हुए। बाबा से भेंट कर, उनकी चरण-वंदना के उपरान्त उन्होंने अपनी शंकाओं को साईं के समक्ष रखा और उसका निदान देने की सच्चे हृदय से प्रार्थना की।

एक सन्त की कृपादृष्टि, उसके मुखारविंद से निकले मधुर शब्द और उसका मुस्कराता तेजस्वी चेहरा भक्तों को सौभाग्य प्रदान करता है। सन्तों के दर्शन मात्र से भी पाप धुल जाते हैं; फिर उन लोगों के सौभाग्य का क्या वर्णन किया जाये, जो कि सदैव ही सन्तों के संसर्ग में रहते हों!...

साईं बाबा ने पूछा, "गणु, कहाँ से आ रहे हो? सब ठीक तो है न? क्या तुम प्रसन्न और सन्तुष्ट हो?"

गणु ने उत्तर दिया, "जब आपने मुझ पर कृपा की है और मुझे सुरक्षित रखा है, तब मैं क्यों अप्रसन्न रहूँगा? मैं भलीभाँति खुश हूँ।"

साईं बाबा ने दासगणु की बतायी गई कठिनाईयों पर कहा, "अरे, इसमें क्या मुश्किल है? जब तुम वापस जाओगे, तो विलेपाले के काका साहेब दीक्षित के घर की नौकरानी तुम्हारी समस्त शंकाओं का समाधान कर देगी।"

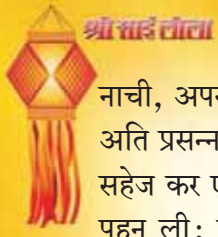
साईं बाबा की बात सुन कर दासगणु चकित रह गये। वहाँ उपस्थित अन्य श्रोताओं को भी अचरज हुआ। एक नौकरानी कैसे शंका का निवारण कर सकेगी? सभी ने सोचा, बाबा मज़ाक कर रहे हैं। परन्तु, बाबा के मुख से निकले मज़ाक के शब्दों को भी दासगणु सत्य मान कर स्वीकार करते थे; क्योंकि बाबा के बोले प्रत्येक शब्द में गूढ़ अर्थ छिपा रहता था।

दासगणु विलेपाले आकर काका साहेब दीक्षित के घर पहुँचे। दूसरे दिन भोर की बेला में दासगणु बिस्तर में ही थे, उनको किसी ग्रामीण बालिका के अति मधुर गायन की आवाज़ सुनायी दी, जिसने उनके दिल को छू लिया। वे मगन होकर ध्यान पूर्वक गाने को सुनते रहे। अब तक वे पूर्णतया जाग चुके थे और गीत के अर्थ को समझ कर भली प्रकार से प्रसन्न हो उठे थे। "यह किसकी पुत्री है, जो इतनी मधुर आवाज़ के साथ इस गम्भीर गीत को गा रही है?"

यह दासगणु जी ने मन में सोचा - 'इसने तो ईश्वर्य की महिमा बखान कर दी। आशा है कि यह वही नौकरानी है, जिसके बारे में साईं बाबा ने बताया था। मैं जाकर देखता हूँ।' जब वे बाहर गये, तो एक ८ वर्ष की ग्रामीण बालिका को बर्तन माँजते हुए काका के घर के पिछले आँगन में पाया। पता चला कि वह काका के नौकर नाम्या की बहन थी। दासगणु को सहज विश्वास हो आया कि वह लड़की साईं बाबा द्वारा बतायी गयी नौकरानी है। उसके गीत ने उनकी शंकाओं का सर्व समाधान कर दिया। बाबा की असीम कृपा से दासगणु को संतुष्टि मिली। साईं बाबा का अपने भक्तों को शिक्षित करने का कितना सरल, सुगम और प्रभावशाली तरीका था यह!

वह आठ वर्षीय बाला फटे कपड़े से तन ढँकने हुए प्रेम पूर्वक मधुर गान करती हुई बर्तन माँज रही थी। उसके गीत में जोगिया रंग की जरीदार साड़ी की सुंदरता का वर्णन था कि वह साड़ी कितनी सुंदर थी, उसकी किनारी और आँचल का काम कितना कामदार व सुसज्जित था, इत्यादि। वह आत्मविभोर हो कर गा रही थी - जोगिया साड़ी के बारे में, यद्यपि उसके अपने तन पर ढँकने के लिए कपड़े के टुकड़े ही थे। उसकी तन्मयता, प्रसन्नता, परन्तु दयनीय स्थिति देखते हुए दासगणु ने आदरणीय मोरेश्वर प्रधान (सुप्रसिद्ध वकील एवं मुम्बई विधान परिषद के सदस्य) से उस बालिका को तन ढँकने के लिए एक साड़ी देने का आग्रह किया। श्री प्रधान दयालु व्यक्ति थे, उन्होंने एक जोड़ा अच्छी सी साड़ी उस लड़की को भेंट स्वरूप दी। इतनी सुंदर भेंट पाकर उस लड़की की खुशी का ठिकाना ही न रहा। उसकी प्रतिक्रिया ऐसी थी कि सूखा सूखा खाना खाकर जीते रहने वाले इन्सान को भाग्य से खूब बढ़िया भोज मिल जाये। अगले दिन उस बालिका ने वह साड़ी पहनी, घूम घूम कर बेहद खुशी से





नाची, अपनी सहेलियों के साथ; क्योंकि वह साड़ी पाकर अति प्रसन्न थी। उसके अगले दिन उसने उस नई साड़ी को सहेज कर एक सन्दूक में रख दिया और पुरानी फटी साड़ी पहन ली; पर वह बिल्कुल भी उदास नहीं लग रही थी। यह देख कर दासगणु को लगा कि वह कितनी सन्तुष्ट थी। इस बात ने उन्हें शिक्षा दी कि प्रसन्नता और अप्रसन्नता मनुष्य के सोचने के ढंग पर निर्भर करती है। उसकी मानसिक स्थिति पर आधारित है। उन्हें महसूस हुआ कि भगवान् ने जो कुछ दिया है उसी में सन्तोष रखना चाहिए। यह निश्चय पूर्वक समझना चाहिए कि प्रभु सब चराचर में व्याप्त हैं और जो भी स्थिति उनकी कृपा से उपलब्ध है, वह उसके लिए निश्चय ही लाभकारी होगी। यह नौकरानी का पूरा प्रसंग प्रभु द्वारा ही प्रेरित था श्री दासगणु को प्रत्यक्ष शिक्षा देने के लिए, उन्हें ईश्वरस्य समझाने के लिए। इस बात से प्रमाणित होता है कि जो कुछ घटित होता है सब हरि की इच्छा से नियंत्रित है; अतएव उसी में सन्तुष्ट रहना हमारे लिए कल्याणकारी है।

ईशोपनिषद के अनुसार समस्त वस्तुएँ ईश्वर से ओत-प्रोत हैं। जो कुछ ईश कृपा से मिले, उसी में आनंद व सन्तोष मानना चाहिए। यह भावना सदा रहे कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और उसने जो कुछ दिया, वही हमारे लिए कल्याणप्रद है। हमारे पास जो कुछ है उसी में सन्तुष्ट रहना चाहिए; क्योंकि यही ईश्वर की इच्छा है।

ईशोपनिषद का अगला उपदेश है कि कर्तव्य को ईश्वर की इच्छा समझ कर जीवन व्यतीत करना चाहिए; खास तौर से उन कर्मों को, जिनकी व्याख्या शास्त्रों में की गई है। उपनिषद कहता है कि प्रमाद अथवा आलस्य से आत्मा का पतन होता है और इस प्रकार निरपेक्ष कर्म करते हुए जीवन बिताने वाला ही अकर्मण्यता के आदर्श को पालेगा। सभी प्राणियों को अपना आत्म स्वरूप समझने वाले व्यक्ति को, जिसके लिए चराचर आत्म स्वरूप हो चुका हो, मोह कैसे उत्पन्न हो सकता है! ऐसे व्यक्ति को दुख का कोई कारण नहीं हो सकता। जो लोग सर्व भूतों में आत्मदर्शन नहीं पाते हैं, उनको विभिन्न प्रकार के शोक, मोह व दुखों की प्राप्ति होती है। जिसके लिए चराचर जगत, आत्म स्वरूप बन चुका हो, वह सदैव सन्तुष्ट रहेगा और कभी भी शोक-ग्रस्त नहीं होगा। उस पर प्रभु की अनुकम्पा जीवन पर्यन्त रहेगी।

(श्री साईं सत् चरित के २०वें अध्याय से प्रेरित)

## साईं से प्रार्थना

जो कुछ भी दर्पण में प्रतिबिंबित होता है वह उसमें स्थित नहीं रहता है। इसी तरह स्वप्न में दिखाई देने वाले काल्पनिक-मानसिक चित्र वैसे तो सच्चे लगते हैं, पर जाग जाने के बाद सब लुप्त हो जाते हैं। यह माया है। संसार में बृहत्-लघु, जड़-चेतन जो भी नज़र आता है, वह सब ब्रह्म स्वरूप है। इनको हम विभिन्न नामों से पुकारते हैं और विभिन्न नज़रों से समझते भी हैं। हम अन्धेरे में पड़े सर्प को रस्सी और एक रस्सी को सर्प मान बैठते हैं। हम समस्त पदार्थों के बाह्य स्वरूप को ही देखते हैं, न कि उनके सच्चे स्वरूप को। उस जगत् का विस्तार तो माया की रचना ही है। वह कृत्रिम है, सच नहीं है। इस माया रूपी आवरण को, एक मात्र सद्गुरु ही हमारी दृष्टि से दूर कर, हमको वस्तुओं के सत्य स्वरूप का वास्तविक ज्ञान-बोध (दर्शन) करा देने में सर्व समर्थ है। अतएव हमें चाहिए कि हम श्री सद्गुरु साईं नाथ महाराज की पूर्ण निष्ठा से पूजा-उपासना कर, सत्य का दर्शन कराने की प्रार्थना करें, जोकि साक्षात् परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। माया से मुक्ति पाने का सबसे सरल तरीका यह है कि पूर्ण श्रद्धा, आस्था, निष्ठा और विश्वास से केवल सद्गुरु श्री साईं नाथ की शरण में जाया जाए; क्योंकि यह छुटकारा केवल सद्गुरु साईं ही दिला सकते हैं, यह उन्हीं के द्वारा ही सम्भव है। सभी में, चल-अचल प्राणियों और भूतों में परमेश्वर के दर्शन करने के योग्य बनाने की क्षमता केवल सद्गुरु में ही है। यह काम करने का सामर्थ्य केवल समर्थ सद्गुरु साईं नाथ में ही निहित है।

जैसी कि सर्व प्रचलित धारणा है कि सागर में स्नान करने से समस्त तीर्थों और पावन नदियों में स्नान कर लेने का पुण्य प्राप्त हो जाता है, ठीक ऐसे ही श्री सद्गुरु के पूज्य चरण-कमलों का आश्रय लेने मात्र से ही तीनों शक्तियों, त्रिदेव - ब्रह्मा, विष्णु, महेश और परब्रह्म को नमन करने का श्रेय सरलता से मिल जाता है।

श्री गोविंद रघुनाथ दाभोलकर, जिन्होंने बाबा की प्रेरणा के फलस्वरूप 'श्री साईं सत् चरित' की रचना की और साईं बाबा द्वारा दिये गए उपनाम 'हेमाडपंत' से पुकारे गए, ने सद्गुरु श्री साईं नाथ की उपासना एकदम नवीन पद्धति बताई। श्री हेमाडपंत ने निर्धारित किया कि अपने सद्गुरु के चरण-कमलों को धोने के लिए अपने प्रेमाश्रुओं के उष्ण जल का प्रयोग करो। श्री साईं को



विशुद्ध प्रेम रूपी चंदन का लेप लगाओ, उनके शरीर पर अटल श्रद्धा रूपी वस्त्रों का आवरण लपेटो। भाव रूपी 'बुक्का' टीका प्रभु के माथे पर लगाओ। श्री साईं नाथ को कोमल व एकाग्र चित्त रूपी फल अर्पित करो। उनकी कमर पर अटूट, निष्काम भक्ति की पेटी बाँधो। प्रभु के चरण-कमलों पर अपना मस्तक रख दो। सद्गुरु साईं नाथ को इन अलौकिक आभूषणों से सुसज्जित कर उन पर वारि-वारि जाओ - सर्वस्व अर्पण कर दो - 'पूर्ण समर्पण'। प्रभु श्री को प्रसन्न करने के लिए भावनाओं का चँवर उन पर डुलाओ और निम्नलिखित वंदना करो, "मेरे सद्गुरु साईं! मेरी सभी चेष्टाओं को, प्रवृत्तियों को अन्तर्मुखी बना दीजिए। मुझे सत्य-असत्य को समझने का विवेक दीजिए। इस संसार में जो भी है, उसकी आसक्ति से मुझे दूर करते आत्मानुभूति प्रभु दीजिए। मैं यह काया व प्राण आपके श्री-चरणों में अर्पित करता हूँ। मेरे सारे जग के रिश्ते-नाते मेरे किसी के काम के नहीं हैं - प्रभु! तुम ही मेरी जीवनयात्रा के एक मात्र साथी हो। तुम प्रसन्नता प्रदान करते हो, मेरे मुक्तिदाता हो। मेरे नेत्रों को तुम अपने नेत्र बना लो, जिससे कि मुझे सुख-दुख का अनुभव ही

न हो सके। मेरे समग्र रूप को (शरीर और मन को) प्रभु अपनी इच्छा से चलने दो। मेरे अतिभ्रमित मन पर अंकुश लगा कर श्री-चरणों में पड़े रहने दीजिए, ताकि मेरा आत्मोद्धार हो सके। मुझे जन्म-मृत्यु के, आवागमन के चक्र से हे साईं नाथ! मुक्ति दिला दीजिए। हे अपने भक्तों की इच्छाओं को फलीभूत करने वाले - कल्पतरु सद्गुरु श्री साईं नाथ महाराज! मैं आपकी शरण में आया हूँ; मुझे सर्व बन्धन से मुक्त करके आत्मसात कर लीजिए। मेरे भगवन्! मेरे करुणानिधान! जीवन पर्यंत मैं आपका नामस्मरण कर सकूँ, आपके गीतों द्वारा महिमा-गान कर सकूँ, ऐसी शक्ति मेरी जिह्वा को प्रदान कीजिए, मेरे तन-मन को दीजिए। श्री सद्गुरु साईं नाथ महाराज की जय।"

(श्री साईं सत् चरित के २६ व १७वें अध्याय से प्रेरित)

**- विजय कुमार श्रीवास्तव**

'साईं तेरी महिमा',  
२/४५६, विवेक खण्ड, गोमती नगर,  
लखनऊ - २२६ ०१०, उ. प्र.  
ई-मेल : [vijshirdi@gmail.com](mailto:vijshirdi@gmail.com)  
संचार ध्वनि : (०)९९१९०३०३६६



(पृष्ठ २३ से)

नाम सुमिरन सर्वोत्कृष्ट है। श्री साईं बाबा के नाम का सुमिरन एक उत्तम धर्म है तथा उनका नाम जपने से कुल और जाति का अभिमान दूर होकर सभी भ्रम दूर होते हैं।

श्री साईं बाबा ने अपने अमृत वचनों में कहा है - "जो व्यक्ति मुझ पर दृढ़ विश्वास करके सच्ची भक्ति भावना से शिर्डी आयेगा, उसकी सभी विपत्तियों को मेरी समाधि दूर करके मनोकामना पूर्ण करेगी। मैं शरीर त्यागने के बाद भी अपने भक्तों के कल्याण हेतु सदैव तत्पर रहूँगा। मैं सत्य हूँ, इस कथन पर विश्वास करेंगे, तो इसका अनुभव भक्तों को स्वतः अपने आप होगा। भक्त जिस स्वरूप में मुझे देखना चाहते हैं, मैं उसी रूप में उनको दर्शन देता हूँ।"

श्री साईं बाबा ने यह भी कहा है - "मेरे फ़कीर की कला, मेरे भगवान् की लीला और मेरे सरकार का बर्ताव सर्वथा अद्वितीय है। मेरा क्या, यह शरीर मिट्टी में मिल

कर सारे भूमण्डल में व्याप्त हो जायेगा तथा फिर यह अवसर कभी प्राप्त न होगा। मैं चाहे कहीं जाता हूँ या कहीं बैठता हूँ, परन्तु माया फिर भी मुझे कष्ट पहुँचाती है। इतना होने पर भी मैं अपने भक्तों के कल्याणार्थ सदैव उत्सुक ही रहता हूँ। जो कुछ भी कोई करता है, एक दिन उसका फल उसको अवश्य प्राप्त होगा और जो मेरे इन वचनों को याद रखेगा, उसे मौलिक आनंद की प्राप्ति होगी।"

श्री साईं सत् चरित में वर्णित गाथायें हज़ारों वर्ष पुरानी न होकर १९वीं एवं २०वीं शताब्दी की हैं, जिनके प्रमाण आज भी वे भक्त हैं, जिनके पूर्वज श्री साईं बाबा के जीवनकाल में उनके श्री-चरणों में रहे हैं। उन भक्तों से श्री साईं बाबा के बारे में निर्माण किये जा रहे संदेहों का समय-समय पर निवारण होता रहा है।

**- सुरेश चन्द्र**

२०/२९, लोदी कालोनी, नई दिल्ली - ११० ००३.  
ई-मेल : [sureshchandra1962@gmail.com](mailto:sureshchandra1962@gmail.com)  
संचार ध्वनि : (०)९८१८६३९००२







## “Sai is Ever Alive”

There is no coming or going to Sai Maharaj, Whose state is such that having become one with *Brahman*... he goes to *Brahman* (this is an extract from Brihadaranyaka Upanishad, Ch. 4, *Brahmin 4, Mantra*), which says ‘one’ who has no desires or whose desires have left him or whose desires are centered in the *atman* alone, the life in him does not depart, becoming one with *Brahman*... he goes to *Brahman*. Then, how can he be in a state of *Niryan*? (Ch. 42, *Ovi 79, Shri Sai Sat Charita*)

As the sanctum sanctorum for the *Samadhi Mandir* was being dug that Baba had said, “Break a coconut, we, all the children will pass our time here itself. Here itself all the children will find peace of mind.” (Ch. 44, *Ovi 32-33, Shri Sai Sat Charita*)

Lord Sai is the Lord God Himself. He only adorned a form for our upliftment. Casting off the mortal coil was only a part of bodily adherence as He became one with His Infinite Self after *Mahasamadhi*. He is ‘ever alive’, not

only from His ever alive form in Shirdi but He is with each devotee, always, anywhere and everywhere.

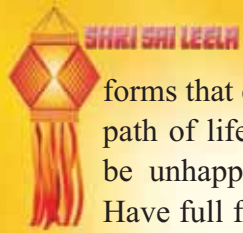
### “Sai is Ever Alive”

Baba sits in the *Samadhi Mandir* the whole day, from morning to night and yet is with each one wherever and whenever anyone calls Him with loving devotion. He is beyond sleep, beyond time... listening to so many wants, desires, happiness, joys, sorrows, quenching the thirst of one and all, making us fearless, happy, contented by filling us by our so longed or desired wants, ambitions, expectations and never ending emotions... Hence, soaking ‘all’ in His divinity, assimilating the darkness of our life in His divine darkness, hence granting us His divine light, we so desirous are.

### “Sai is Ever Alive”

At night we put the ever awake Sai to sleep (*Shej Aarati*) and retire tired, to sleep in our bodily homes. He never sleeps. He assimilates, gathers, cherishes, collects all that we have given to Him through the day, in the casket of His heart. He is in action - appearing to some in sleep, giving visions and working the path of elation for one all - as per the requirement of each soul.

After our bodily sleep, we once again wake up the ‘ever awake’ Sai by performing *Kakad Aarati* followed by the holy bath whereby we pour His own soothing form i.e. water to bathe Him. It seems as though He is washing the heat of our *karmas* with His own divine form (water), to once again adorn Himself, as though preparing to receive so many of His wandering forms (us), all set to put His devotees or the desired path of devotion, love and faith to show them the light amid darkness. At the same time to some children He gives a feel of His presence all the time... always - in light, in darkness, in joy, in sorrow, in elation, in degression. Giving a feel that ‘all’ is HE and HE alone, He alone is a reason for our smile and He alone takes varied



forms that create causes for our tears, so on this path of life, do not complaint, don't cry, don't be unhappy, don't be bogged down by fear. Have full faith in Sai as He is everywhere, part of everything all the time - Cherish and enjoy His presence in everything - in joy, in sorrow, pain and elation, in darkness and in light, as He is an integral and essential part of all extremes in life, in fact in everything in and around us. Understand His true identity and hence, broaden your perception - He is not merely joy, He is in sorrow too. He is not light alone, He is residing in darkness for you as the darkness too belongs to Him. He not only creates, its He alone who sustains and destroys too. Feel and enjoy His presence in each moment of your life, through each pore of your body. Feel, gather and enjoy the Divine seated comfortably inside you. Remove and overcome the outer ripples to reach the inner peace - 'HIM'.

### **“Sai is Ever Alive”**

One morning Baba's grace granted me a glimpse of His divine presence all around me. As I live in Delhi I sing and enjoy Baba's *Kakad Aarati* from Shirdi on the Sansthan's website (Live *Darshan*). One day after the *Kakad Aarati* i.e. after waking Baba bodily, I actually saw, felt Sai, waking and awake for all of us, for our benefit, for our upliftment. Baba's presence touched me in the feel of the cool breeze and He, as light (the sun) was piercing His own darkness (the night) to give His lonely feel. O Sai! Your beauty was unparalleled. I saw You rise from the depths of the East. Its not only Your light, Your coming that elated me but I could also hear and feel You welcoming Your own lightened self in the fluttering of the pegions, in the croaking of the crows, in the melody of the parrots, in the music of the birds... Your orange radiance slowly... slowly... lit up the Eastern Horizon, illuminating all forms. Your colour became darker, deeper... Your light brighter till You fully arose to awaken the sleeping ones. You

indeed are 'beautiful'... You are full of joy. [As stated in Ch. 43, *Ovi* 147 of Shri Sai Sat Charita - In the *Chavadi* His presence is invisible; in the mosque it is in the form of *Brahman*; in the *Samadhi Mandir*, in a state of *Samadhi*, while everywhere else, it is as 'joy' incarnate]. It is this unparalleled joy that touched me this morning.

### **“Sai is Ever Alive”**

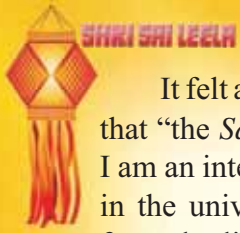
So, Lord Sai is light, yet He alone dwells in darkness. He is elation, yet resides with you in depression. He is in the rising sun, yet sets with the setting sun. He is joy, yet He alone is in sorrow that ferries us to 'eternal joy'. He is within and without. He is inside and out. He is in the twinkle of the eye, yet He is fully drenched in each tear we shed. He is the feel of the sun, rain, wind, clouds, heat, cold... impossible to pen down His omnipresence. Try to gather Him through the Nature's touch. He is the hardest, yet the softest. He is in me, He is in you... He is in each creation of this universe.

### **“Sai is Ever Alive”**

We, bodily beings, are tied with the bondages of this body; so we can touch Him in the *Samadhi Mandir* (His *Samadhi*), yet feel His presence in all living forms around us, admire His ever alive form in the temple, yet love and imbibe His varied colours (forms) around us. His *Samadhi* is the 'source of energy'. So, gather this Divinity (Sai) from the source (*Samadhi Mandhir*), assimilate it, cherish its Divine flow and tap it at all its pressure points i.e. in each speck of the universe i.e. in and around us everywhere.

The *Brahman* merged back into *Brahman* i.e. the bodily self was given back to nature, but the *Brahman* presented itself in vastness i.e. in the entire creation as the omnipresent God. So, taking *Mahasamadhi* is only an outward enactment of the body as God is beyond life - death, coming - going, He is eternal, ever alive. He always 'was', 'is' and 'ALWAYS WILL BE'.





It felt as through Baba whispered in our ears that “the *Samadhi* in Shirdi is the ‘lifeline’, but I am an integral and essential part of each speck in the universe. So, start your eternal journey from the lifeline i.e. Sai, paving the path from my *Samadhi* in Shirdi and know - understand, recognize, embrace only ‘me’ in every speck in each moment of life, in the sunrise, in the sunset, in the breeze, on the mountain top, in the chirping of the birds, in the fragrance of the flowers, in each animate and inanimate thing, in every beat of your heart, in every effort, in hope, in your entire being, in your incoming and outgoing breath and enjoy the bliss of my entire self - each and every form. Always feel me near you, bound to you always, inside you as your lifeline. Recognize my omnipresence and do

attain the indivisible self - SAI.”

The Lord’s form is amazing, beyond the limited parameters of our body or thoughts. He is divine amazing, beyond perception, probably that is why - He alone is happiness and is in sorrow too. If He is pain, then He alone is the remedy for the pain. He flows in the melodious flowing water and He alone dwells as a fish in the very same water. He alone creates, we humans to search our true identity. He alone incarnates and guides us to the path of deliverance. He always was, is and always will be...

**“Sai is Ever Alive”**

**- Bela Sharma**

A-3/154, Janakpuri, New Delhi - 110 058.

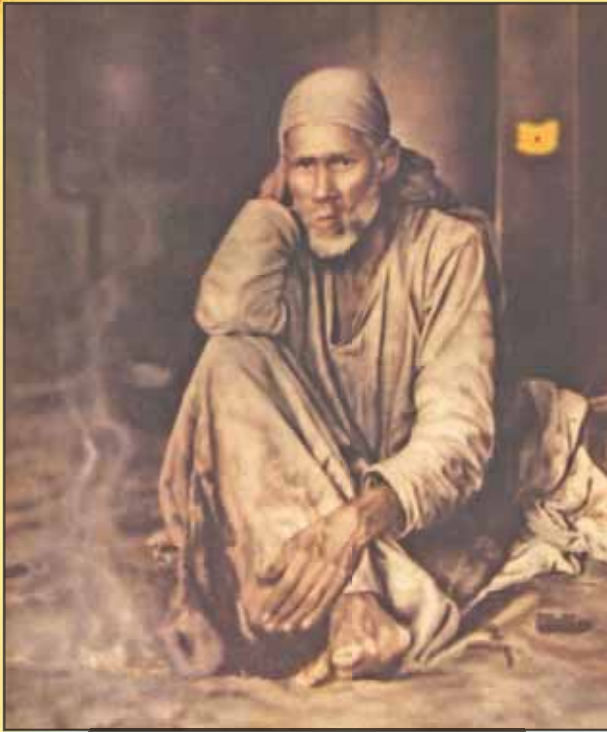
Mobile: (0)9868867940

E-mail: [belasharma@rediffmail.com](mailto:belasharma@rediffmail.com)



Drawing inferences, some people said that Sai was Brahmin and some that He was a Muslim. He was beyond all castes and creeds. No one knew definitely when He was born or where, in what community, or who were His parents. Then, how could He be a Muslim or a Brahmin? If He was a Muslim, how would there be worship of fire in the Masjid, or a Tulsi Vrindavan there, or how could He have borne the ringing of bells? How would He have permitted the blowing of the conch, the recitation of ‘katha’ and ‘kirtan’ with instruments, the playing of ‘tal, dhol, mridang’, and the loud chanting of the Lord’s name? If He was a Muslim, would He allow application of sandal paste and other ritualistic worship while sitting in the Masjid and eat with others there? If He was a Muslim, would His ears have been pierced? Would He have renovated and repaired temples by spending His own money? After bath, would He have worn an expensive ‘pitamber’? He never tolerated the slightest disrespect to any Deities...

The listeners would question how the prasad could be distributed to all when Sai Baba was a Muslim. How could He make the people eat food cooked by Him, which would be defiling (for the Hindus) as per their code of behaviour? There is only one answer to this question. Sai was always attentive to the matters relating to conformity or non-conformity to religious matters. Sai never insisted that all the dishes prepared in the cooking vessel should be partaken by everybody, indiscriminately. But, He fulfilled the desires of those who wished voluntarily to have that prasad, in good faith. He never practised any fraud or deceit. Besides, who knew the caste? Since He stayed in a Masjid it was said that He was a Muslim. But, considering His ways of behaviour none knew to what caste He belonged. Where lies the question of considering the caste of Him Who is believed to be God; and, at the dust of Whose Feet refuge has been taken? Their attempt to attain spirituality must be treated scornfully. Where lies the question of knowing the caste of Him Who is detached from this world and heaven too; and Whose only wealth is discretion and detachment? The attempt to attain spirituality by those, who do so, must be treated scornfully...



### Experiences of Sai Maharaj

Today evening this author with a friend went to visit Sri Shamrao Ramchandra Vinayak Jaykar for some work at his residence in Sri Tilak Mandir road in Parle.

Sri Shamraoji is a loving and devoted one among the *balgopals* (children friends) of Sai *Mauli* (mother).

He is an exceptionally popular artist. The lovely oil painting of Shri Sai Baba in Dwarkamai is painted by him. So also, the oil paintings in the living and prayer room of R. B. Moreshwar Pradhan's house are painted by him.

This gentleman (artist) had stayed at Baba's Feet for two years. Himself an ace artist, having naturally cultivated the ability from his childhood days to absorb the minutest detail, his (Jaykar's) oil painting of Shri Sai Baba spell-bound the viewer, as he had every move of Shri Sai Baba, His sitting and standing and His interaction with the people, very well etched in his mind.

Sri Jaykar has so well captured the love and excitement-filled smile for His *balgopals*, reflected time and again on Shri Sai Baba's face, that the photographs too of the oil painting bear testimony to it, what more proof is required?

While talking about Shri Sai Baba's *leelas* (doings) Jaykar's and the listeners' eyes are filled with tears of joy. He has agreed to send me in writing his Sai experiences. These experiences will be happily published in Shri Sai Leela.

Remembering his own general and similar experiences from page four in the *Shravan* issue, what he said today is published here in his own words :

"While we were in Shirdi, it occurred in Varde's (a resident of Mumbai) mind to perform a Satyanarayan worship at Sai's Feet. Accordingly he spoke his mind to Shri Sai Baba. Baba said, 'I do not want Satyanarayan or other (worship). Why are you unnecessarily falling into these botherations.'

Varde pleaded, 'Baba, I have made a vow. You are the All-Knowing. Please favour poor me to do this!'

Dwindling between yes and no, Shri Sai Baba for once agreed. And Sri Varde began to gather the materials for the worship.

Sri Varde exhausted all his resources in procuring all materials for the worship and he was falling short of Rs. 2½ to buy ingredients for *prasad* (food offering). He approached Shri Sai Baba and implored, 'I am falling short of Rs. 2½ for *prasad*, what to do?' At that time several resourceful people were seated near Shri Sai Baba in Dwarkamai. I was seated far on the outside periphery. At that time, Baba pointing out to me, said, 'Go! That brother has Rs. 2½. Ask





and take from him.'

I alone knew that at that time, I had just Rs. 2½ in my pocket. It was to be some more time before additional money would come from Mumbai. Therefore, I had very carefully kept this Rs. 2½ with myself to spend it for other things carefully.

Sri Varde came to me and as soon as he asked, I gave him the money.

Later, when Shri Sai Baba saw him bringing four banana tree trunks, He asked, 'What for, this?' Sri Varde said, 'We want to put up a *mandap* (pavilion/shed) around You.

'I do not want any of these,' Baba stated in anger. 'Baba, why are You doing this? Allow this poor man to fulfil his vow!' Varde pleaded.

Baba would not relent. Varde came to tears. After some time, Baba agreed for once! Then What! What to say, everybody, collectively, with great enthusiasm, erected such a wonderful pavilion around Shri Sai Baba. Remembering that occasion and as the said decoration come to mind Babasaheb, the tide of happiness overflows! Blessed indeed are the eyes of this poor man, that witnessed that function.

Then began the reading of the *pothi* (holy book). The reading of the *pothi* began below the meeting hall.

At that time, I along with others, were sitting in Dwarkamai, doing the *Charan seva* (massaging the Holy Feet) of Shri Sai Baba.

Instantly a thought came to mind, 'Oh! As per tradition, should we not be sitting near the *pothi*, while the reading of the *pothi*

was going on?' Then the thought came, 'Oh! Are, we not doing the *Charan seva* of Shri Sai Baba? The mind got agitated again. 'What about the tradition of listening to the *pothi* when the reading was going on?'

It takes a lot of time to tell all this and write about this. But, the fickle mind-form monkey took just a fraction of a second to conjure up all this. Done with this, Baba said to me, 'Get up! Go down! Sit near the *pothi*!'

Everyone around was surprised, seeing Baba ordering me alone, without telling anyone like this. But, having experienced Baba's omniscience time and again, my eyes were filled with tears, and getting down the stairs, I sat listening to the reading of the *pothi*.

Babasaheb! What all *leelas* of Shri Sai Baba can I tell you!"

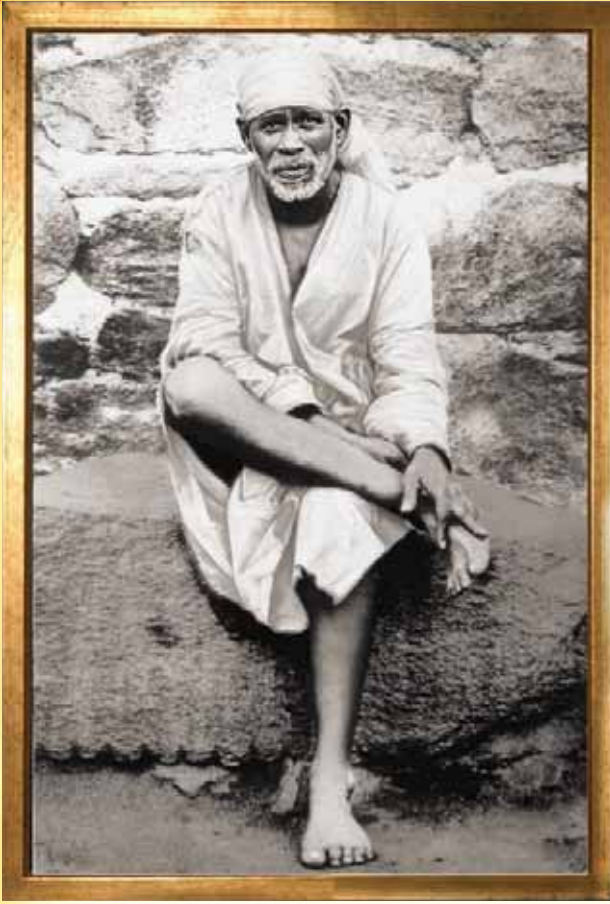
Who knows? I got to hear these *leelas* from you. And by writing these you will make the other *balgopals* aware of Shri Sai Baba and make everyone's life purposeful. Was it not for this that Shri Sai *Mauli* caused this intellectual co-incidence today. All the *leelas* of Shri Sai Baba are unfathomable, profound and incomprehensible. Stating so, we both departed to return home after taking an assurance from Shri Shamraoji 'I will surely send you my experiences in writing'.

**R. A. Tarkhad**, Editor  
Shri Gokulashtami, Bandra,  
Dated 24<sup>th</sup> August, 1932

Translated from Marathi by  
**Vishwarath Nayar**

E-mail : [vishwarathnayar@gmail.com](mailto:vishwarathnayar@gmail.com)





## नित्य प्रतीति से करना अनुभव

१५ अक्तूबर, १९१८ को श्री साई बाबा की महासमाधि के बाद भक्तों के स्वानुभव...

(साई भक्त शिवनेसन स्वामी जी की प्रेरणा से साई भक्त रामलिंगम स्वामी जी द्वारा अंग्रेजी में लिखित 'ऐम्ब्रोशिया इन शिडी' नामक मूल पुस्तक से -)

(गत अंक से क्रमशः)

(४१) बाबा ने श्री नवीन भगवान जी देसाई, जलालपुर, गुजरात को दर्शन दिये और उनकी सहायता की -

मेरा सम्पूर्ण परिवार - माता-पिता, पत्नी और बच्चे - सन् १९६७ से साई भक्त बन गया है और मैं पूर्णतया उनके चरण-कमलों में समर्पित हूँ। वे ही मेरे एक मात्र पथ-प्रदर्शक, उद्धारकर्ता और भगवान् हैं।

बाबा ने मेरे घर पर ही मुझे स्वप्न में दर्शन दिये। उन्होंने शिडी में उनकी समाधि पर आने के लिए मुझे आदेशित किया। मैं गया और बाबा ने मेरे मस्तक पर तिलक लगाया, तौलिया बिछाया, उस पर तीन सौ एक रुपये के चाँदी के सिक्के डाले, उन्हें बाँध कर मुझे दे दिया

और जाने के लिए कहा। जब मैं उनकी समाधि से नीचे उतर गया, तब उन्होंने मुझे एक बार पुनः ऊपर बुलाया। मैं उनकी समाधि पर ऊपर गया। उन्होंने एक छोटे पात्र से कुछ गुड़ निकाल कर मेरे मुख में रख दिया और मुझे जाने के लिए कहा। तब मैं अपने घर को वापस लौट आया।

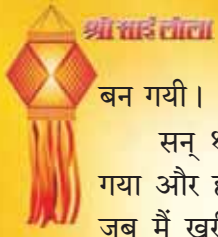
मैंने विचार किया कि यह शिडी जाने के लिए शुभ शकुन है। जब मैं १९६७ में प्रथम बार शिडी गया, तब मुझे बाबा के गुरुस्थान भवन में ठहरने का स्थान मिला। मैंने बाबा से प्रार्थना की कि वे मुझे दर्शन देवें, ताकि यह प्रमाणित हो सके कि उन्होंने मुझे उनके भक्त के रूप में स्वीकार कर लिया है। मेरी प्रार्थना स्वीकार करते हुए बाबा ने इस रूप में दर्शन दिये, मानो वे समाधि मंदिर के पीछे के पौधों को पानी से सींच रहे हैं!

बाद में मैंने अपनी १८००/- रुपये प्रति मास की सेवा से त्यागपत्र दे दिया और मैं पूर्णतया बाबा की भक्ति में लीन हो गया। मेरी पत्नी अध्यापिका थी। अचानक वह पागल सी हो गयी और उदासीनता पूर्वक वार्तालाप करने लगी। मैंने लगभग दस हजार रुपये उसकी दवाओं पर खर्च कर दिये; परन्तु डाक्टर ने बतलाया कि अब चिकित्सा पर व्यय करने में कोई लाभ नहीं है और मुझे दैवीय सहायता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

एक रात्रि में लगभग अढ़ाई बजे उसने (मेरी पत्नी ने) मुझसे कहा कि उसने उसकी बचत में से मुझे ४०,०००/- रुपये दिये हैं और वे रुपये उसे तलाक के साथ चाहिए। मैं अत्यधिक चिंतित हो उठा और बाबा से प्रार्थना करने लगा, "बाबा! यदि आप चौबीस घण्टों में उसकी इस हालत में सुधार नहीं ला पाये, तो मेरा आपमें से शक्तिमान् बाबा होने का विश्वास उठ जायेगा।"

हर सुबह लगभग ५ बजे एक भिक्षुक गाना गाते गाते भिक्षा के लिए हमारे घर के दरवाजे पर आया करता था। दूसरे दिन प्रातः जब मेरी पत्नी ने उसे भिक्षा दी, तो उसने उसे बताया कि वह एक पागल औरत नहीं है; परन्तु किसी दुष्टात्मा ने उसके ऊपर सम्मोहन (जादू) कर रखा है। वह शीघ्र ही ठीक हो जायेगी। मैंने भी इसे सुना और उसके माध्यम से इसे बाबा का ही वचन माना। मैं उसे पड़ोस के गाँव में मारुति मंदिर में लेकर गया, जहाँ ऐसे सम्मोहन ठीक किये जाते हैं। वह श्री साई बाबा की कृपा से मात्र डेढ़ रुपये के नगण्य खर्च से ठीक हो गयी और वह मुझसे भी अधिक श्री साई बाबा के प्रति निष्ठावान्





बन गयी।

सन् १९६७ में मैं अपने परिवार के साथ पुनः शिर्डी गया और हमें गुरुस्थान के भूतल पर एक कमरा मिला। जब मैं खरीददारी के लिए जाने लगा, तब एक मोटा-तगड़ा कुत्ता मेरे आगे-आगे चलने लगा और एक दुकान के सामने जाकर खड़ा हो गया। मैंने अपनी आवश्यकता का सामान दुकान से खरीदा। पुनः कुत्ते ने मेरे कदमों को निर्देशित किया (रास्ता दिखाया) और मुझे चार-पाँच दुकानों पर ले गया, जहाँ से मैंने अपनी आवश्यकता की सारी वस्तुएँ खरीदीं। तब वह मुझे सीधा गुरुस्थान को ले गया, मेरे कमरे में प्रवेश किया और मेरे आसन पर बैठ गया। जब मेरी माँ ने हमें भोजन परोसा, कुत्ते ने प्रत्येक किस्म में से कुछ न कुछ लिया और वापस आसन को लौट गया। भोजन के पश्चात् हमें कमरा खाली करना था; क्योंकि हमें ११ बजे की बस से सूरत जाना था। १०.३० बज चुके थे, मैंने मन ही मन में कुत्ते से प्रार्थना की, “बाबा! मैं आपके मार्गदर्शन और सहयोग से सन्तुष्ट हूँ। अब मुझे यह कमरा खाली करना है और सूरत के लिए प्रस्थान करना है। कृपया मुझे मेरा कमरा खाली करने में सक्षम करें।” ज्योंही मैंने ऐसा विचार किया, कुत्ता अचानक उठ खड़ा हुआ और चला गया। तब हम सूरत के लिए अग्रसर हुए।

मेरा भाई अशिक्षित है। उसका विवाह करना कठिन था; क्योंकि कोई भी व्यक्ति एक अशिक्षित को अपनी कन्या देने आगे नहीं आ रहा था। एक पड़ोस के गाँव के मित्र के पुत्र की शादी हमारे गाँव की एक लड़की से होने जा रही थी। दूल्हा और दुल्हन दोनों वाग्दान (सगाई) समारोह के लिए हमारे घर पर आये। मेरा मन मेरे भाई को लेकर उदास हो गया और मैंने बाबा के चित्र के सामने खड़े होकर उनसे मेरे भाई के विवाह के लिए प्रार्थना की।

हमारे घर से सगाई पार्टी के जाने के एक सप्ताह बाद, एक वृद्ध व्यक्ति, जो सगाई पार्टी में मेहमान बन कर आया था और जिसने मेरे भाई, हमारे घर, हमारी नित्य-चर्या और प्रभाव को देख लिया था, अपनी पुत्री का विवाह मेरे भाई से करने के लिए कृतसंकल्प हो गया।

बाबा ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली थी और मेरे भाई का विवाह निश्चित कर दिया था। मैं शिर्डी गया और बाबा के सभी पूजा-स्थानों (मंदिरों) में निमन्त्रण-पत्र

अर्पित किये - बाबा को हृदय से यह प्रार्थना करते हुए कि वे युगल को आशीर्वाद देने के लिए विवाह समारोह में अवश्य पधारें।

विवाह का भव्य आयोजन हुआ और ग्रामवासी अभी तक भी कहते रहते हैं कि उन्होंने हमारे ग्राम में पहले कभी भी ऐसा विवाहोत्सव नहीं देखा था। मध्याह्न के १२ बजे के आसपास एक अपरिचित फ़कीर अति शीघ्रता में आया। वह सीधा मेरे पास चला आया और भोजन कराने के लिए कहा। मैंने उन्हें उपयुक्त सम्मान के साथ भोजन कराया। उनके भोजन कर लेने के पश्चात् मैंने अपनी जेब में शेष बचे हुए २१ रुपये उनको भेंट किये। मैं प्रसन्न था कि बाबा स्वयं पधारें थे और उन्होंने अपनी उपस्थिति से हमें प्रसादीभूत किया था।

**(४२) बाबा ने श्री माधवनाथ के भक्त श्री बाला साहेब रेगे, पुणे को दर्शन दिये -**

भारत ऋषि और मुनियों का देश है और बाबा एक महान् ऋषि हैं। मध्य प्रदेश में चित्रकूट के श्री माधवनाथ भी एक ऐसे ही सन्त थे। एक बार जब बाला साहेब पुणे जा रहे थे, तब श्री माधवनाथ ने उन्हें शिर्डी के साई बाबा को देने के लिए एक चिट दिया। चिट पर मात्र ‘देवीदर्शन’ लिखा था; उस पर अन्य कुछ नहीं था।

जब बाला साहेब शिर्डी पहुँचे, रात हो चुकी थी और समाधि मंदिर बंद हो गया था। उन्होंने चिट को खिड़की की देहली पर रख दिया और खड़े रहे। बाबा का समाधि मंदिर मच्छर-जाली से आच्छादित था और वे समाधि की बायीं ओर खड़े हो गये। समाधि की दायीं ओर उन्होंने एक चीता देखा और बायीं ओर देवी थी। उन्हें आश्चर्य हुआ कि कहीं वे स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं! तब ही उन्होंने चिट पर लिखे हुए ‘देवीदर्शन’ शब्द का अर्थ समझा।

बाद में उन्होंने मच्छर-जाली के अंदर बैठे हुए बाबा को चिलम पीते हुए और श्री माधवनाथ को उनके सामने बैठे हुए देखा। दर्शन बहुत देर तक चला और बाला साहेब आश्चर्यचकित रह गये।

(क्रमशः)

अंग्रेजी में संकलित, सम्पादित -

**ज्योति रंजन राऊत**

८/ए, काकड़ इस्टेट, १०६, सी फेस रोड,  
वरली, मुम्बई - ४०० ०१८.

ई-मेल : [jyotiraut15@gmail.com](mailto:jyotiraut15@gmail.com)

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद - **मदन गोपाल गोयल**





## Shri Sai Baba gives Realisation of His Presence time and again at all places...

### SAI EXPERIENCES

Translated from Marathi into English by **Vishwarath R. Nayar**

### Untiring Efforts with Faith and Perseverance will achieve the Peak of Success...!

It is a universal truth that there is no germination without sowing, no cracking without smashing and no results without doing. After sowing the rains must come. This is the grace of God, destiny or nature! But, with grace, if there is no sowing, then the fields will not bloom. Meaning, *Karmayoga* (Yoga of action), stated by Shri Krishna is not only important, but also unavoidable. Only after this thought is strongly embedded in the mind, one should view the concept of *yoga*, God, faith and grace. Even in faith there should be perception! There is a difference between what is natural and spiritual. When you make a call in a mountain – valley you hear several echoes. And, if you do not make a call, there will be silence - this

is natural. In spirituality, *Bhaktiyoga* (Yoga of faith) a call made in the mind can reach one's *Shradhasthan* (on Whom one reposes faith).

What is faith, a child sent to playschool starts crying and is not ready to stay, but when he is assured that his mother is outside the class, this gives him assurance. He has to undergo schooling, not his mother. But, the assurances and security he feels by the thought of her presence, gives him the strength to go through his study. And actions lead to outcomes. The saints, *yogis*, *Gurus* do just that. Hence, they are manifestations of the mother. It is not simply that saints Gnyanai, Tukai, Vithai are referred to as *Gurumaulis* (teacher mothers).

Asking for alms and rights are two different things. You make efforts and you are automatically entitled to ask for grace. To give alms is the right of the intending giver and not that of the one seeking.





I am not advocating imagination, miracles, blind faith and quackery. Also, I will not state that results will come without effort. If I say so, I will be negating my *Shradhasthan*.

I have absolute faith in Shri Sai Baba. Faith (*Shraddha*) and perseverance (*Saburi*) are His two principles. Perseverance means discretion and thorough thinking over the pros and cons followed by action.

My life was shaped on His tenets of faith and perseverance. I got the reward of His grace for my relentless effort.

When we came to Mumbai, our economic condition was very poor. It was in 1980-81. Mumbai was not as appalling then, as it is today. But, also there were not as many means of livelihood then, as today. I had lost the protective roof of my father. Therefore, the responsibility of my mother and my two sisters fell upon me. It was extremely difficult to run the house on the meager earnings, working for a private company. One day, I lost the job too. I started feeling helpless. I was engulfed with disappointment. A cloud of various thoughts was spinning in my head. Only my firm faith in my efforts did not deter me. On the strength of that alone to earn the eligibility, I appeared for both the two years L.L.B. examinations in one attempt. I felt darkness in all directions. In this darkness a friend of mine, Sri Vijay Angane lit a small lamp of advice and showed me the path in that light. One cannot say in what form one will meet the *Guru*. This is a fact, with little resources and less time for studies, it was not only difficult to attempt all papers at one time, it appeared impossible. I was advised - 'Go to Shirdi. Surrender to Sai. Appeal for His grace. There is no other hope. Have unflinching faith that He alone will sail you through.' Hearing this I decided to go to Shirdi...

In April 1981 I took leave for six days to study. After appearing for the 2<sup>nd</sup> and 3<sup>rd</sup> year L.L.B. examinations at one go, I went to resume my work in 12 days. I then learned that my office had relieved me from my work. The reason given was I resumed work after 12 days when six

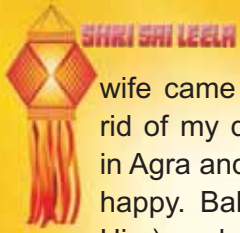
days leave was sanctioned. I wanted to appear only for the 2<sup>nd</sup> year L.L.B. examination. But, my above mentioned friend, Sri Vijay Angane said, "Your examination fee for the 3<sup>rd</sup> year has been paid. Your seat number for the examination has also been allotted. Sit for the 3<sup>rd</sup> year." Listening to his insistence, I studied hard, sleeping for only two hours everyday in the last six days and gave my 3<sup>rd</sup> year examination too.

I was very sure that I would clear all the six papers of the 2<sup>nd</sup> year L.L.B. examination, as I had studied them thoroughly. But, I was doubtful of passing in the 3<sup>rd</sup> year L.L.B. examination.

And now I had lost my job also. And I was worried as to how I would run the household expenses. At that moment I met a gentleman. I expressed my problem to him. He said, "Go to Shirdi; take *Darshan* of Shri Sai Baba! Tell Him your problem! Baba will certainly find a way out. Go to Manmad from Dadar! From there go to Shirdi by S.T. And he gave the details of the travel.

The responsibility of mom and my sisters who were studying worried me as I was employed! What will happen in the future was the draconian issue confronting me. I also had the confidence to earn my livelihood by practicing law, if I cleared both the examinations. But, if at all I failed in any one subject, then what?...

In this dual frame of mind I went to Dadar that evening and boarded the Manmad train. From Manmad I reached Shirdi by S.T. between midnight 12 and 1 a.m. I was new to Shirdi. Being there for the first time, I knew nothing about Shirdi. When I enquired at the S.T. stand, one person told me, "Go to the *dharmashala* (charitable rest house). Sleeping facility will be available". Accordingly I went to the *dharmashala* after reaching Shirdi. I got a bedding for 50 paise. I got up in the morning and a Sai devotee from Agra came to me and asked, "You look very disappointed, what has happened?" I outlined to him my problems. He said, "I have come from Agra. Earlier I was addicted to liquor, because of which my business closed down and I was shattered. My



wife came here and prayed and vowed. I got rid of my drinking habit. Now I have a factory in Agra and the whole family is prosperous and happy. Baba will give everything. You go (to Him) and whole-heartedly take His *Darshan*. He will give you everything.”

After my bath, I went to the *Samadhi Mandir* with full faith. At that time one could get to sit in the *Samadhi Mandir* without disturbance, one could also do *Satyanarayan* worship there. I pleaded to Baba telling my whole story. I was virtually conversing with Baba's *Samadhi* (Tomb). And I could feel Him listening to me. After the dialogue with Baba, I once again bowed before Him and began my return journey.

Advocate Gavkar met me at the very footstep of Dadar railway station. We knew each other. He asked, “What are you doing?” I replied, “I have appeared for the law examinations. I am thinking of practicing law.” Hearing that, he asked me to work for him from the very next day.

I began going to his office at Delaile Road everyday. The court was closed during that time. Advocate Gavkar being a law professor, law answer papers had come to him for assessment. I assisted him for one full month. Then came June. The 2<sup>nd</sup> year L.L.B. examination result was declared. I passed in that. In a few days the date for announcing the 3<sup>rd</sup> year L.L.B. result was also declared. I awoke in the morning and went to the college. I was tensed. The result was put up on the board. Before going to the board, I closed my eyes for a moment and remembering Baba prayed and told Him that my whole future is dependent on this examination and I open my eyes and see what, I had passed! It is indeed a miracle to pass in all 12 subjects under adverse circumstances. And when that happened, I knew it was due to unflinching faith in my Baba...

After that I started practicing law and gradually by Baba's grace, my practice was gaining firm ground.

I always started a new work on a Thursday.

I firmly believed that was my auspicious moment.

After financially stabilizing a bit, I got married, and that too on a Thursday! My wife was a senior police officer. Our first daughter was also born on a Thursday. We named her Shradha. She is a doctor. The second son was named Sainand. I named the third child Abhishek and my wife named him Siddhesh. Both are lawyers.

However, great a performer, a person may be, for success he needs the Divine support. In my life I got the support of Sai Baba.

A child born in a very ordinary worker's family in Devgad, Sindhudurg district in Maharashtra state has today earned the reputation of being a meritorious lawyer in Mumbai city. This is all due to Baba's blessings and my persevering efforts.

My reason to narrate all this is - I want you to believe firmly, have faith and perseverance, Sai Baba will certainly be with you.

- Advocate Vijay Chougule

E-mail : [shraddhaent@vsnl.net](mailto:shraddhaent@vsnl.net)

Mobile : (0)9820024314

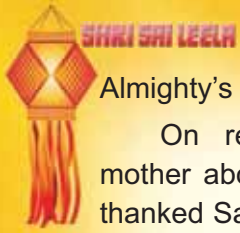


## Shri Sai in 21<sup>st</sup> century...

In 2002-2003 my mother was diagnosed with cancer. Each one in the family, father, elder sister, younger brother (studying in school at that time) were in the hospital. I was alone at home, no one to talk to; so I looked at Him in the photo frame (rather, He made me look at Him noticing my loneliness) and I said before taking leave, “Baba, yete!” (“Baba, I shall take your leave!”) and that was His response “Ye baal!” (“My child do come!”) before I stepped out of the house.

My heart was filled with joy that He spoke and I could hear Him clearly; He called me His child, the soothing tone was a miracle. For the first time it was a two-way communication and too at the time of distress, when we need the





Almighty's help the most.

On reaching the hospital, I told my mother about this and she simply smiled and thanked Sai Baba, took the *Udi* (Holy ash from Dwarkamai) and applied it on my forehead. Her joy was wonder to watch. But, above was the joy of seeing her selfless love, when she applied the *Udi* to me rather than herself.

- “*Vastu sod!*” (“Leave the place at once!”) March 2004 : While my mother's cancer treatment was still going on, there was tension between our relatives. My relatives were trying to create rift amongst us.

My grandmother's death due to age shook all the family members, especially me.

This was the first time I saw death in the family. My younger brother was struck with hepatitis; later, I was struck with hepatitis and my sister got an epileptic attack all within a week's time. I had all sorts of nightmarish dreams of other near and dear people dying. In one of the nightmares, I saw a child's funeral, and within seconds Sai Baba screamed, “Leave this house at once!” I have used the word ‘screamed’ here; because it was more of an emphatic command and a tone different from earlier words. He made me realize that I have not overcome fear of death. I was being treated for depression. It was unnecessary fear, and He was not just asking us to leave the house, but also fear to leave my mind.

- Image in the hospital – He appeared as a doctor along with other doctors ( July 2004)

We had still not left the flat that we were living in. As a part of treatment for cancer, my mother was being taken to the operation theatre for biopsy. I was in the hospital and father, who was a lecturer in Fergusson College, had to go, as duty came first. Nonetheless, he stayed with me and mother till she was taken inside the operation theatre and I was sitting outside.

This was the first time I saw my mother being taken; I started praying for her well

being. Another woman's little baby was being taken and the way she started crying was heart rending. Everyone present outside the operation theatre including her family members were consoling her that everything will be fine. Strangers too bonded and supported each other - her feelings, fear were natural and made me pray for the baby as well as other patients. Suddenly, I was only chanting ***Om Anantakoti Brahmandnayak Rajadhiraj Yogiraj Parabrahma Satchidanand Sadguru Shri Sai Nath Maharaj ki Jai II*** with my eyes closed.

Minutes later, an image flashed in my mind. The doctors were standing around a table, the patient was not seen; but Shri Sai Baba, in His white robe was standing along with the doctors, as if supervising the patient and the doctors.

He made me felt His presence inside the operation theatre - the patient was not purposefully shown; because I realized that He was with every patient with the golden words of Patience and Faith in self, in doctors and for the worried relatives.

- I see you ; Cut ‘t’, add ‘ce’!

My mother was struck with tuberculosis and it is a dangerous situation for a cancer patient. Doctors had to test that cancer, which was cured should not recur again, nor should any other disease. By Almighty's grace only tuberculosis was detected and no malignancy. Yet, my mother had to be in the ICU for ten days. Again, family members were worried - and in my bed time prayers, I looked at His photo and said, “Baba, Intensive Care Unit (ICU)!” And, He replied, “I see you!”

All my fears vanished. The ‘you’ implies ‘you all’. This is the message that He gave me and it is my duty to share it with you all. While mother's health was getting better, my father developed a heart problem. He was asked to undergo angiography. Since, this was the first time that a cardiac problem was noticed in the family, my father was apprehensive. He feared it



like a child fears an injection. It was in the same K.E.M. Hospital, Pune (mother had been treated here) that he was being treated and the day angiography was to be done was a memorable one. Sai Baba, Who initially appeared in a flash as a doctor for my mother, this time, made His presence felt once again. My father was scared that because of the procedure his thighs may pain a lot. Moreover, the other thought niggling his mind was, what could be the diagnosis? My father confided his worries to the person who wheeled him inside; while injecting, he said, "These are Sai Baba's hands; do not worry."

On hearing these words, dad cried. He cried his heart out. How did that person say this? The person, Mr. Sinalkar who lived in Shirdi, but worked and stayed in Pune did not even know that the patient - my father was one of Sai Baba's devotees. I was amazed, how he took only Sai Baba's name? It was of course Sai Baba's wish to help my father overcome anxiety, fear and let him feel comfortable. He appeared through that person's voice. It was Sai Baba Himself Who spoke through the person. As in previous cases of ill health, Sai Baba had once again cured him without letting him notice the pain. Now, father had only to take care of the cholesterol levels and regular medicines.

Couple of years later, I was detected with pilonidal sinus - sinus at the end of the spine. I was asked to undergo a minor surgery with the doctor insisting that 'sooner the better' condition. Since, I had experienced the number of illnesses in the family, Sai Baba's guiding light and grace to cope with it, I was feeling mentally stronger. My surgeon, Mrs. Shubha Chandorkar counseled me well and since Chandorkar was her surname, Sai Baba said, "Look, Chandorkar's Maina is there for you." She was the daughter of Nanasaheb Chandorkar, a staunch devotee of Baba. Baba in His inimitable way had reached *Udi* (the holy ash) for hassle free birth of Maina's child.

In 21<sup>st</sup> century, despite Baba's indication

that Who my surgeon was, I questioned Baba, how many health problems in our family and now I am tired; He continuously made me realize - cut 't', add 'ce'! At first, I was not able to comprehend, what this meant. It continuously rang a bell in my mind. I was working on my M.Phil. thesis in English language and trying to find out one aspect - how teachers in classroom correct errors like ambiguity and how online tutors would do it.

And suddenly, our Master Philosopher, friend, guide Sai Baba made me realize the play of words with divine message in the word PATIENCE. Since my parents, sister and I were all patients at different points of time fighting illnesses, it was the message :

Cut Tension, be Nice, Compassionate and Endeavor - PATIEN 'T' - PATIENCE - keep trying with faith in self, faith in doctors and cultivate patience.

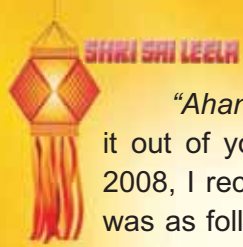
The operation went on well and I took more time to recover than usual; yet, I did not feel any pain as such - He did not let me feel it. What I will never forget is the devotional song that He as my soul played when I got up on the day of operation -

*Deh Devache Mandir* (Body is the place of God, the place of Worship)

It was an appropriate song, as if He had entered my body to strengthen me, take away the obstacles and the pain - which actually, I never felt. I was woken by a relative of another patient and I told her that I want to listen to this song. Coincidentally, this song was there in the mobile phone and she played it for me. At that time, I did not realize the significance of this song on that day. It was only after a week or so that I realized Who hummed it in my ears as I was getting up.

Eventually, I completed my M.Phil. and dedicated the degree to Him, after which He denied that He was a Master; for Him *Allah* the most merciful was, is and eternally, will remain the Master.





“*Ahankar tyag do!*” Leave the ego - Throw it out of your system at once. On 27 August 2008, I received the message in a dream that was as follows : My sister was pleading me to bow down and pick up her *dupatta*. I argued and stubbornly, rejected her plea stating - “It is yours. Why should I pick it up?”

It was Shri Sai Baba Who picked it up and humbly requested in Hindi - “*Ahankar tyag do!*” in a soothing tone.

He appeared in the form of actor of Sri Ramanand Sagar’s serial Sai Baba being telecast on Star Utsav at that time. I still remember the day, it was 27 August 2008. It was seconds before 6.30 am and seconds later I got up realizing that I had a dream and came down to tell my mother, who at first told me she had an image of Shri Tulja Bhavani in the dream before she got up. What felt that life was dry, but with these two visions we felt we were experiencing the elixir of life.

Three hours later at 9.30 am, I had to visit KEM Hospital with the same old state of mind-depression.

This is what ego does. It takes one to a height of “I am the most sincere, powerful and within seconds, makes one fall into the inferno - I do not have this, I do not have that – others are better (withdrawal symptoms - depression). It took me two months to accept that I have ego; because the satan in me made me argue with Sai Baba where I was in a denial mode – How come ‘I’ have it? I do not. My inflated ego refused itself - blinded me to accept that I was egoistic.

The ego of staying in a bungalow, ego that I offered water to others, and at the same time - ego that I don’t have this and I don’t have that... frustration and finally recurrence of depression. Ego rose and shot up when after having completed M.A. in English, my elder sister said, I motivated her, and she completed it because of my help; since I completed it before her, calling me *Guru* at times. It also shot up when

I saw my convocation certificate - masters in English language; my ego said - I am a master in this language. Seed of ego sown in third year B.A. when my teacher Prof. J. Lobo said that probably I topped the university in the subject called Logic and Methodology of Science - a subject under Philosophy.

Initially, I completed graduation, my elder sister, who lost her confidence due to distress and epilepsy, left masters in English half way. I went on to complete my master’s degree, where I had Milton’s Paradise Lost, book one as a part of syllabus and the teacher wanted me to present the Biblical references in it. This is an epic poem, where satan is in the form of serpent and often I wondered, why the Holy Bible states that satan as a serpent and snakes regarded as holy in Hindu culture.

The presentation lasted three lectures in a span of four days and suddenly Milton’s magical words made me realize the satan is within us, the humans; but I was not able to identify it.

It took me many days to overcome the hangover of this epic. I kept saying, evil is inside and had lost my calm mind; so again depression and medicines were required to calm my mind - the subconscious that was disturbed unable to find the evil. I was fighting with myself so internal peace was lost.

One evening, I sat on the sofa where Baba’s photo frame was exactly placed above, and I suddenly started crying, realizing Sai Baba is angry with me, unable to understand exactly for what purpose; but I could notice anger in His look; my soul made me believe, He is angry and cried bitterly. My soul beyond my understanding was making me sure that He is angry. I hid my tears from the family; but I cried and later asked for forgiveness, without understanding, why He was angry. It is now that I realize - He was angry with my egoistic nature, back answering, and rebellious, self-centric and spendthrift nature.

Eventually, I concentrated on academics.



My father got assistance and the right person for the plot he had invested in, for building a bungalow, and as Sai had expected, we moved to a new place. Due to immense faith that my parents and we had in Sai Baba, he named the bungalow 'Shri Sai'. This was relevant that He wanted the bungalow to be built from the earlier words - "Vastu sod" ("Leave the house at once!") It was a dream - come true for all of us. My mother was almost cured though she has to visit once in a while for dilatation.

The deep mysterious message of these words, now I realize, if we believe, body is a temple, He was asking the satan in me to leave my body - "Vastu sod!". He still fulfills the promises given to His devotees; one of them being :

**"Sharan maj aala aani vaaya gela, dakhva dakhva aisa koni!"**

**"Show me a person who surrenders himself to me and yet has gone astray!"**

The worst of it was "I prayed therefore she was cured." - This was when I started working in a company using my knowledge for guiding student-writers offline in their assignments. It was an American company, where English was one of the subject and Maths, Statistics, Natural Sciences were other subjects.

One of the colleague's mother was ill. All of us worked overtime and cooperated with her. This reminded me of my friends' help while I was studying and my mother was ill.

I fought with Sai Baba the entire night with tears and anger at same time. "Don't You see, how daughters really love their mothers? Why are You so insensitive towards us? What are You testing us for? It was okay with me; but why she the colleague has to suffer like me, the pain of watching one's mother in trouble had made me empathize with her." I was praying, but fighting more with Him. "You must do something!"

She was a kind friend more than colleague and I could not sleep, nor bear her sorrow and

her stress.

Two days later, I met that friend/colleague. She was relieved. She was stronger than me in handling the situation. She told me that doctors gave better report and were positive of her mother's health. But, what she added was - "Someone from Datta *Guru Sampraday* had come to see her mother and gave some *Prasad* after which recovery was noticeable."

My heart said, it must be Sai Baba, but instead of thanking Him, instead of asking for forgiveness for the fight, the ego had taken its toll. "I prayed, therefore, she got cured" is what academicians like W. N. Dandekar said - "Horns effect" - Satan again.

I was proud that I prayed! After all it was not me alone but all colleagues, relatives and unknown people praying, working, helping her.

**- Minal Vinayak Dalvi**

E-mail : [meenaldv567@yahoo.co.in](mailto:meenaldv567@yahoo.co.in)

Mobile : (0)9226945333



## **Baba's Strange Alchemy!...**

I did my education till 12<sup>th</sup> standard in our Mavadi village, taluka Kalkadu, district Tirunelveli in Tamil Nadu. Basically, being very good in my studies, I wanted to become an engineer. But, the economic condition of our home being very poor, this higher education was beyond our means. I felt very bad that I could not pursue the education of my liking.

My elder cousin brother, Professor Sri M. Ramchandran was at that time serving in Mumbai. He accepted my responsibility. I was sent to him for my further studies. I came to Mumbai in 1993. In Mumbai I saw temples of Shri Sai Baba at several places. Till then I knew nothing of This Sai, Who He was and where from He came. Looking at the devotees doing worship and making offerings, I considered Him a *Sadhu* (ascetic), a Saint.

Meanwhile I applied at several places for my engineering studies. Out of those I got





admission in S.G.S. Engineering College in Kopergaon. I, then went to Kopergaon, where arrangement for my stay was made. I shared my room with a student named Vinod. Vinod's father accompanied him. On the eve of the commencement of the first year engineering studies he took Vinod to Shirdi. He urged me also to accompany them. I would have refused, but on his insistence that Shirdi was only 12 kms. away and we will go and return soon, I agreed to go with them, as further we had to spend four years together in this room and hence, it would be better to establish a comradeship. At that time Shirdi was not congested with huge crowds. We easily had *Darshan*. My mind felt pleasant with that *Darshan* and what a joy to begin the higher studies with the Blessings of Shri Sai Baba!

Then it became a routine of us friends (Me, Vinod and Arun) to get up early in the morning once a month and walk to Shirdi to have Baba's *Darshan*. Days were passing off well.

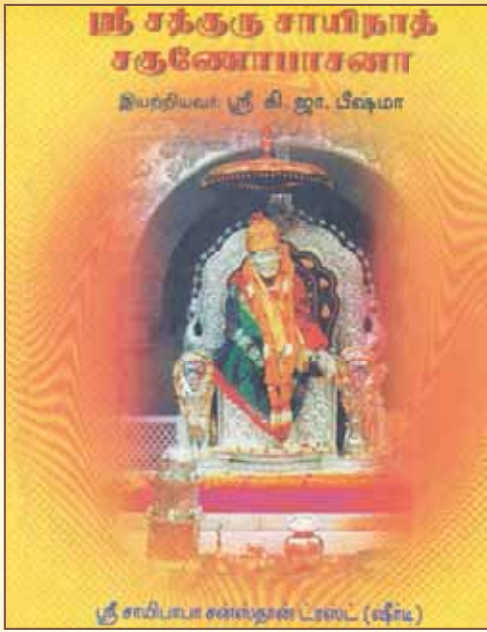
The final examination got over. Papers went well. We got our result. And, I totally collapsed. I had verily failed in one subject! I was stunned. Anyone could easily imagine, how pathetic my condition must have become. My cousin brother was bearing my educational expenses. I was very much fearful of what he will feel. As per our monthly routine we left for Shirdi the next day. Various kind of thoughts were buzzing in my mind. With these thoughts I entered the *Samadhi Mandir*. At that time I remembered that we did not bring *Prasad* (offering) for Baba like always. Since we could not go back, we moved forward. I spoke to Baba from the depth of my heart, 'how did I fail in spite of studying?' My eyes were filled with tears instantly. Mentally prostrating as I was about to move aside, the priest there placed a bag of *Prasad* in my hand. I told him, 'I did not bring any offering. Why are you giving me this?' But, the priest not listening to me, forcefully gave the bag in my hand. At that time I felt that I should apply for re-assessment. I applied accordingly... and with Baba's graceful blessings I passed...

Completing my college studies, I became an engineer and returned to Mumbai. I got a job with Baba's Blessings. During my college studies, I used to go to Shirdi every month. After coming to Mumbai, it was already five years and I could not go to Shirdi. But, my devotion for Shri Sai Baba was only growing day after day...

I was staying in a tenement in Dombivli in Kalyan taluka, Thane district in Maharashtra. Veliah, a friend of mine also stays in Dombivli only. Neither he, nor I knew that we were mutually Sai devotees. By this time I had become known to the Tamil people as a poet - author due to my literary writings in Tamil. Through this I came to know Velia and this acquaintance turned into friendship...

One day Sri Veliah came to my house with 'Shri Sadguru Sainath Sagunopasana', a booklet in Marathi on the *Aaratis* of Shri Sai, published by Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi. He told me that the Sansthan wanted this booklet to be translated in Tamil. I was overwhelmed and thrilled at the priceless opportunity that suddenly came my way... My joy knew no bounds... I considered it my great fortune only. With Baba's grace, I completed the translation of those *Aaratis* in Tamil in 4-5 months.

The hand-written translation was typed on the computer. To make some corrections, I one day went to Veliah's house in the morning at 9 o'clock. Till 6 o'clock in the evening, me, Velia, his wife and another Marathi friend, four of us together corrected the DTP work on the computer. While making the corrections, we were carefully saving the same too. At 6 p.m. I told my associates that I would go home and come back and then complete the balance work! After going home and having my dinner, I returned to Veliah's house at 9 p.m. We started the computer to begin the work and saw that the computer had not saved the work that we had done so far. The mistakes were visible as before. We were bewildered. We debated much on how could this happen. But, could not find answers! Finally we determined to start this work with renewed zeal and complete it today



itself, and taking Baba's Name we re-started the work... and what a surprise! We found more new and newer corrections than earlier... and the work was completed at midnight 12 o'clock. I read those *Aaratis* even today, and reading those words, I cannot believe that I myself thought of or penned these words. It is my strong presumption that Baba only got all this done by me...

After this booklet was published, some of my friends and relatives used to say, you have done such a great work, but what has Baba given you from this? Are you not still residing in a rented premise! But, I knew what I got from this. I got spiritual bliss from this. This cannot be compared with any material things. Today with this booklet Baba has reached my name worldwide. What more do I need! But, Baba would not accept my friends and relatives nagging me, as in 4-5 months, I went to reside in my own home. When I think about how I managed the monetary adjustments for this, it all feels incomprehensible...

I like to read the biography of great people. During one such reading I got to read the biography of a popular leader at the national level, Sri Kamaraj, a man of integrity, a selfless *karmayogi* (person of action), who was chief minister of Tamil Nadu from 1954 to 1963. I was inspired to write a varied form of an unusual

kind of long poetry on the life of his unrivalled, ideal work. In those enthralled days, in full flow of writing that poetry, I myself do not know how the total 1200 pages of the published book was written by me. At this time I realized that effort has to be supplemented by grace.

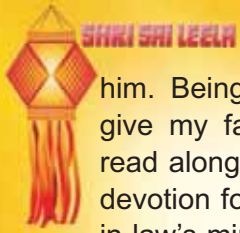
Whenever I called out to Baba, the merciful Baba always came running for me...

One day I encountered a dreadful situation. On that day I got a call from C.S.T. (V.T.) railway station. An unknown person was speaking in Tamil language. That person told me that some people from our community had arrived here. They have to be helped. For that, you give us some help!... saying so that person called me to C.S.T. Actually the person seeking help comes to us. But, why did this person call me there? With this thought coming to mind, I became suspicious. When I took the name of 4-5 prominent people of our community and asked him whether he approached them, he replied in the negative. Then I became more suspicious and ended the conversation. Then that person started contacting me on the mobile again and again. And once he threatened me that if I did not help, he would murder me. I panicked and was frightened out of my senses. When my wife came to know of this, she too was much frightened. We did not know what to do! There was no way out other than Baba. I was sure He alone will bail us out of this. My wife devoutly read the Assurance-form Blessings of Baba given by an ardent female Sai devotee and urged Baba to relieve them from this threat. Surprisingly the call from that stranger ceased from that day...

In December 2013, my sister-in-law and her husband came to our house. We took them to Shirdi. My sister-in-law wanted a teacher's job in Tamil Nadu itself. My wife told her to tell this to Baba and He will surely do your work. Accordingly my sister-in-law pleaded to Baba and within a month she got the job as she wished...

My father-in-law Sri Narayanan contracted cancer eight years ago. Dr. Raja, from our village, practicing in Coimbatore, was treating





him. Being a Sai devotee, the doctor would give my father-in-law books on Sai Baba to read alongwith the treatment. Because of this, devotion for Sai Baba developed in my father-in-law's mind. During the treatment, the doctor took him to the Sai temple in Coimbatore. There, pointing to the idol of Shri Sai Baba, he told my father-in-law that Sai makes possible what is impossible. His words of assurance increased my father-in-law's mental strength. Baba's compassionate eyes kept him engrossed for some moments. 'You look at me, I will look at you', he realized this firm promise of Sai at that moment... He recovered and went to Shirdi too...

Such is all Baba's alchemy! For us, we feel, we exist because Baba is there.

- Sendur Nagarajan

E-mail : [snagarajan1974@gmail.com](mailto:snagarajan1974@gmail.com)

Mobile : (0)9819298455



## Sickness driven away by Sai Treatment!...

Here I will narrate first the experience of my grandson, Ameya, and then that of my late husband, Sri Bhalchandra...

Earlier we used to go to Shirdi with the whole family. After going there, children enjoyed the happiness of having come to their grandparent's house, as we stayed in Shirdi for 8-10 days.

Our grandson Ameya had a lump beside the eyebrow on the right eye from his very birth. With his growing years the lump too grew a bit. After attaining the age of two, the lump became easily visible and people used to ask him, 'what happened'. He used to reply, 'I fell down. The edge of the showcase hit me'.

When we asked the pediatrician, Dr. Gandhi, he said, 'I too have such lumps; let me see if it is growing! If it keeps growing then we will have to do surgery when Ameya grows up. There is no other treatment for this. Our nephew Dr. Kunal also seconded his opinion. My son and me were silent on this. Ever-since the lump

became visible, I used to smear *Udi* (ash from the *Dhuni* lit by Baba) on the eyes of Ameya before Baba and prostrate before Him wholeheartedly. Since Ameya's mother did not have much faith, gradually the regular smearing of *Udi* diminished...

Over a period of time, Ameya began chanting *shlokas* (devotional verses), smearing *Udi* and consuming it too...

When Ameya turned five, I noticed that his eyes had become normal like anyone of us. My eyes were filled with tears of joy and spontaneously my hands folded (in prayer of gratitude)!...

As my husband had undergone surgery for vocal chord cancer, he could not speak. But, that did not deter him from doing anything. He used to do all outdoor work by himself. Every year he used to go to Shirdi in January alone...

He became diabetic in November 2009. His sugar count was 864. The pathologist asked him to go straight to the doctor instead of going home. Looking at the sugar count in the report, the doctor asked him, 'how are you standing? At this stage people go into coma.' My husband was in a generally normal state. He was kept in I.C.U. for four days. After that he used to stroll around casually. All this is Baba's alchemy only!...

My husband merged his life at Baba's Feet in the month of March 2014.

May Baba's Blessings be bestowed on all of us for ever, this is my only prayer at Baba's feet!

- Rekha B. Mahimkar

504/B, 5<sup>th</sup> floor, Divyasrushti,

Gaurav Garden Complex,

Bunder Pakhadi Road,

Kandivli (West), Mumbai – 400 067.

Telephone : (022) 28605138

Mobile : (0)9920610775



## Sai directs to treat!...

I am a gynaecologist by profession.

I believe in Sai Baba since my childhood



days. I inherited this Sai devotion from my parents. My parents took me and my brother, since our childhood days, to Shirdi every year without fail.

Having firm faith in the Supreme Power, I see the *Parabrahma* (Supreme Lord) in Baba.

We have to confront new and newer challenges at every step in our medical profession. We have to treat patients with various types of serious ailments every day. Since such patients were getting cured by me with the grace of Baba, my faith in Baba was getting more and more strong.

As and when a new baby was assisted to be delivered by me, I always saw Sai in that child. I have developed such a close relationship with Baba.

I have had several experiences of Sai Baba in my life. I will narrate one of them that occurred recently...

My maternity home is in Thane. A woman, who delivered here 7 years ago, lives in Dahisar. She was not in touch with me for a long time in the intermediary period...

Recently, I got a call from her husband all of a sudden on Thursday. In a frightened tone he said, 'Due to extreme pain she has been admitted at a nearby hospital. The doctors there are saying that her ovaries have swollen in a big way and several complications have developed there. Her life would be threatened, if immediate surgery is not done. We have full faith in you only and you alone can save us from this grim situation. Therefore, we have decided to come to you.'...

Due to heavy pressure of work on that day I was very tired. But, I could not avoid them. I waited for them...

They came quite late in the evening. She was writhing in great pain. I immediately examined her. The haemoglobin count in her body was only 5 grammes. Stating that this was very dangerous, my associates avoided assisting me in this case. My anaesthetist suggested a general surgery. Being an endoscopic surgeon, I knew that it was possible to get rid of the complications soon though endoscopy. My

inner voice was telling me to do this. To gather strength, I prayed to Sai Baba sincerely. The surgery got over in the next 10–15 minutes. After administering blood to that female patient and completing her treatment, she was completely cured and went home happy after three days. We doctors make all-out efforts to cure patients. But, for it to be successful, the Merciful Blessing of the Supreme Power, the Lord of Lords Sai is very significant.

- Dr. Jyoti Saingankar

E-mail : [jyotisaingankar@yahoo.co.in](mailto:jyotisaingankar@yahoo.co.in)

Mobile : (0)9820143560



## I did not believe in Sai Baba, began accepting Him as my God!...

I am narrating here my first experience of Sai Baba...

All Goddesses and Gods are worshipped in our house. So also Sai Baba. Every evening we do the 'Aarati Sai Baba' Aarati...

In the beginning I did not believe in Sai Baba. But, in course of time because of my elder aunt, I got pulled to Sai devotion. She always narrated her experiences of Sai Baba. Hence my devotion for Sai grew...

My mother got jaundice in 2004. The jaundice began aggravating very much. Hence it was decided to administer saline immediately. But, her veins could just not be traced. Even our family doctor started getting worried. I had faith in Shri Sai Baba. I took my mother to the blood bank and got her blood tested. In that too her jaundice had not come down. I mentally prayed to Baba, 'Baba, let my mother's jaundice decline!'.... Baba heard me. In merely two days my mother's jaundice vanished!

- Deepa Prataprao Ghatage

Matruchhaya Bungalow No. 1,  
New India Mill, Sampatrao Colony,  
Opp. Maitri Hospital,  
Beside Skylab Hotel, Jetalpur Rd.,  
Vadodara – 390 005, Gujarat.







## अनंत, सर्वव्याप्त, त्रिकालदर्शी, सर्वसाक्षी साईं...

श्री साईं बाबा सर्वव्यापी हैं और विश्व में व्याप्त रह कर भी 'अनंत' हैं। बाबा स्वयं सगुण रूप धारण कर अवतीर्ण हुए और लोगों को ज्ञान, श्रद्धा, भक्ति, दया, निःस्वार्थ प्रेम आदि से परिपूर्ण कर मानव का कल्याण करते रहे एवं आने वाले समय में भी इसी भाव से पूर्ण प्रेरित होकर आगे भी करते रहेंगे।

जब हम अपने आपको साईं प्रभु की असीम भक्ति में डूब कर उस भाव को हृदय में सँजो कर रखते हैं, तो यह भक्ति आध्यात्मिक साधना तक सीमित न रह कर हमारे प्राणों में रच-बस जाती है। ऐसे लोग ईश्वर को व उस प्रभाव को साईं प्रतीति के लिए लोगों तक पहुँचाते हैं।

आज की परिस्थिति में मनुष्य भागदौड़ और जीवन की बदलती स्थिति के कारण अनेक बीमारियों का सामना कर रहा है। कई क्षण मनुष्य के जीवन में रंग बदलते हैं। सौ वर्ष पहले भी उस युग में मनुष्य के जीवन में समस्याएँ रही हैं, भले ही उनका ढंग दूसरी तरह का रहा हो! मुख्य बात तो यह है कि हमें बाह्य मुखी न रह कर अंतर्मुखी रहना चाहिए। तभी हम शांत अवस्था प्राप्त कर सकते हैं और यह शांति प्राप्त करने के लिए हमें अपने व्यस्त समय में से कुछ समय ध्यान के लिए देना चाहिए। धीरे-धीरे अभ्यास से हम अपने आप प्रवृत्त होंगे। अंतर्मुखी होने पर मन अपने स्वरूप में विलीन होने लगता है तथा लगातार अभ्यास से एक परम शक्ति, जो सभी के अंदर विराजमान है, का अनुभव कर परमानंद को प्राप्त होता है। इस क्रिया में हम इंद्रियों और मन को उनके विषय पदार्थों से अलग करके अंतर्मुखी होकर 'आत्मा' पर केंद्रित करते हैं, उस समय ध्यान की यह विशेष अवस्था होती है।

बाबा ने भी ध्यान पर विशेष संदेश लोगों को दिया है। ध्यान से चित्त शुद्ध होता है। मनुष्य वेद-वेदांत से कितना भी पारंगत क्यों न हो, उसे अपने निश्चित स्थान पर पहुँचने के लिए किसी न किसी मार्गदर्शक की आवश्यकता जरूर पड़ती है; और वह मार्गदर्शक है 'कलयुग के राजाधिराज हमारे सद्गुरु साईं'। जैसे लहर सागर का अंग है उसी तरह मनुष्य में विराजमान आत्मा भी परमात्मा का अंश है। श्री सद्गुरु साईं नाथ महाराज के ध्यान से जो आनंद प्राप्त होता है वह दुनिया के किसी भी आनंद से श्रेष्ठ है। उसी सोच से सच्ची सुख-शांति मिलती है। ध्यान में जब एकाग्र भाव आ जाता है, तब उसके समतुल्य कोई दूसरी साधना नहीं होती। ध्यान करने पर हम अपने में ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के दर्शन कर सकते हैं। ध्यान के माध्यम से कुप्रवृत्तियाँ स्वतः शांत हो जाती हैं, यह साईं बाबा ने अपना स्वयं का उदाहरण देकर बताया कि उनके गुरु (बाबा स्वयं अपने आप में सद्गुरु एवं पूर्ण हैं) ने उनको एक कुँए के निकट ले जाकर उनके पैर रस्सी से बाँध दिये और उनका सिर नीचे और पैर ऊपर करके कुँए में पानी से तीन फुट की ऊँचाई पर उल्टा लटका दिया। कुँए का पानी न तो मुँह में जा सकता था और न ही हाथों से पानी को छुआ जा सकता था। वे उनको उल्टा लटका कर कहीं चले गये। पुनः चार-पाँच घंटों बाद जब वापस आये, तो उन्होंने बाबा को कुँए से तुरंत बाहर निकाल कर पूछा कि "वहाँ कैसा अनुभव हुआ?", तब बाबा ने बताया, "मैं परम आनंद का अनुभव कर रहा था, जैसे किसी महान आत्मा का आसन सिद्ध हो, अर्थात् जिसने संसार त्याग कर ध्यान में प्रगाढ़ता पाकर ईश्वर के साथ अभिन्नता प्राप्त कर ली हो, वही इतने अधिक समय तक रस्सी से लटके रहने पर दुःख का अनुभव न कर परम आनंद का अनुभव कर सकता है।" यह समाधि वाली स्थिति है। हमें तो साईं महाराज का ध्यान कर अपना सब कुछ उन्हें ही अर्पण करना है। साईं तो अनंत, त्रिकालदर्शी, सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी हैं; और इस कलयुग में हर प्राणी को उनके दर्शन मात्र से अपने जीवन को तारने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। इन्हीं शब्दों के साथ अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक राजाधिराज योगिराज परब्रह्म श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईं नाथ महाराज के चरणों में शीघ्र झुका कर सादर कोटिशः प्रणाम।

- वंदना दवे -

६१६/९, आनंद कालोनी, चेरिताल वार्ड, जबलपुर - ४८२ ००२, मध्य प्रदेश.

ई-मेल : [vandanadave55@gmail.com](mailto:vandanadave55@gmail.com) संचार ध्वनि : (०)९४२५१६०३३६

## \* साईं अनुभव \*

### साईं जग के तारणहार!...

अपनी जन्मदात्री माँ के देहावसान के बाद मैंने बाबा साईं नाथ को जाना। माँ साईं भक्त थी, शायद इसी से धरती से विदा होते वक़्त मेरी अँगुली बाबा के हाथों में पकड़ा गई। ४.१.२००५ को मुम्बई में माँ ने शरीर त्यागा। मैं बिहार के दरभंगा में पद स्थापित थी। लम्बी दूरी पर रहने के कारण मुझे उनके अंतिम दर्शन भी नहीं हो सके थे। पवन एक्सप्रेस, दरभंगा से जब मुम्बई पहुँची, माँ का अंतिम संस्कार हो चुका था। परिस्थितियों वश मैं जीवन में अकेली रह गई थी, अब माँ के भी नहीं रहने का शोक मुझे मानसिक रूप से असंतुलित कर गया था।

२३ जनवरी २००५ को पूर्वाह्न १०.३० में मैं इतनी असंतुलित हो गई कि देह विसर्जन की मनःस्थिति बन गई; अंतिम क्षण सामने था इस संकल्प के साथ “माँ नहीं, तो मैं भी नहीं”, ठीक इसी वक़्त किसी ने कॉल बेल बजाई। पता चला कि प्रमण्डलीय आयुक्त किसी सरकारी कार्यवश मुझे तुरन्त बुला रहे हैं; और बुलाने वाले को मुझे साथ लेकर ही आने को कहा है।

सरकारी दायित्व ने मानसिक पीड़ा को एक किनारे किया और मैं चली गई। बातों के क्रम में मेरी पीड़ा भी उजागर हो गई। तत्कालीन प्रमण्डलीय आयुक्त डा. के. पी. रामय्या साईं भक्त हैं। उनके कक्ष में बाबा की एक बड़ी तस्वीर थी। उन्होंने बाबा की तस्वीर की ओर इशारा करके कहा - “अब यही आपकी माँ है।” और उन्होंने मुझे बाबा की एक छोटी तस्वीर और उदी दी। मेरा मन धीरे-धीरे शांत होने लगा - फिर डा. रामय्या ने मुझे शिर्डी जाने को प्रेरित किया। जून २००५ में मैंने पहली बार शिर्डी जाकर बाबा के दर्शन किये; और मेरी सोच सकारात्मक होने लगी। फिर तो बाबा की कृपा से साल में एक बार शिर्डी जाने का क्रम सा बन गया।

जनवरी २००९ के प्रथम सप्ताह में मैं शिर्डी में थी। वहाँ श्री साईं सत् चरित तथा पारायण कक्ष के दर्शन हुए। १४ जनवरी २००९ को मकर सक्रांति के दिन से मैंने श्री साईं सत् चरित का साप्ताहिक पारायण प्रारम्भ किया, जो आज की तिथि तक बाबा की कृपा से निर्विघ्न निरंतर चल रहा है। बाबा की अनुभूति मुझे क़दम-क़दम पर

होती है। मुझे लगता है, हर क्षण, हर वक़्त बाबा मेरे साथ है। संकट आते हैं, पर बाबा की कृपा से मुझे छुए बग़ैर निकल जाते हैं - दो बार तो बाबा मुझे मौत के मुँह से खींच लाये।

अक्टूबर २०११ - मैं शिर्डी में थी। मैंने बाबा से कहा, “बाबा, अब नौकरी बहुत ज्यादा दिन नहीं है। अब तक तो सरकारी आवास में रहती रही; पर सेवानिवृत्ति के बाद कहाँ जाऊँगी? मैं तो इस लायक ही नहीं हूँ कि घर बनवा सकूँ। न तो पैसा है, और न ही सामर्थ्य। एक ‘साईं निवास’ बनवाइये न; और उसमें एक कमरा मुझे रहने को दीजिए।”

और हुआ वैसा ही! जनवरी २०१३ में तीन कमरों का एक छोटा सा फ्लैट ‘साईं निवास’ बन गया। मास्टर बेडरूम में बाबा रहते हैं, बाबा का दरबार सजा है और एक कमरे में मैं रहती हूँ। बाबा की सेवा करती हूँ। दूसरे कमरे में मेरी सेविका रेणु और बिटिया अर्पणा रहती है। अर्पणा को जन्म रेणु ने दिया है; पर वह ‘माँ’ मुझे कहती है - यानी बाबा ने मुझे नारीत्व का सबसे बड़ा सुख - मातृत्व का सुख भी दे दिया है।

अब नवीनतम अनुभूति -

२२ जुलाई २०१३ को गुरुपूर्णिमा थी। मैं मेहुली स्थित ‘छोटा शिर्डी साईं धाम’ (पुनपुन, पटना) गई और बाबा से कहा - “बाबा, कल एक छोटा सा भजन कार्यक्रम कराना चाहती हूँ। कैसे होगा, मैं नहीं जानती; बस करा दीजिए! मुझे सशरीर अपनी उपस्थिति का अहसास करा दीजिए!!” भजन हुआ, लगभग १२५ लोग जुटे और भावविभोर होकर बाबा का भजन किया। उसी दिन शिर्डी से गुरुपूर्णिमा का आमंत्रण पत्र और उदी-प्रसाद भी पटना घर पर पहुँचा। मुझे लगा, बाबा शिर्डी से यहाँ आ गये। भजन के समय मुझे तीन जीव ऐसे दिखें, जो मुझे लगा कि वे बाबा हैं - एक वामन मात्र ढाई फ़ीट लम्बे ३५ वर्षीय सज्जन, जो भजन मण्डली के साथ भजन गाने आये थे - हरे रंग की टी शर्ट और भूरा पैंट पहने एक अनजाना सा सेवक जैसा व्यक्ति, जो बिना कहे लोगों को पानी पिला रहा था - और एक मक्खी, जो पूरे कार्यक्रम के दौरान मेरे हाथ पर बैठी रही। मैं नहीं जानती, उनमें कौन से जीव के रूप में बाबा आये थे; पर उन तीनों को मैंने बाबा का ही रूप माना और मेरा विश्वास है कि उन तीनों में किसी न किसी एक रूप में बाबा निश्चय ही आयोजन में उपस्थित थे।





अब बाबा से मैं कुछ माँगती नहीं; बस उन्हें धन्यवाद देती हूँ, यह कहती हूँ -

“बाबा साईं नाथ! मुझे एक निर्मल स्वच्छ मन-प्राण और बुद्धि का आशीष देने के लिए धन्यवाद; क्योंकि अब मैं सिर्फ आपके बारे में ही सोचती हूँ। बाबा! मुझे ऐसा कृतज्ञ बनने का आशीष देने के लिए धन्यवाद; अब मैं उन लोगों को सादर याद रखती हूँ, जिन्होंने कभी मेरी मदद की है। बाबा! मुझे एक संवेदनशील हृदय का आशीष देने के लिए धन्यवाद; अब मैं दूसरों की भावनाओं को समझ पाती हूँ और कभी उनका दिल नहीं दुखाती हूँ। बाबा! मुझे क्षमाशील बनने का आशीष देने के लिए धन्यवाद; अब मैं उन लोगों को माफ़ कर पाती हूँ, जो मुझे तकलीफ़ पहुँचाते हैं।

बाबा! मुझे सरल और सहज बनने का आशीष देने के लिए धन्यवाद; अब मैं तन-मन-प्राण से उन लोगों के करीब रह पाती हूँ, जिन्हें मेरी ज़रूरत है। बाबा! मुझे प्रसन्नता का, आनंद का आशीष देने के लिए धन्यवाद; अब मैं अपने करीब रहने वालों और प्रिय लोगों के जीवन में खुशियाँ लाने में सहयोगी बनती हूँ। बाबा! मुझे ऐसी अनुभूति का आशीष देने के लिए धन्यवाद; क्योंकि मैं यह जान पाई कि आपको समर्पित जीवन कितना खूबसुरत और निश्चित होता है।

मुझे इस अनुभव का आशीष देने के लिए धन्यवाद बाबा! कि मैं यह जान पाई कि आप मेरे हृदय में अन्तर्यामी की तरह रहते हैं; और मैं यह जान पाई कि मुझमें साईं हैं; मैं नहीं हूँ; साईं ही हैं और दुनियाँ के सभी जीवों में, जिन्हें मैं अपने आस-पास देखती हूँ, साईं ही हैं।

बाबा! मैं जहाँ भी जाती हूँ, जो कुछ भी करती हूँ, उसमें आपको ही देखती हूँ। सभी स्थानों पर मुझे अच्छे, भले लोग ही मिलते हैं; क्योंकि उन सबमें आप ही बसते हैं।

बाबा! मुझे एक निर्मल, स्वच्छ मन और बुद्धि का आशीष देने के लिए धन्यवाद। बाबा! मेरे तन-मन-प्राण को अपनी इच्छा के अनुरूप चलने का आशीष देने के लिए धन्यवाद।

- नीलम पाण्डेय

उप निदेशक,  
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, सूचना भवन,  
बेली रोड़, पटना, बिहार.

ई-मेल : [neelam.one@gmail.com](mailto:neelam.one@gmail.com)  
संचार ध्वनि : (0)९४३१४५०६०६



## साई का प्यार दुलार कछुवी के समान!...

श्री पी. शिवशंकर राव सिकंदराबाद-हैदराबाद के विद्यानगर-निवासी हैं और उन्हें साईं बाबा का स्वप्न आज से लगभग ८ वर्ष पहले हुआ था। उन्होंने देखा कि साईं बाबा कार में बिठा कर बहुत दूर ले गये और एक पेट्रोल पम्प पर रोक उन्हें छोड़ कहीं चले जाना चाह रहे थे। स्वप्न में कोई साईं मंदिर पेट्रोल पम्प स्टेशन के पास नहीं दिखा; परन्तु प्रत्यक्ष में वहाँ एक साईं मंदिर है। राव उनके पीछे दौड़े, वहाँ एक कार आई और वह साईं के साथ उसमें बैठ गये। फिर आगे बढ़ गये। थोड़े समय बाद साईं और कार अन्तर्ध्यान हो गये। साईं मंदिर पर वह अकेले रह गये। स्वप्न के बाद वह सोचते रहे, वह मंदिर कहाँ होगा? फिर एक दिन बस द्वारा विद्यानगर से २३ कि.मी. दूर कोडापुर, घाटकेसर मण्डल जाना पड़ा, तो वहाँ मंदिर साकार दिखा, जहाँ बाबा उन्हें छोड़ कर जा चुके थे। बात २००८ की है - तब से राव व उनका परिवार मंदिर से जुड़ा हुआ है। उनको साईं बाबा की सहज उपस्थिति इस मंदिर में होती है। साईं के अनुभव होते रहते हैं यहाँ पर। सर्वप्रथम १२ फीट X १२ फीट आकार का ४ गोल खम्भों पर छत, ३ ओर दीवार और सामने ग्रिल शटर लगा मंदिर निर्मित किया गया, जिसके अंदर ऊँचे आसन पर बाबा की प्रतिमा आसीन की गई। इसके आगे मंदिर विस्तारण के लिए, खुदाई होने के पश्चात् बाबा के निर्देशानुसार कार्य स्थगित कर दिया गया। बहुत समय नहीं हुआ, और खुदे हुए स्थान पर स्वयमेव कद्दू का पौधा उग आया; फिर लता रूप में चारों ओर फैल गया, जिसमें १ या २ किलो के फल निकलने लगे। साईं के निर्देश पर उनको ग्राम में बाँट दिया गया। उसके बाद कद्दू के झाड़ को हटाने पर एक कछुआ बाहर निकल आया - वहाँ खुदे हुए गड्ढे से। वह चार दिन तक मंदिर परिसर में घूमता रहा और फिर अदृश्य हो गया। कछुवे का वर्णन श्री साईं सत् चरित के १९वें अध्याय में है, जो गुरु और शिष्य के संबंध को उजागर करता है - कछुवी और उसके छोटे छोटे 'कछु' बच्चों का नाता :- उनका परस्पर संबंध - पूर्ण व्यावहारिक, नैसर्गिक और अति आत्मिक। जिस अद्भुत दृष्टि से एक कछुवी अपने छोटे छोटे बच्चों को, नदी के उस पार से निहारती भर है और दृष्टि से ही उनको अमृततुल्य आहार और आनंद प्रदान करती है - वह अद्भुत है। न वह उनको दूध पिलाती है,



न ही हृदय से लगाती है। मात्र, उसकी प्रेम भरी दृष्टि से ही बच्चों का भरण-पोषण हो जाता है। वे, कछुवी के छोटे बच्चे भी, कुछ न करके केवल अपनी माँ को याद करते रहते हैं। साईं बाबा कहते हैं कि ऐसा ही गुरु और शिष्य का संबंध है। गुरु अपने शिष्य का पूर्णरूपेण ध्यान रखते हैं। उसकी सारी ज़रूरतों को, अभावों को पूरा करते हैं। उसके पथ-प्रदर्शक बनते हैं। उसको भवसागर से पार कराते हैं। साईं (गुरु) शिष्य को निहारते हैं और शिष्य अपने सर्वस्व, सद्गुरु को निहारता है। यह परमानंददायक स्थिति है, आत्मानुभूति की दशा है।

जब उक्त मंदिर की स्थापना हो रही थी, तो साईं बाबा की प्रतिमा को बाहर से भीतर ले जाकर प्रतिष्ठित करने में मूर्ति का हिलाना सम्भव नहीं लग रहा था। किसी भक्त ने राय दी कि साईं भजन किया जाये। साईं भजन उत्साह पूर्वक, श्रद्धा के साथ हुआ। तदुपरान्त साईं की प्रतिमा को भक्त सरलता से भीतर ले जा सके। यह साईं की कृपा नहीं है, तो क्या है! इसी तरह बाबा का अभिषेक - जलाधिवास करने में पानी कम पड़ रहा था कि अचानक मूसलाधार वृष्टि हो गई। यह साईं की कृपा नहीं है, तो क्या है!

श्री पी. शिवशंकर जी आज-कल सभी दिन साईं बाबा के मंदिर में हाज़िरी देते हैं। साईं भक्तों को मंदिर में आकर दर्शन मिले, कृपा मिले - यही उनके निजी जीवन का लक्ष्य है। बाबा के अनुभवों से वे आविर्भूत रहते हैं।

साईं अनुभवों से अवगत : **श्री पी. शिवशंकर राव**  
१-९-६९९/७००, फ्लैट नं. ४०८, एडन एनक्लेव,  
अदिकमेट, हैदराबाद - ५४० ०४४, तेलंगाणा.  
संचार ध्वनि : (०)९७०५२५५६९६, ८७९०५७९८५०  
संकलनकर्ता : **विजय कुमार श्रीवास्तव**  
लखनऊ, उ. प्र.



## जब साईं की कृपा बरसती है...

श्री साईं चरित्रायण (शिर्डी के साईं बाबा प्रभु का सम्पूर्ण जीवन चरित्र रामायण की भाँति दोहों व चौपाइयों में वर्णित) के रचनाकार डा. देवकीनंदन खण्डेलवाल शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) से सन् १९९६ में प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त हुए हैं। वे सन् १९९० से ही स्थानीय अखबारों में विज्ञान, टेक्नालाजी सहित सभी प्रकार के सामाजिक विषयों पर लिखते रहे हैं। पिछले अनेक वर्षों से रायपुर, नागपुर, पुणे, मुम्बई से एक साथ प्रकाशित होने वाले हिंदी दैनिक समाचार-पत्र 'नवभारत' के वे स्थायी स्तम्भ लेखक हैं।

ईश्वरीय प्रेरणा से पिछले चार-पाँच वर्षों पूर्व से मैंने सभी देवी-देवताओं की स्तुति में भजनों की रचना प्रारम्भ की। फिर 'देवकीनंदन भजनमाला' के शीर्षक से सभी भजनों की पुस्तक प्रकाशित कर भक्तों में निःशुल्क वितरित की।

एक दिन मुझे अचानक ऐसा आभास हुआ कि कोई शक्ति शिर्डी के साईं बाबा के भजनों की रचना करने का आदेश दे रही है। तब मैंने उस आदेश को शिरोधार्य कर लगभग ७५ भजन बनाये। इसके साथ दो मधुर आरतियाँ, श्री साईं चालीसा (हनुमान चालीसा के समान) और श्री साईं चरित्र दोहावली लिख कर उनको इसमें शामिल किया। उस समय रायपुर के पुलिस विभाग के आई. जी. समेत साईं बाबा के एक अन्य परम भक्त ने इसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित कर आर्थिक योगदान भी दिया। फिर 'श्री साईं भजनमाला' के शीर्षक से २००० प्रतियाँ छपवा कर उनका भक्तों में वितरण किया गया।

इस भजनमाला के पूरा होते ही मुझे प्रतिदिन ऐसी प्रेरणा मिलने लगी कि 'अब तुम श्री प्रभु साईं बाबा का सम्पूर्ण जीवन चरित्र दोहों, चौपाइयों, छंदों की कविता में वैसा ही बनाओ जैसे भक्त सन्त तुलसीदास ने प्रभु श्री राम का चरित्र 'रामायण' में लिखा है। मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ कि मैं एक साधारण व्यक्ति इतना बड़ा ग्रन्थ कैसे लिख सकूँगा? किन्तु, मुझे बारबार यह ध्वनि मिलती रही कि 'तुम लिखो; तुम्हें पूरी सहायता मिलेगी।' इसके अनुसार जब मैंने लिखना शुरू किया, तो सर्वप्रथम गणपति को प्रणाम किया। प्रतिदिन एक घंटा लिखता था। उस अवधि में बहुत आसानी से साईं बाबा के चरित्र को शुरू से कविता अर्थात् दोहों-चौपाइयों में ढालता रहा। ऐसा लगता था कि उस एक घंटे में प्रत्यक्ष श्री साईं बाबा मेरे मन और बुद्धि में विराजते रहे। उस एक घंटे के पहले व बाद में तो कुछ भी नहीं लिख सकता था।

अंततः एक वर्ष के परिश्रम से श्री साईं प्रभु के सम्पूर्ण जीवन का वृत्तान्त तुलसीदास जी की रामायण के समान पूर्ण लिखा। इस लेखन कार्य के प्रत्यक्ष गवाह मेरे पड़ोसी महावीर ऑफ़सेट प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री प्रदीप जैन जी हैं, जो प्रतिदिन आकर मेरी लिखित रचना को पढ़ते थे।... और अब आगे यह आश्चर्य है कि मैं लाख प्रयत्नों के बाद भी किसी अन्य सन्त के जीवन या उनकी स्तुति





की रचना नहीं कर पा रहा हूँ। अब लेखनी चलती ही नहीं है। अर्थात्, स्पष्ट है कि 'श्री साई चरित्रायण' पुस्तक की रचना स्वयं श्री साई बाबा ने की है। मैं तो केवल एक माध्यम था। यह साई बाबा का प्रत्यक्ष चमत्कार है।

अर्थात्, निष्कर्ष यही है कि श्री साई बाबा अब निराकार रूप में सर्वत्र उपस्थित हैं।... और वे जो कार्य कराना चाहते हैं, उसका आदेश स्वयं देते हैं। मेरा परम सौभाग्य है कि श्री साई प्रभु ने 'श्री साई चरित्रायण' (अर्थात् श्री साई रामायण) ग्रन्थ की रचना के लिए मुझे चुना। मेरा तो यह जीवन धन्य हो गया है।

- देवकीनंदन खण्डेलवाल

गीता नगर, चौबे कालोनी,  
रायपुर - ४९२ ००१, छत्तीसगढ़.  
संचार ध्वनि : (०)९६३०६५५१७७



## बाबा ने लाल चुनरिया ओढ़ाई!...

साई बाबा की महिमा का वर्णन करने की योग्यता मुझमें नहीं है; अतः बस मैं उन पलों की बात करूँगी, जिनमें बाबा ने अपना साक्षात्कार मुझ पर होने दिया।

यह बात २ नवम्बर, २०१३, दिन शनिवार, छोटी दीपावली का दिन, रात्रि साढ़े आठ बजे की है। मैं घर के पास स्थित साई मंदिर में बाबा के दर्शनों के लिए गई। शनिवार का दिन होने की वजह से शनि मंदिर के सामने भक्तों की लम्बी क़तार लगी हुई थी। मैंने देखा, साई बाबा के सामने कोई क़तार नहीं है; अतः बाबा के सामने जाकर मैंने पेड़ा, नारियल, फूल पुजारी को थमा दिया तथा स्वयं बाबा की चरण-पादुकाओं पर अपना माथा रख कर, आँखें बंद कर, दीपावली की बधाई देते हुए प्रार्थना करने लगी। कुछ पलों के बाद जब मैंने आँखें खोली, तो मैं क्या देखती हूँ कि मेरे सर पर आधे मीटर की लाल चुनरिया, गोटे वाली, सुनहरी जरी वाली, जो सर व माथे को ढकते हुए, दोनों कंधों को समानुपातिक ढंग से ढकते हुए, ओढ़ाई गई है! कुछ ही पलों में इतने जतन से, सलीके से यह लाल चुनरी मुझे कौन ओढ़ा सकता है? मैंने बाबा की ओर देखा। बाबा जी रात्रि के सादे वेश में विराजित बैठे हुए थे। नवरात्रि का त्यौहार बीते हुए काफ़ी दिन हो चुके थे। मैं अत्यन्त शांति का अनुभव करते हुई उठी, लाल रंग की, जरी, गोटे वाली चुनरी सर पर ओढ़े-ओढ़े मैंने सम्पूर्ण मंदिर के दर्शन किये, शनि मंदिर में प्रसाद चढ़ाया

तथा सारे रास्ते पैदल चल कर, मैं घर आई। जिसने भी बाबा की यह लीला को सुना वह दंग रह गया।

मैं जब भी श्री साई सत् चरित का पारायण करती हूँ, इस जरी वाले शेले को सिर पर ओढ़ लेती हूँ। बाबा की इस अद्भुत लीला को हम सांसारिक इन्सान क्या जाने! बाबा के हाथों में मेरा जीवन है। मुझे बाबा का आशीर्वाद मिल गया।...

## साई बाबा मेरे औलिया निजामुद्दीन!...

यह बात सन् २००७ की है। हम बाबा के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते थे। हमारी कालोनी में बाबा के भजन, सत्संग होते रहते थे तथा हर कार्यक्रम को हमें देखने तथा भजन में शामिल होने के लिए हमें बुलाया जाता था; पर कुछ समझ में नहीं आने की वजह से हम सिर्फ औपचारिकता वश चले जाते थे। बाबा कौन हैं, उनकी कृपा हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं, हमें करना क्या होगा? कहते हैं, सद्गुरु अपने शिष्यों को स्वयं ढूँढ़ते रहते हैं। श्री साई बाबा ने पैरों में धागा बाँध कर चिड़िया के समान मुझे अपनी ओर खींचा।

टीवी, समाचार पत्रों तथा मित्रों के द्वारा बताया जाने पर दिल्ली के लोधी रोड़ स्थित साई मंदिर में बाबा के दर्शन करने हम सपरिवार जाने लगे। उन्हीं दिनों बाबा ने एक रात्रि दिव्य दृष्टान्त का अनुभव कराया। मैंने देखा कि एक मस्जिदनुमा भवन है, जिसमें ऊँचे गुम्बद हैं तथा यह मस्जिदनुमा संरचना हरे तथा सफ़ेद रंगों से पुती हुई है। इस भवन के बाहर यानी प्रवेशद्वार पर श्री साई बाबा हरे रंग की कफ़नी पहने हुए मेरी ओर देख कर मंद-मंद मुस्करा रहे हैं। श्री साई बाबा दुबले-पतले हैं तथा भवन के सामने, सिर से पाँव तक लम्बे - हरे रंग के चोगे को पहने हुए, दिवार के सहारे खड़े होकर मेरी ओर टुकुर-टुकुर देख कर मुस्करा रहे हैं। इस दृष्टान्त का अनुभव होने पर मैं हैरान थी।

कुछ दिनों के बाद हम लोधी रोड़ स्थित साई मंदिर गये तथा वहाँ से हम पहली बार निजामुद्दीन औलिया जी की दरगाह पर चले गये। चादर, इत्र, फूल खरीदने के पश्चात् हम जैसे ही दरगाह की तरफ़ बढ़े यह देख कर मैं दंग रह गई कि यह वही दरगाह (भवन) है जिसके सामने मैंने स्वप्न में श्री साई बाबा को हरे रंग की कफ़नी पहने खड़े हुए, मुस्कराते हुए देखा है।



हुबहू अपने स्वप्न को सामने सत्य होता देख कर मुझे भान हो गया कि साई बाबा ही निजामुद्दीन औलिया हैं। बाबा राम, रहीम, रहमान, जीसस, गुरुनानक हैं। बाबा वेद, पुराण, गीता-कुरान भी है। बाबा ही अल्लाह, पीर, पैगम्बर हैं। बाबा तो सर्वव्यापक हैं।...

## बाबा ने रामरक्षास्तोत्र दिलाया!...

मैं बहुत दिनों से श्री रामरक्षास्तोत्र का पाठ करना चाहती थी। पूजा-पाठ सामग्री की दुकानों पर यह पुस्तक उपलब्ध नहीं थी।

११ अप्रैल २०१४ को मैं घर से यह सोच कर मार्केट गई कि आज मैं अनेक पुस्तक भण्डारों पर तथा पूजा-पाठ की दुकानों पर इस स्तोत्र का पता करूँगी। मेरी योजना इस पुस्तक को खरीदने के बाद साई बाबा मंदिर जाकर, बाबा के चरणों में अर्पित करने की थी। जब मैं मार्केट पहुँची, तो ज्ञात हुआ कि चुनाव की वजह से आज दुकानें नहीं खुलेंगी। मैं निराश होकर साई बाबा मंदिर में गई तथा दर्शन करते समय मैंने मन ही मन अपनी इच्छा बाबा को बताई। बाबा तो अन्तर्यामी हैं, मेरे मन की बात तो उन्हें ज्ञात ही थी। खाली हाथ घर वापस लौटने से पहले मैं एक बड़े से जनरल स्टोर में गई तथा संकोच के साथ पूछा, “क्या आपके पास श्री रामरक्षास्तोत्र है?” स्टोर के मालिक ने मुझे गौर से देखा तथा एक कोने में रखे ढेर सारे सामान के बीच, अखबारों के नीचे से खींच कर एक पुस्तिका निकाली और मुझे देने लगा। मैंने कहा, “यह तो आरती संग्रह है; यह नहीं चाहिए।” वह बोला, “मेरे पास तो यही है; इसमें सभी आरतियाँ हैं; आपके काम आयेंगी।” मैंने कहा, “नहीं; मेरे पास यह उपलब्ध है। नहीं चाहिए।” वह आग्रह करने लगा - “ले जाइए; इसे पढ़िए।” मैं उसे पैसे देने लगी, तो उसने साफ़ मना कर दिया। मैं बेमन से उस पुस्तक को घर जाकर पन्ने पलटने लगी। अचानक श्री रामरक्षास्तोत्र नामक अध्याय सामने देख कर मेरी खुशी का पारावार न रहा। मैं अत्यन्त उत्साहित होकर बाबा का जयकारा करने लगी। बाबा भक्तों की शुभ इच्छाओं को पूरी करने में तनिक भी देरी नहीं करते।...

## “दुर्गा स्तुति का पाठ करो!”...

यह अद्भुत, विलक्षण, अनुपम दृष्टान्त १० मार्च, सन् २०१० का है।

इस दिन रात्रि २ बजे मुझे विलक्षण अनुभूति हुई। मैंने स्वप्न में देखा कि हरे-भरे खेतों के बीच में एक मेढ़ पर साई बाबा एक दिव्य धीमी गति से चलते हुए जा रहे हैं... तथा वातावरण में यह आवाज़ गुँजायमान हो रही है - “साई बाबा, साई बाबा, साई बाबा”। साई बाबा के दाहिने हाथ में एक जलता हुआ दीपक है। मैं बाबा की आवाज़ सुन कर दौड़ कर उनकी तरफ़ जाती हूँ, तभी बाबा मेढ़ पर पैरों को लटका कर बैठ जाते हैं। मैं देखती हूँ कि अन्य गाँव वाले भी भागे-भागे आ रहे हैं। मैं बाबा के पैर दबाने लगती हूँ। बाबा के पैर पतले, साँवले तथा वृद्ध के समान हैं। मैं बाबा से कहती हूँ, “बाबा बड़े कष्ट इस जीवन में हैं; मेरा उद्धार करो, यातना भरे इस जीवन में मेरा बेड़ा पार करो!” बाबा मुस्कुरा कर कहते हैं, “दुर्गा स्तुति का पाठ करो!” फिर अगले ही पल बाबा उठ कर चल देते हैं मेढ़ पर। पुनः आवाज़ वातावरण में गुँजती है - “साई बाबा, साई बाबा, साई बाबा”। फिर यह आवाज़ धीमी हो जाती है। बाबा अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। गाँव वाले कहते हैं - “बाबा रोज़ इसी समय यहाँ से गुजरते हैं।” मैं अपनी घड़ी देखती हूँ - शाम के साढ़े छः बजे होते हैं। मैं कहती हूँ - “हम लोग रोज़ इसी समय यहाँ पर खड़े होकर बाबा की प्रतीक्षा करेंगे। उनका दर्शन करेंगे।” आँख खुलने पर इस स्वप्न पर विश्वास नहीं हो रहा था कि बाबा ने मुझ जैसी साधारण स्त्री को यह दृष्टान्त दिया। (बाबा जब मेढ़ पर बैठ कर बातें कर रहे थे तथा मैं उनके चरण-कमल, जो कि नीले कमल की भाँति थे, दबा रही थी, तब वह जलता हुआ दीपक उनकी बगल में मेढ़ पर रखा हुआ था) एक-एक दृश्यावली मेरी आँखों में तरोताजा है। मैं उन रास्तों को तलाशती हूँ, जिन रास्तों से बाबा होकर जा रहे थे तथा यह काफ़ी सम्भावना है कि यह स्थान, साई स्वप्नावत मंदिर, जो कि गाजियाबाद में है, के आसपास है।

## - सन्ध्या चौधरी

३३५, दक्षिणायन सोसायटी,

प्लाट नं. - १९, सेक्टर - ४,

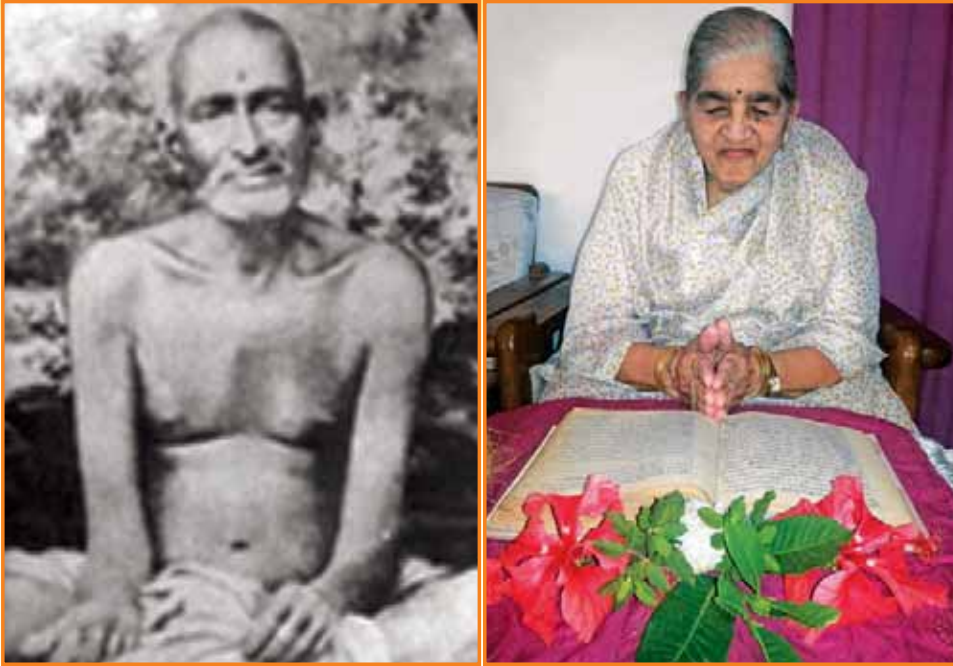
द्वारका, दिल्ली - ११० ०७८.

ई-मेल : [sandhusai@yahoo.com](mailto:sandhusai@yahoo.com)

संचार ध्वनि : (०)९९९९६००२७६







## Divinity in Human Form in Sai Baba's Era

### Saint Gajanan Maharaj's whole Biography on the tip of the tongue

God has His messengers in various forms and though they stay at different places, it is through divine power that they are always connected and can communicate effectively. As Swami Ramdas has said that, **though Sages appear in different forms, they are all one in mind and soul.** And accordingly Shirdi's Sai Baba and Shegaon's Shri Gajanan Maharaj shared a divine bond. They soulfully connected with each other and needed no external mode of communication. A soul dwells in two bodies is what Aristotle would say and this seems apt for the two Saints. People like Bapusaheb Butti, Dadasaheb Khaparde and Dasganu Maharaj had experienced the warmth of the bond that Sai Baba and Gajanan Maharaj shared. Dasganu has also written about Sai Baba in Chapters 31, 32, 33 of Bhaktaleelamrut and 57<sup>th</sup> chapter of Santkathamrut. His 21-chaptered religious text on Gajanan Maharaj is titled as 'Shri Gajanan Vijay'.

Shri Gajanan Vijay consists of 3668 hymns and 141 pages, and it is indeed a marvel to note that 80-year-old staunch devotee of Shri Gajanan Maharaj lovingly called '*Tai*' can narrate the entire text by heart! Her daughter Mrs. Suhas Joshi interviewed Tai with the help of the questions prepared by Sai Leela writer Mrs. Sharmila Patwardhan. Excerpts from the interview are presented below.

❁ In this age of computers, science and technology where youth prefer fast food and fast life, do people really come to listen to the oration and eat humble dish like *jowar/bajra* roti and chick pea gravy?

– Not all are atheists. Many, including

youth, worship God regularly through chanting or by performing *Pooja*. With complete faith and devotion, they are seen serving their beloved Deity and the Almighty. The number of youth in temples or places of worship is noticeable. Also, they get marvelous and miraculous experiences



ensuring their belief in God being strengthened. Their number is evident when they come for listening to the religious text.

Some of the listeners also discuss about the bond to be maintained within family, how to maintain cordial relation with others; some of them are still in contact with me. They seek guidance for different ways to worship God, ways of offering flowers and food as *prasad*. I do give guidance, but am not very rigid about the ways it should be done. Focussing only on the ritualistic way to offer flowers will take them away from the main goal i.e. devotion. Devotion to God requires pure heart.

I feel it is natural for their age to get tempted towards pizzas, burgers, films; because along with calm peaceful state of mind, entertainment is equally required. Nevertheless, youth who enjoy materialistic pleasure of life also visit temple, eat *prasad* with equal relish as their favorite dish.

To cite a recent example, a group from Nasik regularly visits Shegaon and it has people ranging from 13 years to middle aged married couples. They come and respectfully take me with them and take utmost care of me.

❁ Where have you given the oration?

– After having learned the text ‘Shri Gajanan Vijay’, I was invited to individuals and social groups. My husband readily agreed and also encouraged me; thus, I did not reject a single invitation. My children too were very co-operative. No matter the place, time, and number of days, I can go without worrying about my family. All over Maharashtra, namely Nasik, Pune, Chinchwad, Hadapsar, Phursungi, Konkan, Ratnagiri, Chiplun, Kudal, Mumbai and its suburbs, Shegaon, Hingoli are the places that I have visited and still go for the sermon.

❁ Are the sermons regularly given throughout these years?

– Yes, of course! In Nasik, Mrs. Ghate used to stay in the area known for ancient

Gajanan Maharaj’s place. Now, it is looked after by Mrs. Rathi. Without any hindrance, the sermons are continued for more than 25 years. To commemorate the day of His arrival in Shegaon, sermons are arranged consistently in Solapur, since 21 years. There has been no break or discontinuation.

The Joshi family of Dadar has been arranging for orations for the last 28 years. Similarly, Gajanan Maharaj *Mandir* in Chinchwad has been organizing sermons for 23 years on Gokulashtami. Out of these 21 years were organized by Mr. Ghogale by taking care of the expenses as well. In Pune, it is Phadanvis family that has been arranging the program for 21 years.

For the last 10 years, devotees in Akola are arranging it. In Nasik, I visit Mr. Joshi of Model Colony in Gauri-Ganpati festival and give the narration.

❁ Tell us something about the organizers and the audience

– The organizers all over Maharashtra have taken care of and have arranged for the oration effectively. Banana tree leaves would be arranged in order to welcome us, garlands, *torans* are arranged and different arrangement would be made for the replica of His Lotus Feet. Photo-frames of Gajanan Maharaj and Akkalkot’s Swami Samartha Maharaj are placed. For the audience too, the arrangement is made for their comfort. Audio and other technicalities are taken care of. Overall, the management and arrangement is thorough and deserves appreciation.

Organizers and audience from Akola work hand in hand. Considering my age, they organize the program in two days instead of one, for they are concerned that one-day sermon may be taxing for me. On an average around 1500 to 1800 people gather for the sermon. Arrangement of seats, place of keeping footwear, installing television sets, so that large number of audience is able to see and hear what is going on the





stage, each minute thing is managed well by the organizers.

The programs start on the scheduled time always and a 10-15 minute break is taken in between. Again, the oration starts and without disturbing the program, the volunteers distribute *prasad* and *angara*. After the oration, *Aarati* is performed. The conch is blown and musical instruments are used for the *Aarati*. Food items that Gajanan Maharaj liked : chick-pea gravy, *jowar* or *bajra* roti, leafy vegetable, and *bundi* is distributed.

For the people to know about the narration, advertisements and announcements are made through rickshaw.

❁ When did you decide to take this path? Have you inherited this?

– My father was a *Brahmin*. We only heard names of saints from him. Other than that, we did not have any information. Also, I was not a keen reader; however, I liked visiting *keertans* and sermons. Post marriage, this also stopped. Due to marriage, I had to go to Panvel, but in 1959, we came to Nasik. In 1967, it is through our neighbor Mrs. Limaye that I heard of Gajanan Maharaj for the first time. I started reading Shri Gajanan Vijay book.

And, as mentioned earlier, it was Mrs. Ghate who also stayed in Nasik used to organize the program of recitation of this text on various occasions like *Prakat Din*, *Ramnavami*, *Gurupournima* etc. I used to assist her. Since then, my devotion towards Gajanan Maharaj increased.

❁ Tai, in spirituality, no one gets any object instantly. In the 19<sup>th</sup> chapter of Shri Sai Sat Charita, Sai Baba has said, “You endeavor, I am there standing before you with a bowl of milk. Your *Sadguru* too has graced you and given you the fruit of having memorized the text. Do you agree?”

– It was November 1972. On one hand I had to start a business and support my family

and on the other, I was treading the path of devotion. I simply, put forward my wish to Maharaj that “I should be able to learn this text by heart in order to recite it while working.” In the meanwhile I continued reading the text. In 1973, in the month of February, on the occasion of His Day of Arrival (*Prakat din*), Mrs. Ghate organized a program and many women members of the group got some or the other task to be performed. I readily volunteered for distributing the *prasad*.

Before starting this work, I prayed to Maharaj and said, I would read the text along with distribution of the *prasad* by standing near You. I kept the text in front of His Image and started my work of giving *prasad* and simultaneously reciting the text. The work had begun in the afternoon around 1 p.m. and continued till evening 7 p.m. I was indeed happy, as after that, the *Aarati* was performed. I was ecstatic as I returned home and let my husband and Mrs. Ghate know about the recitation.

It is His blessing that I was able to recite the text. I do not feel, I have taken more efforts or painstakingly worked hard.

❁ When and where did you first recite the text publicly?

Mrs. Ghate informed Shegaon about me and on 2<sup>nd</sup>, 3<sup>rd</sup>, and 4<sup>th</sup> October 1973, a program of sermon was organized. Mrs. Ghate and the women that often gathered and attended the programs arranged by her, well-known civil surgeon Dr. Bhalchandra and his wife and I visited Shegaon. In those days, if one had to stay in Shegaon, one had to carry grocery and cook. Mrs. Bhalchandra had made arrangements for this.

In this duration, *Shatchandi Yagya* was organized and 28 sages from Tryambakeshwar were invited. Since food was to be prepared and distributed, each one had brought some ingredients. I had taken sweet dumpling.

On the first day, nine women representing



Nine forms of Durga, visited the temple to take blessings from Maharaj and then visited the village. Camels, elephants and cows, horses and musical band preceded us, while the sages followed us in that large pilgrimage. We visited the well, filled the pot with its water and later after the ritual of *yagya*, we prepared a meal.

After lunch, in the afternoon, I did the first oration in public and Mr. Purshottam Patil arranged for a vehicle so that we could see and roam the village. We also visited Mr. Kukaji's shed, the person who accompanied Gajanan Maharaj.

On the second and third day, the recitation of the text went on well.

I was felicitated with a garland, Rs. 101, a saree and a shawl for my husband. This was the first public oration outside Nasik.

❁ Till now, how many orations and for how many years have you performed? Did you make any resolution for the number of orations to be done?

Since 1973, I have done over 3500 orations. The figure includes orations arranged by me and others. Many of these have been done in Nasik namely in Jackson Garden, which is now known as Shivaji *Udyan* under a mango tree. In Vavoshi, my ancestral home under the tree of fragrant Parijatak one oration, second under the Umber tree. My mother was the listener for these two orations. In Aurangabad, in my in-laws' home, under the Bel tree, I did one oration.

Again in Nasik in Mr. Kasliwal's home in front of Ganesh idol and in Shegaon I recited the text and completed the oration in five hours.

In Mumbai's, Vile Parle area under the Peepal tree, I did one oration.

As a service offered to Maharaj, I never denied or said no to any invitation for recital and oration. In terms of returns or money, I never had any terms or conditions. The oration was the only intention and I made it a point to take care that others should not face any kind of

problem due to oration. No discrimination was made on the basis of caste wherever I visited. As long as He gives me the strength and vigour, I will continue reciting and oration. My intention is that people should be satisfied and get pure happiness.

Now-a-days considering my age and health, instead of continuous one-day oration, I do two-three days oration. I used to think and even now I feel that this should not be an expensive, stressful task for people so till 2009, I travelled on my own in bus mostly. However, now people send their vehicle for me and drop me. Besides oration, many people invite me to stay at their place, their home. At that time, I do not ask them to make any special arrangement, but for them, I do the oration at one place.

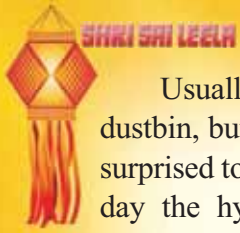
However, it is not possible to complete it at one go. Sometimes, people are busy and hence, I do it on my own. I take efforts to serve Gajanan Maharaj with all my will and this is my resolution.

❁ Did you come across any unique experiences in your life?

I have experienced many instances till now. People may get the same experiences, yet, the feelings from that experience differ from one person to another. I shall narrate two such instances. Once, I visited Shegaon on the occasion of Ramnavami. In the premises of the temple, lot of devotees were present, I too was sitting amongst them. As usual, I was talking to Maharaj in my mind – I shall not hurt anyone, and if this has happened, how shall I be freed from this sin? How can I change my behavior for better? I put forth these questions before Him.

During this, a man passed by me, typically dressed in a *dhoti* and threw a crushed paper. I did not like it that despite such crowd, why did the man go from here? Moreover, he threw a piece of paper. Why do people behave in such manner?





Usually, I would have cleared the paper to a dustbin, but somehow, I opened the paper. I was surprised to read the written part : chanting every day the hymn that “Ahilya, Draupadi, Seeta, Tara, Mandodari alias five women wash away the worst sins” would help in reforming one’s behavior. This piece of paper is still preserved and Mr. Pawar of Chinchwad still has it.

In another instance, along with few people from Pune, I visited Shegaon. Mr. Shintre would always accompany us. He was very keen and interested in meeting sages and saints. Similarly, Anantrao Athavale alias Vardanand Bharati had the same interest. Near Nanded, in a village called Gorte, whenever *keertan* was organized, Mr. Athavale and Chhagan Bartakke would play harmonium. They knew Mr. Shintre very well.

While travelling in a vehicle, the thought that Dasganu Maharaj should have been there today came in my mind constantly. I spoke to Mr. Shintre about it and he calmly replied, if not Dasganu, we have Mr. Bartakke. I neglected what he said as my eyes had an image of the Navy Blue colored coat hung on the wall. I told Mr. Shintre about the coat. On reaching Shegaon, we took *Darshan* of Maharaj and we noticed Mr. Bartakke a few meters in front of us. Mr. Shintre hurriedly caught up with him and told him about me. He gave us an appointment.

In his room, an old man with white clothes and white head gear was seated. Mr. Bartakke introduced us and then, I did my oration. As soon as it was completed, the old person got up and bowed down before me with tears in his eyes. I was stunned and did not know, what to do. He had written Shri Gajanan Vijay! He became solemn and gratefully said that I am lucky to have the pleasure to be in the company of the honorable Dasganu Maharaj. Nevertheless, that text is being recited by you with Goddess Saraswati’s blessing, thus, you are blessed too. Thus, you should visit our place Gorate; consider it as your house. I bowed down to pay my obeisance to

him and to my surprise; I saw the same blue coat hung on the wall that appeared in my mind during the journey. This was a sort of miracle and I have many such instances.

❁ Tai, many listeners, other people regard you as their *Guru*. What are your expectations from your disciples?

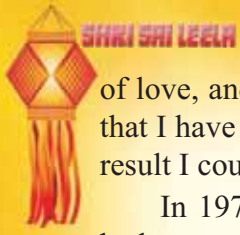
It is through Almighty’s grace and blessings that I am able to recite the text. Taking credit of the achievement would be wrong. Modestly, I feel, I have not done anything. To reach the status of a *Guru*, many a things are to be done. Therefore, I do not regard myself as the *Guru*. I am a normal housewife and yet, while doing my chores and duties towards the family, I serve God as well. Hence, even if people regard me as *Guru*, while serving Gajanan Maharaj we are all His devotees on the same regard and thus, the question of expecting anything from my companions does not arise. Everyone should be able to soak himself or herself in the elixir of devotion happily.

❁ At the age of 80, while reciting in front of 1000 people, do you feel that there is a Supreme Force and support behind you?

Of course! As said earlier, I am a normal housewife. It is said that if a person reaches a spiritual height, he can cross over the six vices of anger, lust, greed, sensitiveness and overcome them. However, considering my life, I do not feel that even I have overcome these vices. Yet, even in this age, I can travel without getting tired, and am able to sit for 8-10 hours for the oration. I can recite it by heart; all these factors indicate that there is a Supreme Power guiding me and without it, these factors would have been impossible. I have complete faith in that power and bow down to express my gratitude.

❁ In your personal life, how do you think the oration has benefitted you?

Due to such oration, I got a chance to serve Gajanan Maharaj. Many of the devotees meet me. My social contacts rose and I received a lot



of love, and respect. It is due to these devotees that I have the opportunity to give oration. As a result I could visit many places and serve Lord.

In 1974, after the death of my husband, I had to work tremendously hard for my family. The business that I started flourished due to His blessings. I did not face many hurdles. My children are well settled now. Thus, I can offer my service whole heartedly. I felt the connection and got attracted towards the text since the first time I took it from Mrs. Limaye. Through this recital, I could pray and serve Gajanan Maharaj. The number of listeners and audience kept on increasing. I could sense the different type of devotion and people started experiencing good things in life; they experienced calm mind and contentment. The power of the mind increased and positive outcomes were noticed and again as a result, the number of audience increased.

This work was not just my devotion, but also of all listeners and their devotion. I feel elated as everyone experiences this happiness. Due to co-operation of those who accompany me, whether in Nasik or other places, I am able to do various programs.

During recitation, taking inspiration from Gajanan Maharaj, I could donate money with the help of my friends and fellow devotees. When the *Palkhi* reaches Nasik, I am able to join it and reach Shegaon. I feel very satisfied that I am able to do this. Personally or through an organization, I am lucky to get a chance to donate and serve humanity. The joy of taking all people along with me is indescribable.

Whatever donations or good deeds we do, it should not be declared or one should not boast about it, else there is no use of the service. Hence, I do not wish to talk on donations. Yet, one thing I can affirm here is that I have all the satisfaction, prosperity and happiness, which cannot be bought due to money, due to Gajanan Maharaj's blessings.

❁ If you ever meet Gajanan Maharaj and Dasganu Maharaj, what would you tell them?

If this happens, I will whole heartedly pay obeisance and request Him to bless me and assist me as it has always been. Be there with me, forever and even for the recital of the text. Please come and bless us with Your kindness. Give me good health, so that I may be able to serve You more. Give us the way and guide us.

If I meet Dasganu Maharaj, then I will tell him that I am able to recite by heart his text Shri Gajanan Vijay due to Gajanan Maharaj's blessing. You have studied many saints and have written on them. You have written three major volumes, amongst which you regard Shri Gajanan Vijay as a precious gem. You have described Maharaj Himself as a Diamond in the mines of Shegaon and also a lotus in the large pond of Shegaon. Those who read such texts and character of the saint will be able to prosper in life.

In reality, this is exactly what has happened to me. I will inform Dasganu Maharaj that I am roaming through Maharashtra for the last forty years.

As you always expected, due to consistent oration and reading, I was able to offer my service to Gajanan Maharaj.

On hearing the recital, people express their happiness and seeing that I feel elated.

The only regret I have is that you should have been here for the sermon. So that, if I ever went wrong in the recitation, you could have told me and guided me, or if you liked it, you would definitely pat my back.

I am content and I do not need to ask for anything. I get everything - cheerful and happily living my life.

– Mrs. Suhas Yeshwant Joshi

'Rajas', Vise Mala, Behind Swati Society  
College Rd., Nasik - 422 005.

E-mail : [yeshwantjoshi@gmail.com](mailto:yeshwantjoshi@gmail.com)

Telephone : (0253)2572532

Mobile : (0)9822348688

Translated from Marathi by

Minal Dalvi







## Shirdi News

Mohan Yadav

\* Public Relations Officer \*

Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

- Translated from Marathi into English by

Vishwarath Nayar



## Shri Sai Punyatithi Festival 2014

After the shedding of the mortal coil by virtuous people, their true remembrance day is called *punyatithi*. Celebrating the *punyatithi* of such extra-ordinary personality is a great blessing. There are countless devotees of Shri Sai Baba worldwide. Lakhs of these devotees flock to Shirdi to seek the blessings of their most revered Lord on Shri Sai *Punyatithi*...

This year too the 96<sup>th</sup> annual Shri Sai *Punyatithi* was organized by Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi), from Thursday, October 2 to Saturday, October 4, 2014, in an exuberant and auspicious atmosphere.

On Thursday, October 2, the first day of the festival *Kakad Aarati* was done at 4.30 a.m. After that at 5 a.m. a *Shobhayatra* (grand procession) of Shri Sai Baba's *Pratiima* (photo frame), Shri Sai Sat Charita *Grantha* (scripture) was taken out. Sri Rajendra Jadhav, Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan, Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer along with other officers and employees of the Sansthan, villagers and Sai devotees joined the *Shobhayatra*. After the *Shobhayatra* from

the *Samadhi Mandir* via *Gurusthan* reached Dwarkamai, the ritual worship of Shri Sai's *Pratiima*, the holy book Shri Sai Sat Charita and the *Veena* was performed and the *Aarati* 'Shirdi *majhe* Pandharpur' was done. After that the uninterrupted reading of the holy book 'Shri Sai Sat Charita' commenced. The reading of the first two chapters were respectively done by Sri Rajendra Jadhav, Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer.

At 5.15 a.m. the holy bath of Shri Sai Baba was done in the presence of Sai devotees in an air of piety. At 7.15 a.m. the *Padyapooja* (worship of the Holy Feet) of Shri Sai in the *Samadhi Mandir* was performed by the Deputy Executive Officer of the Sansthan, Sri Appasaheb Shinde along with his wife. After that at 7.30 a.m. the *Abhishek Pooja* was done.

At 12.30 p.m. the noon *Aarati* of Shri Sai took place. At 2 p.m. 20 names of Sai devotees and villagers drawn in a lottery from names enrolled for *bhikshajholi* (holding the bag for seeking alms) were declared.

In the evening between 4 and 6 a melodious *kirtan* was rendered by H.B.P. (*Hari Bhakta Parayan*) Sri Manoharbua Balkrishna Dikshit. At 6.15 p.m. the *Dhooparati* of Shri Sai took place.



Sou Ragini Jitendra Kamtikar presented a programme of (emotional) lyrics and devotional songs from 7.30 to 10 p.m. on the stage in the Sansthan's Sainagar ground. At 9.15 a.m. the *Shobhayatra* of Shri Sai's *Palkhi* (palanquin) was taken out from the *Samadhi Mandir* to Dwarkamai and from there through Shirdi village. Several musical instruments, cymbals, *lezim* and band troupes presented their skills in front of the *Palkhi*. After the *Palkhi* entered the temple complex, Sri Subhash Jakhadi, Sri Ulhas Walunjkar and others presented the *bharud* (traditional long narration in folk song form) programme in front of the *Palkhi*. Dwarkamai was kept open throughout the night for the reading of Shri Sai Sat Charita. The grand display of the gateway to the temple with the idols of Shri Gurudev Dattatreya, Shri Swami Samartha of Akkalkot and Shri Gajanan Maharaj of Shegaon by Dwarkamai *Mandal* of Mumbai and the electric lighting outside the *Samadhi Mandir* and the temple premises became the main attraction for Sai devotees. The floral decorations by Sai devotee R. Sarvana of Bengaluru became the centre of attraction for Sai devotees.

On Friday, October 3, the main day of the festival, the *Kakad Aarati* of Shri Sai was done at 4.30 a.m. After that the ceremony of the holy bath of Shri Sai was performed after finishing the non-stop reading of Shri Sai Sat Charita. After that the *Shobhayatra* of Shri Sai's *Pratima*, Shri Sai Sat Charita and the *Veena* was taken out. Sri Anil Kawade, Member of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and District Collector (Ahmednagar), Sri Rajendra Jadhav, Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, along with officers and employees of the Sansthan, villagers and devotees participated in large numbers in the *Shobhayatra*. Sri Anil Kawade, Member of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and District Collector (Ahmednagar) performed the *Padyapooja* of Shri Sai at 7.15 a.m. Sri Anil Kawade, Member of the 3-Members Managing Committee of the

Sansthan and District Collector (Ahmednagar), Sri Rajendra Jadhav, Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, all administrative officials and others along with the 10 villagers and 10 Sai devotees selected for holding the *bhikshajholi* participated in the *bhikshajholi* programme taken out through Shirdi village. Villagers and Sai devotees donated very generously in the *bhikshajholi*. In this 61 bags of wheat, *bajri*, rice and other grains and cash of Rs. 59,000/- were collected as donation.

H.B.P. Manoharbua Balkrishna Dikshit presented a programme of melodious *kirtan* on the occasion of the *Punyatithi* from a stage beside the *Samadhi Mandir* from 10 a.m. to noon 12 o'clock. The propitiation ritual was performed at the hands of the Member of the 3-Members Managing committee of the Sansthan and District Collector (Ahmednagar), Sri Anil Kawade at 10.30 a.m. A live telecast of this propitiation ritual was arranged on the temple's C.C.T.V. for viewing by Sai devotees and villagers.

After the propitiation ritual, the noon *Aarati* was done at 12.30 p.m.

For crossing the border a *Shobhayatra* left for the Khandoba temple from the *Samadhi Mandir* at 5 p.m. After the procession *Dhooparati* was done at 6 p.m.

A programme of *bhajans* and *gazals* by Sri Satyanarayan Nair (Bhopal) was held from 7.30 p.m. to 10 p.m. The audience lauded the programme whole-heartedly. The *Shobhayatra* of Shri Sai's chariot was taken along with sounding of musical instruments at 9.15 p.m. Local troupes of cymbal, *lezim* and band, villagers, Sai devotees and others participated in the *Shobhayatra*. After the chariot reached the temple premises, Sri Subhash Jakhadi, Sri Prakash Bhalerao and others presented the *bharud* programme in front of the chariot.

Artistes presented their programmes on the stage beside the *Samadhi Mandir* from 11 p.m. to 5 a.m. As it was the main day of the festival,





When the Brahmins are reluctant towards daily bath and offering of prayers; when the orthodox are reluctant to practise the religious rites; and the yogis are reluctant to do recitation and prayers with deep concentration - then the time is ripe for the saints to take birth. When people believe that happiness consists only in society, wealth, status, progeny and family and turn away from spiritual values, then the saints manifest themselves...

the *Samadhi Mandir* was kept open for *darshan* throughout the night for Sai devotees.

Since the *Samadhi Mandir* was kept open the whole night on the main day of the festival, *Kakad Aarati* was not done on Saturday, October 4, the concluding day of the festival. The holy bath of Shri Sai was done at 5.05 a.m. After that 'Shirdi *majhe* Pandharpur' *Aarati* was done. The Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan, Sri Rajendra Jadhav along with his wife did *Rudrabhishek* at *Gurusthan* in the morning time and *Padyapooja* of Shri Sai in the *Samadhi Mandir*. After the '*Gopalkala*' *kirtan* by H.B.P. Manoharba Balkrishna Dikshit at 10 a.m., the *dahihandi* (breaking the pot of curd) programme was held at 12 o'clock noon.



When people, to the detriment of their health, longevity and prosperity, go astray in pursuing their sexual needs, and completely miss the chance of their upliftment, at such times saints take birth. To protect the religion of varnashram, to annihilate the sinfulness and to protect the down-trodden, poor and weak, the saints incarnate on this earth. The saints themselves are liberated souls and are always ready for the betterment of the weak. They take birth only for the sake of others and have no self-interest. They build the foundation in the form of renunciation around the sanctum sanctorum of active worldly life; build the temple of ultimate good and easily elevate the devotees. By working for religion and for the awakening of religion, they achieve their mission in life; and having fulfilled their goal they give up their mortal coil.

The noon *Aarati* of Shri Sai was held at 12.10 p.m. and *Dhooparati* at 6.15 p.m.

The 'Saikathamrit' programme by Sri Shraavan Madhav Choudhary (Dorhale) was held on a stage at the playground in Sainagar from 7.30 p.m. to 10 p.m.

From the donation of philanthropic Sai devotees, Gopi K.H.V. (Guntur, Kanamarlapudi), Venkat Leela Kumari (Guntur), Mokshagna Chandra S. (Hyderabad), Somanand Kuldeep (Chilukuri, Hyderabad), N. Angamuthu (Karur), Kamal Balani (Indore), Rajgopal Natarajan (Chennai), Sanjay Shankar Vani (Kopargaon), Jyoti Sanjaysingh Masani and Sanjaysingh Ghanshyamdas Masani (Gondhia), Parth Ayush Agarwal (Raipur), Gautam Nayak (Mumbai), Narayan Anumala (Hyderabad), Badri Narayan Sai Ranjani J. (Bengaluru), Smt. Devi and late Ramkumar Agarwal (Delhi), Vikram Kapoor (Lucknow) and Bharati Shirgurkar (Bengaluru), Sai devotees were provided free *prasad*-meals on all the three days of the Sai *Punyatithi* festival.

All administrative officers, departmental chiefs and employees of the Sansthan, under the guidance of Sri Shashikant Kulkarni, Chairman of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and Chief District and Sessions Judge



(Ahmednagar), Sri Anil Kawade, Member of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and District Collector (Ahmednagar), Sri Rajendra Jadhav, Member of the 3-Members

Managing Committee and Executive officer of the Sansthan and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, took special efforts to organize the festival successfully.



## Grand Reading of *Pothi* Revealing Shri Sai in *Shravan* Month at Shirdi 5000 Readers participated!



The *Parayan* (reading) of Shri Sai Sat Charita function was organized by Shree Sai Baba Sansthan Trust, Shirdi to mark *Shravan* month from Sunday, July 27, 2014 to Monday, August 4, 2014. Nearly 5000 readers participated. Several cultural and religious programmes were



organized during the function.

On the first day of the *Parayan* function, the Shri Sai Sat Charita *Granth* was taken out in a *Shobhayatra* from the *Samadhi Mandir*, through Dwarkamai to *Gurusthan* and after *darshan* there to the *mandap*. Sri Kundan Sonawane,







the then Executive Officer of the Sansthan, Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, Sri Bhausahab Sabale, Sri Subhash Garkal, Sri Uttamrao Gondkar and Sri Dilip Ugale, all administrative officers and the priest of the Sansthan, villagers and Sai devotees participated in the *Shobhayatra*. After the *Shobhayatra* reached the *mandap*, the worship of the *Granth* and *Kalash* (vessel carrying holy water, decorated with mango leaves and coconut) was performed by Sri Kundan Sonawane and the reading of Shri Sai Sat Charita commenced.

Male readers read the chapters daily from 7 a.m. to 11.30 a.m. and female readers read from 1 p.m. to 5.30 p.m. in the *Parayan* function.

On the concluding day of the function, the Chairman of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and Chief District and Sessions Judge (Ahmednagar), Sri Shashikant Kulkarni and Sou Sushma Kulkarni did the worship of the sacred *Granth* Shri Sai Sat Charita. Deputy Executive Officer Sri Appasaheb Shinde, Sri Bhausahab Sabale, Sri Subhash Garkal, Sri Uttamrao Gondkar and

Sri Dilip Ugale, all administrative officers along with the readers and villagers graced the occasion in large numbers.

*Snehbhojan* (collective eating) was also organized for the readers in the morning on the concluding day of the festival. At 3.30 p.m. a grand *Shobhayatra* of the sacred *Pothi* (book) was taken out through the village with all fanfare of drums and *lezim*. All the readers and villagers were present in large numbers in this *Shobhayatra*. Floats depicting events in the life of Shri Sai Baba were presented in the *Shobhayatra*. Attractive floral decorations were made from the donation by Sri Manish Bhatija of Mumbai for the Shri Sai Sat Charita *Parayan* function.

The *Parayan* function concluded with *kirtans* by H.B.P. Sri Vaibhavbuva Oak (Dombivli, taluka Kalyan, district Thane). After that *mahaprasad*, *bhandara* (collective meal) programme was organized.

Officers and employees of the Sansthan and villagers took special efforts for the successful conduct of the *Parayan* function.



**Tuesday, July 1, 2014 :** 72 people donated blood at the blood donation camp organized on July 1, 2014 by Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) under the joint auspices of Lions Club of Shirdi and Indian Medical Association in the Shri Sai Nath Hospital. The participation of doctors and women in this is notable.

Sri Vasant Kadam, President of Lions Club of Shirdi, Sri Sachin Sarangdhar, Sri Vishal

Tidke, Sri Dilip Wakchaure, Sri Bhausaheb Lavande and other members graced the event.

Dr. Prabhakar Rao, Medical Director, Dr. Sanjay Pathare, Medical Superintendent, and other employees of the Sansthan under the guidance of Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer of the Sansthan took special efforts for the successful conduct of the camp.



**Saturday, July 26, 2014 :** Sai devotee Sri V. Chandramouli of Chennai, since the last 4 years comes from Chennai to Shirdi on foot every year with Shri Sai's *Palkhi*.

This year there were 13 Sai devotees with him. They covered the 1,650 km. distance from Chennai to Shirdi in 31 days by walking 50 km. daily. They commenced their journey by taking *darshan* in the Sai temple in Mylapur. From there they went for *darshan* to the Sai temple, 70 km. away, in Pattipulam. Sri K. V. Ramani, the founder of the temple here, garlanded every *padayatri* (pilgrims on foot) with the sacred *tulsi*-garland and gave them guidance and best wishes. Not merely this, Sri Ramani took off time from his busy schedule many times to enquire about them on telephone and encourage

them. After leaving Chennai, the *padayatri*s took *darshan* of Lord Balaji in Tirupati and Lord Vitthal in Pandharpur...

Talking about the thrilling experiences of the journey on foot from Chennai to Shirdi, Sri Chandramouli said, "Shri Sai Baba is a great God-incarnate saint in Kaliyuga. Even today His omnipresence is felt everywhere. One has to have faith from within to realize Him." On the occasion, he expressed his intention to bring a *rathayatra* (journey on a chariot) next year. The *padayatri*s were felicitated by Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer of the Sansthan. Lauding the programme, Sri Shinde assured all kind of assistance to the *Palkhi* next year too. Sri Mohan Yadav, public relations officer of the Sansthan thanked everybody.



## श्री साईं पुण्यतिथि उत्सव - २०१४ मुख्य दिन



मुख्य दिन 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य श्री अनिल कवडे), श्री साईं की तस्वीर (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव व उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे) एवं वीणा (मंदिर प्रमुख श्री रामराव शेलके) की शोभायात्रा द्वारकामाई से वापस साईं समाधि मंदिर की ओर; साथ में संस्थान अधिकारी, कर्मचारी, साईं भक्त और ग्रामस्थ...

भिक्षा झोली कार्यक्रम में संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य श्री अनिल कवडे, सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव, उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे, सभी प्रशासकीय अधिकारी, कर्मचारी, साईं भक्त और ग्रामस्थ बड़ी संख्या में शामिल हो गये थे।



संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य श्री अनिल कवडे के हाथों श्री साईं बाबा की पादचपूजा; साथ में संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव व उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे...



## श्री साईं पुण्यतिथि उत्सव - २०१४ समापन दिन



पत्नी सहित संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव के हाथों श्री साईं बाबा की पादपूजा...



पत्नी सहित संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री राजेन्द्र जाधव के हाथों गुरुस्थान में रुद्राभिषेक...



साईं समाधि मंदिर में दहीहंडी कार्यक्रम...

श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी) के लिए संस्थान के कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. टैको विजन्स प्रा. लि., ३८ ए व बी, गवर्नमेंट इन्डस्ट्रियल इस्टेट, चारकोप, कांदिवली (प.), मुम्बई - ४०० ०६७ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी, श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी)